वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 294

नवनिधि व्रत विधि एवं पूजा (भाग–2)

(अक्षयतृतीया, रक्षाबंधन आदि व्रत सहित)

गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी

पूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी के 75वें हीरक जयन्ती–शरदपूर्णिमा 2008 के उपलक्ष्य में एवं 56वें क्षुल्लिका दीक्षा दिवस के अवसर पर प्रकाशित

-प्रकाशक-

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.-250404

फोन नं.- (01233) 280184, 280236

Website : www.jambudweep.org

E–mail : ravindrajain@jambudweep.org

प्रथम संस्करण	चैत्र कृष्णा एकम्	मूल्य
1100 प्रतियाँ	22 मार्च 2008	24/-रु.

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएं भी प्रकाशित होती रहती हैं।

–: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :–

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी

–: मार्गदर्शन :–

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी

–: निर्देशन :–

धर्मदिवाकर पीठाधीश क्षुल्लकरत्न श्री मोतीसागर जी महाराज

–: सम्पादक :–

कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

कम्पोजिंग-ज्ञानमती नेटवर्क

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

सम्पादकीय

-कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र कुमार जैन

आज से करोड़ों वर्ष पूर्व प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव का जन्म अयोध्यानगरी में हुआ पुनः क्रम-क्रम से 24 तीर्थंकर भगवान अलग-अलग सोलह नगरियों में जन्में, जिस कारण वर्तमान में 24 तीर्थंकरों की 16 जन्मभूमियाँ हैं।

प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव की जन्मभूमि अयोध्या के निकट बाराबंकी जिले में टिकैतनगर नामक छोटे से ग्राम में जन्म लेकर आज पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने अनेकों महान कार्य किये हैं या यूँ कहिए कि जिन कार्यों को करने के बारे में किसी ने नहीं सोचा, उन कार्यों को पूज्य ज्ञानमती माताजी ने किया। भगवान महावीर स्वामी के पश्चात् किसी भी महिला द्वारा ग्रंथ लेखन की बात कहीं भी पढ़ने, सुनने में नहीं आती थी और आज ज्ञानमती माताजी ने अपनी लेखनी से 250 से भी अधिक ग्रंथों की रचना करके नूतन इतिहास का निर्माण कर दिया है।

अष्टसहस्री ग्रंथ का हिन्दी अनुवाद, नियमसार आदि ग्रंथों की टीका, षट्खण्डागम ग्रंथराज की संस्कृत टीका, अनेकों विधानों की रचना, युवाओं के लिए अनेकों शिक्षास्पद पुस्तकें, महिलाओं के लिए प्रेरणास्पद रचनाएँ, बच्चों के लिए जीवनोपयोगी साहित्य, सभी कुछ पूज्य माताजी की ही देन है। वर्तमान में भी पूज्य माताजी की लेखनी अनवरत चलती ही रहती है।

इसी शृँखला में ''नवनिधि व्रत विधि एवं पूजा'' नामक पुस्तक आपके हाथों में है, इसमें प्रकाशित अक्षयतृतीया, रक्षाबंधन, शांतिभक्ति व्रत, एकीभाव, सप्तर्षि आदि सभी व्रत एक से बढ़कर एक महिमापूर्ण हैं, इन व्रतों को ग्रहण करके अपने जीवन को संयमी बनाएँ, यही इसकी सार्थकता है।

प्रस्तावना

-ब्र. कु. सारिका जैन (संघस्थ)

जैनागम में श्रावकों के लिए मुख्यरूप से छह कर्तव्य बताए गए हैं– देवपूजा, गुरुपास्ति, स्वाध्याय, संयम, तप और दान, इन षट्कर्तव्यों को सम्यक्रीति से पालन करने वाला श्रावक सद्गृहस्थ कहलाता है, इन कर्तव्यों के साथ ही आचार्यों ने श्रावकों के लिए चार मुख्य धर्म भी बताए हैं– **दाणं पूजा सीलमुववासो चेदि चउव्विहो सावयधम्मो** अर्थात् दान, पूजा, शील और उपवास, ये श्रावक के चार धर्म हैं। इनमें से **''दाणं पूजा मुक्खो''** इस वाक्य के द्वारा दान और पूजा को श्रावक के लिए विशेषरूप से अनिवार्य बताया गया है तथा शील के अठारह हजार भेदों को बताते हुए शील की विशेष महिमा बताई है, आप पूजाओं में पढ़ते हैं–

सेठ सुदर्शन शीलव्रती, शूली से सिंहासन भी।

तथा

सीता के व्रत शील भले, अग्नि हुई जल-कमल खिले.....आदि।

अब हम बात करते हैं उपवास की, इसे भी आचार्यों ने धर्म की संज्ञा प्रदान की है।

वैसे तो प्रायः जैन समाज में व्रतों को–उपवासों को करने की परम्परा है परन्तु अगर उन व्रतों को किन्हीं गुरु से विधिपूर्वक ग्रहण किया जाता है तो उनके पुण्य में कई गुनी वृद्धि हो जाती है। आज पंचमकाल में शरीर की संहननशक्ति कमजोर है अतः गुरुजन श्रावक की योग्यता–क्षमतानुसार ही उसे उपवास/एकाशन अथवा अल्पाहार आदि द्वारा व्रत प्रदान करते हैं।

कई बार ऐसा भी देखा जाता है कि कोई-कोई लोग व्रत-उपवास

करने में डरते हैं तो ऐसे लोगों के लिए आचार्य कहते हैं कि–

यद्देहस्योपकाराय, तज्जीवस्यापकारकम्।
यज्जीवस्योपकाराय, तद्देहस्यापकारकम्।।

अर्थात् हे भव्यप्राणी! यद्यपि यह सत्य है कि व्रत और उपवास करने से शरीर कृश होता है परन्तु उनसे जीव–आत्मा का उपकार होता है अर्थात् आत्मा पुष्ट होती है तथा भोजन, वस्त्र, इत्र आदि से शरीर का उपकार तो हो जाता है परन्तु इन सबसे आत्मा का अपकार होता है।

नवनिधि व्रत विधि एवं पूजा नामक इस पुस्तक में पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने आठ प्रकार के व्रतों को सम्मिलित किया है, इससे पूर्व भी आप लोगों ने आस्था चैनल आदि के माध्यम से पूज्य माताजी से अनेक व्रतों की जानकारी प्राप्त करके उन व्रतों को ग्रहण करके अतिशय पुण्य सम्पादित किया है।

नवनिधि व्रत के माध्यम से हस्तिनापुर में जन्में तीन-तीन पद के धारक तीन तीर्थंकर–भगवान शांतिनाथ, कुंथुनाथ, अरहनाथ की अर्चना करके अपने लौकिक एवं आध्यात्मिक भण्डार को भरें तथा अक्षयतृतीया, रक्षाबंधन इन व्रतों को करके इन दोनों पर्वों की उद्गमस्थली के रूप में भी हस्तिनापुर को याद करें तथा हस्तिनापुर के दर्शन की भावना बनाएँ। इसी प्रकार शांतिभक्तिव्रत को करके अपनी एवं सम्पूर्ण देश की शांति की कामना करें, एकीभाव एवं सप्तर्षिव्रत के माध्यम से आरोग्यलाभ को प्राप्त करें तथा गौतमस्वामी के व्रत से अनेक विघ्नों को दूर करके मनोकामनाओं की सिद्धि करें एवं शारदाव्रत करके अपने ज्ञान की उत्तरोत्तर वृद्धि करें।

इसी पुस्तक में प्रत्येक व्रत की विधि, कथा, मंत्र एवं उन-उन व्रतों की पूजा भी प्रकाशित हैं।

इस प्रकार ये सभी व्रत विशेष महिमाशाली हैं, इनको करके अपने जीवन में खूब सुख-शांति की प्राप्ति करें, यही मंगलकामना है।

पुस्तक की रचयित्रीराष्ट्रगौरव, गणिनीप्रमुख, आर्यिकाशिरोमणि

श्री ज्ञानमती माताजी का संक्षिप्त-परिचय

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

जन्मस्थान : टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.

जन्मतिथि : आसोज सुदी 15 (शरदपूर्णिमा) वि. सं. 1991(सन् 1934)

गृहस्थ का नाम : कु. मैना

माता-पिता : श्रीमती मोहिनी देवी एवं श्री छोटेलाल जैन

आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत एवं गृहत्याग : ई. सन् 1952 में बाराबंकी में शरदपूर्णिमा के दिन आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज से।

क्षुल्लिका दीक्षा : चैत्र कृ. 1, ई. सन् 1953 को महावीरजी अतिशय क्षेत्र (राज.) में

आर्यिका दीक्षा : वैशाख कृ. 2, ई. सन् 1956 को माधोराजपुरा (राज.) में चारित्रचक्रवर्ती 108 आचार्य श्री शांतिसागर जी की परम्परा के प्रथम पट्टाधीश आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के करकमलों से।

साहित्यिक कृतित्व : अष्टसहस्री, समयसार, नियमसार, मूलाचार, कातंत्र-व्याकरण, षट्खण्डागम आदि ग्रंथों के अनुवाद/टीकाएं एवं 250 विशिष्ट ग्रंथों की लेखिका। सन् 1995 में अवध वि.वि. (फैजाबाद) द्वारा "डी.लिट्." की मानद उपाधि से विभूषित।

तीर्थ निर्माण प्रेरणा : हस्तिनापुर में जंबूद्वीप तीर्थ का निर्माण, शाश्वत

तीर्थ अयोध्या का विकास एवं जीर्णोद्धार, प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में तीर्थंकर ऋषभदेव दीक्षा तीर्थ का निर्माण, तीर्थंकर जन्मभूमियों का विकास, भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार) में 'नंद्यावर्त महल' नामक तीर्थ निर्माण, मांगीतुंगी में निर्माणाधीन 108 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की विशाल प्रतिमा।

महोत्सव प्रेरणा : पंचवर्षीय जम्बूद्वीप महामहोत्सव, भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव, अयोध्या में भगवान ऋषभदेव महाकुंभ मस्तकाभिषेक, कुण्डलपुर महोत्सव, भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव ।

शैक्षणिक प्रेरणा : 'जैन गणित और त्रिलोक विज्ञान' पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन, इतिहासकार सम्मेलन, न्यायाधीश सम्मेलन एवं अन्य अनेक राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर के सेमिनार आदि।

रथ प्रवर्तन प्रेरणा : जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति (1982 से 1985), समवसरण श्रीविहार (1998 से 2002), महावीर ज्योति (2003-2004) का भारत भ्रमण।

इस प्रकार नित्य नूतन भावनाओं की जननी पूज्य माताजी चिरकाल तक इस वसुधा को सुशोभित करती रहें, यही मंगल कामना है।

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान-संक्षिप्त परिचय

–पीठाधीश क्षुल्लक मोतीसागर

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान की स्थापना पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से सन् 1972 में राजधानी दिल्ली में हुई थी। संस्थान का मुख्य कार्यालय सन् 1974 में हस्तिनापुर में प्रारंभ हुआ। इस संस्थान के अन्तर्गत अनेक गतिविधियाँ हस्तिनापुर में तथा अन्यत्र चल रही हैं–

1. सन् 1972 से वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला के अन्तर्गत लाखों ग्रंथ प्रकाशित हो रहे हैं।

2. सन् 1974 से इस संस्थान के मुखपत्र के रूप में 'सम्यग्ज्ञान' हिन्दी मासिक पत्रिका का निरंतर प्रकाशन हो रहा है।

3. सन् 1974 से 1985 तक हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप रचना का निर्माण कार्य हुआ।

4. सन् 1974 से अब तक जम्बूद्वीप रचना के अतिरिक्त अनेक जिनमंदिरों का निर्माण हुआ है–कमल मंदिर, तीन मूर्ति मंदिर, ध्यान मंदिर, शांतिनाथ मंदिर, वासुपूज्य मंदिर, ॐ मंदिर, सहस्रकूट मंदिर, विद्यमान बीस तीर्थंकर मंदिर, आदिनाथ मंदिर, अष्टापदमंदिर, ऋषभदेव कीर्तिस्तंभ, स्वर्णिम तेरहद्वीप रचना एवं नवग्रहशांति जिनमंदिर।

5. जम्बूद्वीप पुस्तकालय जिसमें लगभग 15000 ग्रंथ संग्रहीत हैं।

6. णमोकार महामंत्र बैंक जिसमें भक्तों द्वारा लिखकर भेजे गये णमोकार मंत्र जमा किये जाते हैं।

7. समय-समय पर शिक्षण-प्रशिक्षण शिविरों तथा संगोष्ठियों के आयोजन किये जाते हैं।

8. यात्रियों के शुद्ध भोजन के लिए राजा श्रेयांस भोजनालय का संचालन।

9. यात्रियों के ठहरने के लिए आधुनिक सुविधायुक्त डीलक्स फ्लैट्स वाली कई धर्मशालाओं तथा कोठियों एवं बंगलों का निर्माण किया गया है।

10. जम्बूद्वीप परिक्रमा के लिए नौका विहार, ऐरावत हाथी तथा मनोरंजन हेतु मिनी ट्रेन, झूले आदि हैं।

11. ज्ञानमती कला मंदिरम् में हस्तिनापुर के प्राचीन इतिहास से संबंधित झाँकियाँ हैं।

दिल्ली, मेरठ, मुजफ्फरनगर, हरिद्वार, झाँसी, तिजारा आदि से जम्बूद्वीप स्थल तक आने के लिए दिन भर बसें मिलती रहती हैं।

दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान के अन्तर्गत भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा) बिहार में भव्य नंद्यावर्त महल तीर्थ तथा प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में निर्मित भगवान ऋषभदेव दीक्षा तीर्थ का भी संचालन होता है।

जम्बूद्वीप एवं अन्य रचनाओं के दर्शन हेतु हस्तिनापुर पधारकर आध्यात्मिक एवं शारीरिक सुख की प्राप्ति करें।

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला के सहयोगी

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान के अन्तर्गत "वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला" की स्थापना सन् 1974 में हुई। तब से अब तक लाखों की संख्या में ग्रन्थों का प्रकाशन हो चुका है और निरन्तर हो रहा है। ग्रंथमाला से पाठकों को ग्रन्थ कम कीमत में प्राप्त हो सकें, इस दृष्टि से ग्रन्थमाला में एक संरक्षक योजना अगस्त सन् 1990 से प्रारंभ की गई है। इस योजना के अन्तर्गत निम्न महानुभाव अब तक संरक्षक बनकर अपना सहयोग प्रदान कर चुके हैं।

शिरोमणि संरक्षक

1. श्रीमती निर्मला जैन ध.प.स्व. श्री प्रेमचन्द्र जैन, तत्पुत्र प्रदीप कुमार जैन, खारी बावली, दिल्ली-6।
2. श्रीमती सुमन जैन ध.प. श्री दिग्विजय सिंह जैन, इंदौर।
3. श्री महावीर प्रसाद जैन संघपति, जी 19, साऊथ एक्सटेन्शन, नई दिल्ली।
4. श्री महेन्द्र पाल हरेन्द्र कुमार जैन, सूरजमल विहार, दिल्ली।
5. श्रीमती मोहनी जैन ध.प. श्री सुनील जैन, प्रीत विहार, दिल्ली।
6. श्री देवेन्द्र कुमार जैन (धारूहेड़ा वाले) गुड़गाँव (हरि.)।
7. श्रीमती शारदा रानी जैन ध.प. स्व. रिखबचंद जैन, बाहुबली एन्क्लेव, दिल्ली-92
8. डॉ. देवेन्द्र कुमार जैन, भोपाल (म.प्र.)
9. श्रीमती संगीता जैन ध.प. श्री संजीव कुमार जैन, शेरकोट (बिजनौर) उ.प्र.
10. श्री अनिल कुमार जैन, दरियागंज, दिल्ली
11. श्री बी.डी. मदनाइक, मुम्बई
12. श्री धनकुमार जैन, बाहुबली एन्क्लेव, दिल्ली

परम संरक्षक

1. श्री माँगीलाल बाबूलाल पहाड़े, हैदराबाद (आन्ध्र प्रदेश)।
2. डॉ. प्रकाशचन्द्र जैन, 792 विवेकानंदपुरी, सिविल लाइन, सीतापुर (उ.प्र.)।
3. श्री सुमत प्रकाश जैन, गज्जू कटरा, शाहदरा, दिल्ली।
4. श्री सुनील कुमार जैन, द्वारा-सुनील टैक्सटाईल्स, सरधना (मेरठ) उ.प्र.।

5. श्री प्रकाश चंद अमोलक चंद जैन सर्राफ, सनावद (म.प्र.)।
6. श्री प्रद्युम्न कुमार जवेरी, रोकड़ियालेन, बोरीवली (वेस्ट) मुंबई।
7. श्रीमती उर्मिला देवी ध.प. श्री कान्ती प्रसाद जैन, ऋषभ विहार, दिल्ली।
8. श्रीमती उषा जैन ध.प. श्री विमल प्रसाद जैन, ऋषभ विहार, दिल्ली।
9. श्री आनन्द प्रकाश जैन (सौरम वाले) , गांधीनगर, दिल्ली।
10. श्रीमती सरिता जैन ध.प. श्री राजकुमार जैन, किदवई नगर, कानपुर।
11. स्व. श्रीमती कैलाशवती ध.प. श्री कैलाश चन्द्र जैन , तोपखाना बाजार, मेरठ।
12. श्री भानेन्द्र कुमार जैन, द्वारा-श्री विद्या जैन, भगत सिंह मार्ग, जयपुर।
13. श्री प्रदीप कुमार शान्तिलाल बिलाला, अनूपनगर, इंदौर, (म.प्र.)।
14. श्री सुरेशचंद पवन कुमार जैन, बाराबंकी (उ.प्र.)।
15. श्री नथमल पारसमल जैन, कलकत्ता-7।
16. श्रीमती स्व. शांताबाई ध.प. श्री कमलचंद जैन, सनावद (म.प्र.)।
17. श्री रूपचंद जैन कटारिया, दिल्ली
18. श्री आशु जैन, कालका जी, नई दिल्ली

संरक्षक

1. श्रीमती आदर्श जैन ध.प. स्व. श्री अनन्तवीर्य जैन के सुपुत्र श्री मनोज कुमार जैन, मेरठ।
2. श्रीमती राजूबाई मातेश्वरी श्री शिखर चन्द भाई देवेन्द्र कुमार लखमी चन्द जैन, सनावद (म.प्र.)।
3. श्री चिमनलाल चुन्नीलाल दोशी, कीका स्ट्रीट, मुम्बई।
4. श्रीमती अरुणाबेन मन्नूभाई कोटड़िया, सी.पी. टैंक रोड, मुम्बई।
5. श्रीमती ताराबेन चन्दूलाल दोशी, फ्रेन्च ब्रिज, मुम्बई।
6. श्री रतिलाल चुन्नीलाल दोशी, मुम्बई।
7. स्व. श्रीमती मथुराबाई खुशाल चन्द्र जैन, द्वारा-श्री रतन चन्द खुशाल चन्द्र गाँधी के सुपुत्र श्री धन्य कुमार, अशोक कुमार, शिरीश कुमार, धर्मराज गाँधी फलटन (सा.)।
8. श्री शांतिलाल खुशाल चन्द गाँधी, फलटन (सातारा) महा.।
9. श्री अनन्त लाल फूलचन्द फड़े, अकलूज (सोलापुर) महा.।
10. श्री हीरालाल माणिकलाल गाँधी, अकलूज (सोलापुर) महा.।

11. श्री जयकुमार खुशालचंद गाँधी, अकलूज (सोलापुर) महा.।
12. श्रीमती बदामी देवी मातेश्वरी श्री पदम कुमार जैन गंगवाल, कानपुर (उ.प्र.)।
13. श्रीमती कमलादेवी ध.प. स्व. श्री महेन्द्र कुमार जैन, घण्टे वाले हलवाई, दरियागंज, नई दिल्ली।
14. श्रीमती उषादेवी ध.प. श्री श्रवण कुमार जैन, चावड़ी बाजार, दिल्ली।
15. श्री मुकेश कुमार जैन, कटरा शहंशाही, चाँदनी चौक, दिल्ली।
16. श्री हुकमीचंद मांगीलाल शाह, धानमंडी, उदयपुर (राज.)
17. श्री किरण चन्द्र जैन, कटरा धूलियान, चाँदनी चौक, दिल्ली।
18. श्रीमती विमलादेवी ध.प. श्री महावीर प्रसाद जैन इंजी. विवेक विहार, दिल्ली
19. श्रीमती उषादेवी ध.प. श्री अशोक कुमार जैन (खेकड़ा निवासी), बहराइच (उ.प्र.)।
20. श्रीमती लीलावती ध.प. श्री हरीश चन्द्र जैन, शकरपुर, दिल्ली।
21. श्री दुलीचन्द जैन, बाहुबली एन्कलेव, दिल्ली।
22. श्री रतिलाल केवलचन्द गाँधी की पुण्य स्मृति में, पापुलर परिवार, सूरत (गुज.)।
23. श्रीमती भंवरीदेवी ध.प. श्री सदासुख जैन पांड्या की समृति में इन्दर चन्द सुमेरमल जैन पांड्या शिलांग (मेघालय)।
24. श्रीमती सोहनीदेवी ध.प. श्री तनसुखराय सेठी, फैन्सी बाजार, गौहाटी (आसम)।
25. श्रीमती धापूबाई ध.प. श्री कस्तूर चन्द जैन, रामगंज मण्डी (राज.)।
26. श्री मिट्ठनलाल चन्द्रभान जैन, कविनगर गाजियाबाद (उ.प्र.)।
27. श्रीमती शकुन्तलादेवी ध.प. श्री सुरेशचंद जैन (बर्तन वाले), खुड़बुड़ा मोहल्लका, देहरादून (उ.प्र.)।
28. श्री देवेन्द्र कुमार गुणवन्त कुमार टोंग्या, बड़नगर (म.प्र.)।
29. श्री दिगम्बर जैन समाज, तहसील फतेहपुर (बाराबंकी) उ.प्र.।
30. श्री मन्नालाल रामलाल जैन डूंगरवाला, भानपुरा (मन्दसौर) म.प्र.।
31. श्री इन्दर चन्द कैलाश चंद चौधरी, सनावद (म.प्र.)।
32. श्री प्रकाश चन्द अमोलक चन्द जैन सर्राफ, सनावद (म.प्र.)।
33. स्व. श्री विमल चन्द जैन, रखबचन्द दसरथ सा, सनावद (म.प्र.)।
34. श्री आजाद कुमार जैन शाह (सनावद वाले), इन्दौर (म.प्र.)।
35. श्रीमती सुषमा देवी ध.प. श्री राकेश कुमार जैन, मवाना (मेरठ) उ.प्र.।
36. श्रीमती कुसुम जैन ध.प. श्री रमेशचन्द जैन, किशनपुरी, बागपत रोड, मेरठ।

37. श्रीमती किरण जैन ध.प. श्री पदम प्रसाद जैन एडवोकेट, मेरठ (उ.प्र.)।
38. श्रीमती विमलादेवी ध.प. श्री जिनेन्द्रप्रसाद जैन ठेकेदार, टोडरमल रोड, नईदिल्ली।
39. श्रीमती क्षमादेवी जैन, मधुबन, दिल्ली।
40. श्रीमती कमलादेवी ध.प. श्री राजेन्द्र कुमार जैन टोडरका, ठाणे (महा.)।
41. श्री अजित प्रसाद जैन बब्बेजी, श्री राजकुमार श्रवण कुमार जैन, लखनऊ।
42. श्री प्रभा चन्द गोधा, 45 भगत वाटिका, सिविल लाइन, जयपुर-6 (राज.)।
43. श्री गोपीचन्द विपिन कुमार जैन, सरधना टैन्ट हाउस, गंजमंडी, सरधना।
44. श्रीमती रतनसुन्दरी देवी ध.प. श्री वीरचन्द जैन (चिकन वाले), चूड़ीवाली गली, चौक बाजार, लखनऊ।
45. डॉ. सुभाषचन्द जैन, रातानाड़ा क्लीनिक, रातानाड़ा बाजार, जोधपुर (राज.)।
46. श्री प्रमोद कुमार जैन (मुजफ्फरनगर वाले) 35 एच.वी.रोड, न्यू मार्केट, थरपकना, रांची (बिहार)।
47. श्री विजेन्द्र कुमार जैन, के.-1/20 मॉडल टाउन, दिल्ली।
48. श्री कैलाश चंद जैन, 45 भगत वाटिका, सिविल लाइन, जयपुर (राज.)।
49. श्री सुभाषचंद जैन, श्री दि. जैन पार्श्वनाथ चैत्यालय, 405 डॉ. मुखर्जी नगर, दिली।
50. श्री सुभाष चन्द जैन सर्राफ, टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.।
51. श्री चन्द्रसेन जैन, द्वारा-सुमेरचन्द, चन्द्रसेन जैन, सब्जी मण्डी, नहटौर (बिजनौर)
52. श्री सुधीर कुमार जैन जे.ई., नन्द किशोर जैन, शारदा नहर खण्ड, शाहजहाँपुर।
53. श्री सुकुमालचंद जैन, मोती ट्रेडिंग कम्पनी, टी.आर. फुकन रोड, फैन्सीबाजार, गौहाटी।
54. श्री अनिल पुलकित सेठी, बी 1/122, फेज-2, अशोक विहार, दिल्ली-110052।
55. श्री चन्द्रमोहन बंसल, 11, पूसा रोड, करोलबाग, नई दिल्ली-5।
56. श्री गिरधर प्रसाद आमोद प्रसाद जैन, जैन वस्त्रालय, काली मार्केट, सिवान (बिहार)।
57. श्री सतीश चन्द जैन, 31 सिविल लाइन, म.नं.-10, सेक्टर-2, टाइप-5 झांसी।
58. श्री स्वरूप चन्द कासलीवाल, नया बाजार, अजमेर (राज.)।
59. श्री हुलास चन्द सेठी, अयोध्या शुगर मिल्स, राजा का सहसपुर, बिलारी (उ.प्र.)।
60. श्रीमती किरण देवी जैन ध.प. श्री नरेन्द्र कुमार जैन, सिविल लाइन, सीतापुर(उ.प्र.)।
61. श्रीमती संतोष जैन ध.प. श्री प्रवीण कुमार जैन, बाराबंकी (उ.प्र.)।
62. श्री सूरजमल पुत्र श्री विनीत कुमार जैन, मोहल्ला गंजकटरा पूरणटरा पूरणजाट, जैन विला, मुरादाबाद (उ.प्र.)।

63. स्व. श्री शिखर चन्द जैन, 'टिम्बर कमीशन एजेन्ट', शंकरगंज, हापुड़ (उ.प्र.)।
64. श्रीमती राजेश्वरी जैन मातेश्वरी श्री राकेश जैन 31, सिविल लाईन, सीतापुर।
65. श्री राजकुमार जैन, मैसर्स रविदत्त प्रेमचन्द जैन बारदाने वाले, श्यामगंज, बरेली।
66. श्री बलवीर जैन, द्वारा-जानकी एक्सटेंशन रिफाइनरी, गाँधीगंज, शाहजहाँपुर।
67. श्री पन्नालाल सेठी, डीमापुर (नागालैंड)।
68. श्री वीरेन्द्र कुमार जैन, ईदगाह कालोनी, आगरा (उ.प्र.)।
69. श्री पोखपाल जैन, द्वारा-नावेल्टी मेटल इंडिया, मानसिंह गेट, अलीगढ़ (उ.प्र.)।
70. श्रीमती रश्मि जैन ध.प. श्री विजय कुमार जैन, दरियागंज, नई दिल्ली।
71. श्रीमती विमला देवी ध.प. श्री प्रमोद कुमार जैन इंजी., शाहजहाँपुर (उ.प्र.)।
72. स्व. श्रीमती कैलाशवती जैन ध.प. श्री कैलाश चन्द जैन इंजी., तोपखाना बाजार, मेरठ।
73. श्रीमती अरुण कुमार नांद्रेकर ध.प. भाऊ साहेब नांद्रेकर, मुलुन्ड (वेस्ट) मुम्बई।
74. श्री भागचन्द मनीष कुमार ठोलिया, द्वारा-किरन एजेंसी, पो. बुरहानपुर, (म.प्र.)।
75. श्री कैलाशचन्द राजकुमार जैन रावंका, पो. बिसवां (सीतापुर) उ.प्र.।
76. श्रीमती विद्यावती जैन, राजौरी गार्डन, नई दिल्ली।
77. श्री आनन्द प्रकाश जैन (सौरम वाले) एवं सुपुत्र श्री मदन कुमार, प्रदीप कुमार एवं प्रवीण कुमार जैन, धर्मपुरा, गाँधीनगर, दिल्ली।
78. श्रीमती अरुणा जैन, ध.प. प्रवीन्द्र कुमार जैन, प्रीतमपुरा, दिल्ली।
79. श्रीमती पुष्पादेवी, ध.प. महेन्द्र कुमार जैन, पुष्पांजली एन्क्लेव, दिल्ली।
80. श्री बाबूलाल तोताराम जैन, भुसावल (महा.)।
81. डॉ. अनुपम जैन, सुदामा नगर, इंदौर (म.प्र.)।
82. श्री विनय कुमार जैन, ज्वैलर्स, दरीबाकलां, दिल्ली।
83. स्व. श्री आनन्द प्रकाश जैन 'शान्तिप्रिय', जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.।
84. श्रीमती राजुलबाई ध.प. श्री नेमीचन्द जैन लोहाड़े, पो. कोपरगाँव (महा.)।
85. श्री धन्नालाल गोधा, मल्हारगंज, इंदौर (म.प्र.)।
86. श्री सुनील कुमार मनोज कुमार जैन, झिलमिल कालोनी, दिल्ली।
87. श्रीमती आशा जैन ध.प. श्री राजेश कुमार जैन बरुआ सागर (उ.प्र.)।
88. श्री पारसमल डूंगरमल जी पाटनी पो. मेड़तासिटी, नागौर (राजस्थान)।
89. श्री अनिल कुमार जैन (गुड़गांव वाले) प्रियदर्शनी विहार, दिल्ली-92।

90. श्रीमती कृष्णा बाई नेमीनाथ जैन, पी. वाले, हैदराबाद (आन्ध्र प्रदेश)।
91. श्रीमती मंजूलता जैन ध.प. श्री प्रभात चन्द गोधा, नया बाजार, अजमेर (राज.)।
92. श्री प्रमोद कुमार जैन, पारस प्रिन्टर्स, शाहदरा-दिल्ली।
93. श्री चांदमल अनिल कुमार सरावगी, किशनगंज (बिहार)।
94. कुमारी अदिती सुपुत्री श्री अपोलो जी जैन सौगानी, इंदौर।
95. श्रीमती मंजूलता ध.प. प्रभाचन्द गोधा-नया बाजार, अजमेर।
96. श्री सुचेद्र कुमार शैलेन्द्र कुमार जैन, डाल्टनगंज (झारखंड)।
97. श्रीमती जतनदेवी लक्ष्मीचंद जैन, चेन्नई (तमिलनाडु)।
98. श्रीमती सखाई जैन ध.प. श्री जीतमल जैन, मड़ाना (कोटा) राज.।
99. श्री मोहित जैन पुत्र मुकेश जैन, जगन्नाथ जैन पहाड़िया, फतेहपुर (शेखावटी) राज.।
100. श्री नरेश जैन बंसल, गुड़गाँवा (हरि.)।
101. श्रीमती रतनबाई ध.प. राजेन्द्र प्रकाश कोठिया, कोटा (राज.)।
102. श्रीमती संतोष जैन ध.प. श्री अजीत कुमार जैन, भिवाड़ी (राज.)।
103. श्रीमती प्रेमलता जैन ध.प. श्री सुशील कुमार जैन, मलाड़ (मुम्बई)।
104. श्री राजेन्द्र कुमार पचौलिया, इंदौर (म.प्र.)।
105. स्व. श्री मोहनलाल हेमचंद गांधी, सतारा (महा.)।
106. श्रीमती आरती जैन ध.प. श्री प्रकाशचंद जैन 'शीशे वाले', इलाहाबाद (उ.प्र.)

विषयानुक्रमणिका

क्र.सं.	व्रत एवं पूजा	पेज संख्या
1.	नवनिधि व्रत विधि	1
2.	भगवान शांति-कुंथु-अर तीर्थंकर पूजा	3
3.	अक्षयतृतीया व्रत विधि	8
4.	भगवान ऋषभदेव जिनपूजा	11
5.	रक्षाबंधन व्रतविधि	17
6.	सलूना पर्व पूजा	19
7.	विष्णुकुमार मुनि पूजा	23
8.	शांतिनाथ व्रत विधि (शांतिभक्ति व्रत)	27
9.	भगवान शांतिनाथ पूजा	30
10.	शांतिभक्ति (हिन्दी पद्यानुवाद एवं मंत्र सहित)	36
11.	एकीभाव व्रत विधि	42
12.	चौबीस तीर्थंकर पूजा	47
13.	एकीभाव स्तोत्र (हिन्दी पद्यानुवाद एवं मंत्र सहित)	52
14.	सप्तर्षि व्रत विधि (मृत्युंजय व्रत)	63
15.	सप्तर्षि पूजा	75
16.	गौतम स्वामी व्रत विधि	80
17.	गौतम स्वामी पूजा	84
18.	शारदा व्रत	89
19.	सरस्वती पूजा	91

नवनिधि व्रत

हस्तिनापुर में भगवान शांतिनाथ, भगवान कुंथुनाथ एवं भगवान अरनाथ ये तीन तीर्थंकर जन्मे हैं। ये तीनों ही तीर्थंकर तीन-तीन पद के धारक हुए हैं। ये ही इन तीनों तीर्थंकर भगवन्तों की एवं हस्तिनापुर तीर्थ की विशेषता है। इन तीनों तीर्थंकरों के तीन-तीन पदों की अपेक्षा यह 'नवनिधि व्रत' किया जाता है। इस व्रत के प्रभाव से नवनिधि-ऋद्धि से भंडार भरेगा। सर्व लौकिक संपत्ति के साथ-साथ अलौकिक आध्यात्मिक संपत्ति भी प्राप्त होगी।

व्रत की उत्तम विधि—आषाढ़, कार्तिक और फाल्गुन मास में आष्टान्हिक पर्व में एक दिन पहले सप्तमी से पूर्णिमा तक नवदिन व्रत करना—उत्तम विधि नव उपवास करना, मध्यम में अल्पाहार और जघन्य में एकाशन—एक बार शुद्ध भोजन करना है। व्रत के दिन भगवान शांतिनाथ, कुंथुनाथ और अरहनाथ तीर्थंकरों की समुच्चय पूजन या पृथक्-पृथक् पूजन करके उनके जीवन चरित्र को पढ़ना है।

अथवा लघु व्रत विधि—इस व्रत में लगातार 9 माह तक प्रत्येक

माह में तिथि का कोई नियम न करके एक-एक व्रत कर लेना, यह सर्वजघन्य विधि है। ऐसे मात्र नव व्रत करना है।

मंत्र इस प्रकार हैं—

समुच्चय मंत्र—

ॐ ह्रीं अर्हं तीर्थंकरचक्रवर्तिकामदेवपदधारक शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरनाथतीर्थंकरेभ्यो नमः।

प्रत्येक व्रत के पृथक्-पृथक् मंत्र—

1. **ॐ ह्रीं अर्हं षोडशतीर्थंकरपदप्राप्तश्रीशांतिनाथाय नमः।**
2. **ॐ ह्रीं अर्हं पंचमचक्रवर्तिपदप्राप्तश्रीशांतिनाथाय नमः।**
3. **ॐ ह्रीं अर्हं द्वादशकामदेवपदप्राप्तश्रीशांतिनाथाय नमः।**
4. **ॐ ह्रीं अर्हं सप्तदशतीर्थंकरपदप्राप्तश्रीकुंथुनाथाय नमः।**
5. **ॐ ह्रीं अर्हं षष्ठचक्रवर्तिपदप्राप्तश्रीकुंथुनाथाय नमः।**
6. **ॐ ह्रीं अर्हं त्रयोदशकामदेवपदप्राप्तश्रीकुंथुनाथाय नमः।**
7. **ॐ ह्रीं अर्हं अष्टादशतीर्थंकरपदप्राप्तश्रीअरनाथाय नमः।**
8. **ॐ ह्रीं अर्हं सप्तमचक्रवर्तिपदप्राप्तश्रीअरनाथाय नमः।**
9. **ॐ ह्रीं अर्हं चतुर्दशकामदेवपदप्राप्तश्रीअरनाथाय नमः।**

व्रत पूर्ण करके तीर्थंकर श्री शांतिनाथ भगवान की या तीनों तीर्थंकर भगवन्तों की प्रतिमा की प्रतिष्ठा करावें। हस्तिनापुर तीर्थ और सम्मेदशिखर तीर्थ की वंदना करके श्री शांतिनाथ का सोलह दिन का महाविधान करके उद्यापन पूर्ण करें और भी अपनी शक्ति के अनुसार 9-9 उपकरण आदि मंदिर में प्रदान करें। मुनि-आर्यिका आदि गुरुओं को आहारदान, पिच्छी-कमण्डलु, शास्त्र दान देवें। इस विधि से इस 'नवनिधि व्रत' को करने वाले नियम से संसार के समस्त सुखों का अनुभव कर चक्रवर्ती, कामदेव, तीर्थंकर आदि पदों को प्राप्त कर अक्षय-अतीन्द्रिय मोक्षसुख को प्राप्त करेंगे, यही इस व्रत का फल है।

भगवान शांति-कुंथु-अर तीर्थंकर पूजा

स्थापना –नरेन्द्र छंद

श्रीमन् शांति कुंथु अर जिनवर, तीर्थंकर पदधारी।
चक्रवर्ति सम्राट् हुए ये, कामदेव पदधारी।।
तिहुँजग भ्रमण विनाशन हेतू, इनका यजन करूँ मैं।
आह्वानन स्थापन करके, सन्निधिकरण करूँ मैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिकुंथुअरतीर्थंकरजिनेश्वरः! अत्र अवतरत अवतरत संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिकुंथुअरतीर्थंकरजिनेश्वराः! अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिकुंथुअरतीर्थंकरजिनेश्वराः! अत्र मम सन्निहिता भवत भवत वषट् सन्निधीकरणं।

अथ अष्टक –नरेन्द्र छंद

तीनलोक भर जाय नाथ मैं, इतना नीर पिया है।
फिर भी तृप्ति न हुई अतः अब, जल से धार दिया है।।
शांति कुंथु अर तीर्थंकर को, पूजूँ मनवचतन से।
रत्नत्रयनिधि मिले नाथ अब, छूटूँ भवभव दुख से।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिकुंथुअरतीर्थंकरेभ्यः जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिभुवन में बहु देह धरे मैं, उनसे शांति न पाई।
इसी हेतु चंदन से पूजूँ, मिले शांति सुखदाई।।
शांति कुंथु अर तीर्थंकर को, पूजूँ मनवचतन से।
रत्नत्रयनिधि मिले नाथ अब, छूटूँ भवभव दुख से।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिकुंथुअरतीर्थंकरेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह शत्रु ने आत्मसौख्य मुझ, खंड खंड कर रक्खा।
शालि पुंज से जजूँ अखंडित, सौख्य मिले यह इच्छा।।
शांति कुंथु अर तीर्थंकर को, पूजूँ मनवचतन से।
रत्नत्रयनिधि मिले नाथ अब, छूटूँ भवभव दुख से।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिकुंथुअरतीर्थंकरेभ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

कामदेव ने तीनजगत को, निज के वश्य किया है।
उसके जेता आप अतः मैं, अर्पण पुष्प किया है।।
शांति कुंथु अर तीर्थंकर को, पूजूँ मनवचतन से।
रत्नत्रयनिधि मिले नाथ अब, छूटूँ भवभव दुख से।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिकुंथुअरतीर्थंकरेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

काल अनादी से क्षुध व्याधी, भोजन से नहिं मिटती।
व्यंजन सरस बनाकर जिनपद, अर्पण से वह नशती।।
शांति कुंथु अर तीर्थंकर को, पूजूँ मनवचतन से।
रत्नत्रयनिधि मिले नाथ अब, छूटूँ भवभव दुख से।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिकुंथुअरतीर्थंकरेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोहतिमिर ने तीन जगत को, अंध समान किये हैं।
दीपक से तुम आरति करके, ज्ञान उद्योत हिये है।।
शांति कुंथु अर तीर्थंकर को, पूजूँ मनवचतन से।
रत्नत्रयनिधि मिले नाथ अब, छूटूँ भवभव दुख से।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिकुंथुअरतीर्थंकरेभ्यः मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट कर्म ये संग लगे हैं, इनका नाश करूँ मैं।
तुम सन्निधि में धूप जलाकर, सुरभित धूम्र करूँ मैं।।
शांति कुंथु अर तीर्थंकर को, पूजूँ मनवचतन से।
रत्नत्रयनिधि मिले नाथ अब, छूटूँ भवभव दुख से।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिकुंथुअरतीर्थंकरेभ्यः अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

बहुत कुदेव नमन कर मैंने, अविनश्वर फल चाहा।
फिर भी आश हुई नहिं पूरी, अतः आप ढिग आया।।
शांति कुंथु अर तीर्थंकर को, पूजूँ मनवचतन से।
रत्नत्रयनिधि मिले नाथ अब, छूटूँ भवभव दुख से।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिकुंथुअरतीर्थंकरेभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल फल आदिक अर्घ्य सजाकर, स्वर्णथाल भर लाया।
सर्वोत्तम फल पाने हेतू, अर्घ्य चढ़ाने आया।।
शांति कुंथु अर तीर्थंकर को, पूजूँ मनवचतन से।
रत्नत्रयनिधि मिले नाथ अब, छूटूँ भवभव दुख से।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिकुंथुअरतीर्थंकरेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा–

शांति कुंथु अर नाथ के, चरणों में त्रय बार।
शांतीधारा मैं करूँ, मिले शांति भंडार।।10।।

शांतये शांतिधारा।

बकुल कमल चंपा जुही, सुरभिद्धरसिंगार।
तुम पद पुष्पांजलि करूँ, होवे सौख्य अपार।।11॥

दिव्य पुष्पांजलिः।

तीर्थक्षेत्र को अर्घ

–दोहा–

शांति कुंथु अरनाथ के, गर्भ जन्म तप ज्ञान।
हस्तिनागपुर में हुए, चार कल्याण महान ।।1।।

ॐ ह्रीं हस्तिनागपुरे गर्भजन्मतपोज्ञानकल्याणकप्राप्तेभ्यः श्रीशांतिकुंथु-अरतीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांति कुंथु अरनाथ ने, पाया पद निर्वाण।
श्री सम्मेदाचल जजूँ, सिद्धक्षेत्र सुखदान।।2।।

ॐ ह्रीं सम्मेदशिखरात् निर्वाणपदप्राप्तेभ्यः श्रीशांतिकुंथुअरतीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

–दोहा–

हस्तिनागपुर में हुये, काश्यप गोत्र ललाम।
नमूँ नमूँ नत शीश मैं, शांति कुंथु अर नाम।।1।।

–शंभु छंद–

जय शांतिनाथ तुम तीर्थंकर, चक्री औ कामदेव जग में।
माता ऐरावति धन्य हुईं, पितु विश्वसेन भी धन्य बने।।
भादों वदि सप्तमि गर्भ बसे, जन्में वदि ज्येष्ठ चतुर्दशि में।
इस ही तिथि में दीक्षा लेकर, सित पौष दशमि केवली बने।।2।।
शुभ ज्येष्ठ कृष्ण चौदश तिथि में, शिवपद साम्राज्य लिया उत्तम।
इक लाख वर्ष आयू चालिस, धनु तुंग चिह्नमृग तनु स्वर्णिम।।
हे शांतिनाथ! तीनों जग में, इक शांती के दाता तुमही।
इसलिये भव्यजन तुम पद का, आश्रय लेते रहते नितही।।3।।

श्री कुंथुनाथ पितु सूरसेन, माँ श्रीकांता के पुत्र हुए।
श्रावणवदि दशमी गर्भ बसे, वैशाख सितैकम जन्म लिये।।
इस ही तिथि में दीक्षा लेकर, सित चैत्र तीस केवलज्ञानी।
वैशाख सितैकम मुक्ति बसे, पैंतिस धनु तुंग देह नामी।।4।।

पंचानवे सहसवर्ष आयू, स्वर्णिम तनु छाग चिह्न प्रभु को।
सत्रहवें तीर्थंकर छट्ठे, चक्रेश्वर कामदेव तनु हो।।
तुम पदपंकज का आश्रय ले, भविजन भववारिधि तरते हैं।
निज आत्मसौख्य अमृत पीकर, अविनश्वर तृप्ती लभते हैं।।5।।

अरनाथ! सुदर्शन पिता आप, माँ ख्यात मित्रसेना जग में।
फाल्गुन सित तीज गर्भ आये, मगसिर सित चौदश को जन्में।।
मगसिर सित दशमी दीक्षा ले, कार्तिक सित बारस ज्ञान उदय।
प्रभु चैत्र अमावस्या शिवपद, धनु तीस तुंग तनु सुवरणमय।।6।।

चौरासी सहसवर्ष आयू, प्रभु चिह्न मीन से जग जानें।
हम भी तुम पद पंकज में नत, सब रोग शोक संकट हानें।।
जय जय रत्नत्रय तीर्थंकर, जय शांति कुंथु अर तीर्थेश्वर।
जय जय मंगलकर लोकोत्तम, जय शरणभूत हे परमेश्वर।।7।।

मैं शुद्ध बुद्ध हूँ सिद्ध सदृश, मैं गुण अनंत के पुञ्जरूप।
मैं नित्य निरंजन अविकारी, चिच्चिंतामणि चैतन्यरूप।।
निश्चयनय से प्रभु आप सदृश, व्यवहार नयाश्रित संसारी।
तुम भक्ती से यह शक्ति मिले, निज संपत्ति प्राप्त करूँ सारी।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिकुंथुअरतीर्थंकरेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, पुष्पांजलिः।

दोहा – **तुम पद भक्ति प्रसाद से, मिले यही वरदान।**
'ज्ञानमती' निधि पूर्ण हो, मिले अंत निर्वाण।।9।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

अक्षय तृतीया व्रत

(श्री ऋषभदेव-आहार व्रत)

भगवान ऋषभदेव ने चैत्र कृष्णा नवमी को प्रयाग में वटवृक्ष के नीचे जैनेश्वरी दीक्षा ली थी। छह माह तक प्रभु ध्यान में लीन रहे, अनंतर आहार की चर्या दिखलाने के लिए भगवान चांद्रीचर्या से आहार हेतु निकले किन्तु उन दिनों किसी को भी नवधाभक्तिपूर्वक आहार देने की विधि मालूम नहीं थी अतः प्रभु के पुनः छह माह से अधिक निकल गये। पुनः भगवान चांद्रीचर्या से भ्रमण करते हुए हस्तिनापुर आये। वहाँ के राजा सोमप्रभ के भ्राता श्रेयांस युवराज को सात स्वप्न हुए अनंतर प्रभु के दर्शन करते ही उन्हें आठ भव पूर्व का जातिस्मरण हो गया जबकि उन्होंने रानी श्रीमती और राजा वज्रजंघ के रूप में युगलमुनि चारण ऋद्धिधारियों को आहार दिया था। उसी की सारी विधि ज्ञात हो गई और उन्होंने जान लिया कि ये भगवान ऋषभदेव आठ भव पूर्व मेरे पति राजा वज्रजंघ थे और मैं इनकी रानी श्रीमती था आदि...।

तत्क्षण ही युवराज श्रेयांस ने अपने भ्राता के साथ-साथ प्रभु का पड़गाहन किया और नवधाभक्तिपूर्वक प्रभु को इक्षुरस का आहार दिया। उसी क्षण आकाश से देवों ने पंचाश्चर्य वृष्टि करके विशेष जयजयकारा किया था। वह तिथि वैशाख शुक्ला तीज थी जो कि आज भी "अक्षयतृतीया" के नाम से प्रसिद्धि को प्राप्त है एवं जिसके नीचे प्रभु ने दीक्षा ली थी, वह वृक्ष 'अक्षयवटवृक्ष' के नाम से आज भी प्रयाग–इलाहाबाद में विद्यमान है।

व्रत की विधि–इन्हीं प्रभु की प्रथम पारणा के उपलक्ष्य में यह व्रत करना चाहिए। इसकी विधि इस प्रकार है–

चैत्र कृ. 9 को उपवास करके आगे दशमी को पारणा करें अर्थात्

दो बार भोजन करें। एक वर्ष चालीस दिन तक रात्रि में चतुर्विध आहार का त्याग रखें। जिस दिन पारणा हो, दिन में दो बार भोजन, जल एवं औषधि ले सकते हैं। इस तरह एक दिन व्रत–उपवास या एकाशन करें। अगले दिन पारणा में दो बार भोजन करें, इस प्रकार एक व्रत-एक पारणा, एक व्रत-एक पारणा करते हुए अक्षयतृतीया के एक दिन पहले वैशाख शु. द्वितीया तक व्रत करके हस्तिनापुर पहुँचकर अक्षयतृतीया के दिन जम्बूद्वीप में विराजमान भगवान ऋषभदेव की आहार मुद्रा की प्रतिमा को इक्षुरस का आहार देकर स्वयं इक्षुरस से पारणा उस दिन एकाशन–एक बार ही भोजन करके व्रत को पूर्ण करें।

भगवान ने वटवृक्ष के नीचे दीक्षा लेकर छह महीने का योग धारण किया था अतः छह माह–चैत्र कृ. 9 से आश्विन कृ. नवमी तक निम्न मंत्र का जाप्य करें–

प्रथम मंत्र–**ॐ ह्रीं प्रयागतीर्थे वटवृक्षतले दीक्षाकल्याणकप्राप्ताय ध्यानमग्नश्रीऋषभदेवाय नमः।**

पुनः आश्विन कृ. दशमी से वैशाख शु. 3–अक्षयतृतीया तक छह माह चालीस दिन निम्न मंत्र का जाप्य करें–

द्वितीय मंत्र–**ॐ ह्रीं चान्द्रीचर्याप्रकाशकाय प्रथमतीर्थंकर-श्रीऋषभदेवाय नमः।**

व्रत के दिन श्री ऋषभदेव का अभिषेक करके श्री ऋषभदेव की पूजा करें एवं उपर्युक्त ऋषभदेव के मंत्र का जाप करें। व्रत के पूर्ण होने पर उद्यापन में श्री ऋषभदेव की प्रतिमा की पंचकल्याणक प्रतिष्ठा करावें। श्री ऋषभदेव की जन्मभूमि अयोध्या, दीक्षा एवं केवलज्ञान भूमि प्रयाग-इलाहाबाद तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली के दर्शन करें पुनः हस्तिनापुर प्रथम पारणा भूमि के दर्शन करके श्री ऋषभदेव विधान करके यथाशक्ति मुनि-आर्यिका आदि को आहार, औषधि आदि दान देकर मंदिर में

9-9 उपकरण आदि रखकर दीन-दुःखियों को करुणादान आदि देकर व्रत पूर्ण करें। इस व्रत के प्रभाव से अक्षय धन-धान्य के साथ-साथ अक्षय पुण्य संपादित कर अक्षयमोक्षधाम को प्राप्त करेंगे।

यदि एक वर्ष 40 दिन का यह व्रत एकान्तरा से नहीं कर सकते हैं तो लघुव्रत भी करके अपनी भावना को सफल कर सकते हैं।

व्रत की लघु विधि (मात्र 40 दिन में करने वाला)– चैत्र कृ. 9 को उपवास करके अगले दिन पारणा करें, पुनः एक उपवास या एकाशन एवं एक पारणा, एक उपवास या एकाशन एवं एक पारणा ऐसे वैशाख शु. द्वितीया तक मात्र 39 दिन का व्रत करके चालिसवें दिन 'अक्षयतृतीया' को हस्तिनापुर में आकर भगवान की मूर्ति–आहारमुद्रावाली को इक्षुरस का आहार देकर व्रत की पारणा करके उस दिन एकाशन–एक बार ही भोजन करके यथाशक्ति उद्यापन करके व्रत पूर्ण करें। इस व्रत में उपर्युक्त दो मंत्रों में से द्वितीय मंत्र का जाप्य करना चाहिए।

प्रथम उत्तम–उत्कृष्टव्रत एक वर्ष चालीस दिन का है और द्वितीय लघुव्रत मात्र चालीस दिन का है। इन व्रतों को करके भक्तगण संपूर्ण मनोरथों को सफल करें।

शांति-मंत्र

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय जगत्शान्तिकराय सर्वोपद्रवशान्तिम् कुरु कुरु ह्रीं नमः।

ॐ ह्रीं सर्वसिद्धिकराय श्री पार्श्वनाथाय नमः।

भगवान ऋषभदेव जिनपूजा

स्थापना– गीता छंद

हे आदिब्रह्मा! युगपुरुष! पुरुदेव! युगस्रष्टा तुम्हीं।
युग आदि में इस कर्मभूमी, के प्रभो! कर्ता तुम्हीं।।
तुम ही प्रजापतिनाथ! मुक्ती, के विधाता हो तुम्हीं।
मैं आपका आह्वान करता, नाथ! अब तिष्ठो यहीं।।1।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अष्टक –चाल –नंदीश्वर पूजा

जिनवच सम शीतल नीर, कंचन भृंग भरूँ।
जिन चरणांबुज में धार, दे जगद्वंद्व हरूँ।।
श्री आदिनाथ जिनराज, आदी तीर्थंकर।
मैं पूजूँ भक्ति समेत, तुमको क्षेमंकर।।1।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनतनु सम सुरभित गंध, सुवरण पात्र भरूँ।
जिनचरण सरोरुह चर्च, भव संताप हरूँ।।
श्री आदिनाथ जिनराज, आदी तीर्थंकर।
मैं पूजूँ भक्ति समेत, तुमको क्षेमंकर।।2।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन गुणसम उज्ज्वल धौत, अक्षत थाल भरे।
जिन चरण निकट धर पुंज, अक्षय सौख्य भरे।।

श्री आदिनाथ जिनराज, आदी तीर्थंकर।
मैं पूजूँ भक्ति समेत, तुमको क्षेमंकर।।3।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनयशसम सुरभित श्वेत, कुंद गुलाब लिये।
मदनारिजयी जिनपाद, पूजूँ हर्ष हिये।।
श्री आदिनाथ जिनराज, आदी तीर्थंकर।
मैं पूजूँ भक्ति समेत, तुमको क्षेमंकर।।4।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवचनामृत सम शुद्ध, व्यंजन थाल भरे।
परमामृत तृप्त जिनेन्द्र, पूजत भूख टरे।।
श्री आदिनाथ जिनराज, आदी तीर्थंकर।
मैं पूजूँ भक्ति समेत, तुमको क्षेमंकर।।5।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वरभेद ज्ञान सम ज्योति,जगमग दीप लिये।
जिनपद पूजत ही होत, ज्ञान उद्योत हिये।।
श्री आदिनाथ जिनराज, आदी तीर्थंकर।
मैं पूजूँ भक्ति समेत, तुमको क्षेमंकर।।6।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपीमीति स्वाहा।

दशगंध सुगंधित धूप, खेवत कर्म जरे।
निज आतम गुण सौगंध्य, दश दिश माहिं भरे।।
श्री आदिनाथ जिनराज, आदी तीर्थंकर।
मैं पूजूँ भक्ति समेत, तुमको क्षेमंकर।।7।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन ध्वनिसम मधुर रसाल, आम अनार भले।
जिनपद पूजत तत्काल, फल सर्वोच्च मिले।।

श्री आदिनाथ जिनराज, आदी तीर्थंकर।
मैं पूजूँ भक्ति समेत, तुमको क्षेमंकर।।8।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन अक्षत पुष्प, नेवज दीप लिया।
वर धूप फलों से युक्त, अर्घ समर्प्य किया।।
श्री आदिनाथ जिनराज, आदी तीर्थंकर।
मैं पूजूँ भक्ति समेत, तुमको क्षेमंकर।।9।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–सोरठा–

सरयूनदी सुनीर, जिनपद पंकज धार दे।
शीघ्र हरो भव पीर, शांतीधारा शांतिकर।।10।।

शांतये शांतिधारा।

बेला कमल गुलाब, चंप चमेली ले घने।
आदीश्वर पादाब्ज, पूजत ही सुख संपदा।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

पंच कल्याणक अर्घ

–शंभु छंद–

यह पुरी अयोध्या इंद्र रचित, चौदहवें कुलकर नाभिराज।
माता मरुदेवी के आँगन, बहु रत्न वृष्टि की धनदराज।।
आषाढ़ वदी द्वितीया सर्वारथ, सिद्धी से अहमिंद्र देव।
माता के गर्भ बसे आकर, इंद्रों ने की पितु मात सेव।।

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णाद्वितीयायां श्रीआदिनाथजिनगर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री ह्री धृति आदि देवियों ने, माता की सेवा भक्ती की।
नाना विध गूढ़ प्रश्न करके, माता की अतिशय तृप्ती की।।
शुभ चैत्र वदी नवमी जन्में, प्रभु त्रिभुवन में अति हर्ष हुआ।
इन्द्रों ने आ प्रभु को लेकर, मेरू पर अतिशय न्हवन किया।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णानवम्यां श्रीआदिनाथजिनजन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुरुदेव निलांजना नृत्य देख, वैराग्यभाव मन में लाये।
लौकांतिक सुर स्तुति करते, सुर सुदर्शना पालकि लाये।।
नक्षत्र उत्तराषाढ़ चैत वदि, नवमी प्रभु सिद्धार्थ वन में।
छह मास योग ले दीक्षा ली, मैं अर्घ्य चढ़ाऊँ प्रभु पद में।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णनवम्यां श्रीआदिनाथजिनदीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छह मास योग के बाद प्रभू, मुनिचर्या बतलाने निकले।
गजपुर में अक्षयतृतिया को, आहार दिया श्रेयांस मिले।।
इक सहस वर्ष तप तपने से, केवलज्ञानी होकर चमके।
दिव्यध्वनि से जग संबोधा, फाल्गुन वदि एकादशि तिथि के।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णाएकादश्यां श्रीआदिनाथजिनकेवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बारह विध सभा बनी सुंदर, मुनि आर्या सुरनर पशुगण थे।
प्रभु समवसरण में वृषभसेन, आदिक चौरासी गणधर थे।।
तीजे युग में त्रय वर्ष सार्ध, अरु मासशेष अष्टापद से।
चौदह दिन योग निरुद्ध माघ, वदि चौदश के प्रभु मुक्ति बसे।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णाचतुर्दश्यां श्रीआदिनाथजिनमोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य–ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवजिनेन्द्राय नमः।

जयमाला

दोहा – तीर्थंकर गुण रत्न को, गिनत न पावें पार।
तीन रत्न के हेतु मैं, नमूँ अनंतों बार।।1।।

–शंभु छंद –

श्री वृषभसेन आदिक चौरासी, गणधर मुनि चौरासि सहस।
ब्राह्मी गणिनी त्रय लाख पचास, हजार आर्यिका व्रतसंयुत।।
त्रय लाख सुश्रावक पाँच लाख, श्राविका प्रभू का चउ संघ था।
आयू चौरासी लाख पूर्व, वत्सर व पाँच सौ धनु तनु था।।2।।

– अनंग शेखर छंद–

जयो जिनेन्द्र! आपके महान दिव्य ज्ञान में,
त्रिलोक और त्रिकाल एक साथ भासते रहे।
जयो जिनेन्द्र! आपका अपूर्व तेज देखके,
असंख्य सूर्य और चंद्रमा भि लाजते रहे।।
जयो जिनेन्द्र! आपकी ध्वनी अनच्छरी खिरे,
तथापि संख्य भाषियों को बोध है करा रही।
जयो जिनेन्द्र! आपका अचिन्त्य ये महात्म्य देख,
सुभक्ति से प्रजा समस्त आप आप आ रही।।3।।

जिनेश! आपकी सभा असंख्य जीव से भरी,
अनंत वैभवों समेत भव्य चित्त मोहती।
जिनेश! आपके समीप साधु वृंद औ गणीन्द्र,
केवली मुनीन्द्र और आर्यिकायें शोभतीं।।
सुरेन्द्र देवियों की टोलियाँ असंख्य आ रही,
खगेश्वरों की पक्तियाँ अनेक गीत गा रहीं।
सुभूमि गोचरी मनुष्य नारियाँ तमाम हैं,
पशू तथैव पक्षियों कि टोलियाँ भी आ रहीं।।4।।

सुबारहों सभा स्वकीय ही स्वकीय में रहें,
असंख्य भव्य बैठ के जिनेश देशना सुनें।
सुतत्त्व सात नौ पदार्थ पाँच अस्तिकाय और,
द्रव्य छह स्वरूप को भले प्रकार से गुनें।।
निजात्म तत्त्व को संभाल तीन रत्न से निहाल,
बार-बार भक्ति से मुनीश हाथ जोड़ते।
अनंत सौख्य में निमित्त आपको विचार के,
अनंत दुःख हेतु जान कर्मबंध तोड़ते।।5।।

स्वमोह बेल को उखाड़ मृत्युमल्ल को पछाड़,
मुक्ति अंगना निमित्त लोक शीश जा बसें।
प्रसाद से हि आपके अनंत भव्य जीव राशि,
आपके समान होय आप पास आ लसें।।
असंख्य जीव मात्र दृष्टि समीचीन पायके,
अनंतकाल रूप पंच परावर्त मेटते।
सुभक्ति के प्रभाव से असंख्य कर्म निर्जरा,
करें अनंत शुद्धि से निजात्म सौख्य सेवते।।6।।

दोहा – वृषभ चिह्न स्वर्णिम तनू, प्रथम तीर्थंकर आप।
'ज्ञानमती' सुख शांति दे, करो हमें निष्पाप।।7।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
शांतये शांतिधारा। पुष्पांजलिः।

दोहा – नाथ! आप गुणसिंधु हैं, को कहि पावे पार।
नाममंत्र ही आपका, करे भवोदधि पार।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

रक्षाबंधन व्रत

हस्तिनापुर में आज से लगभग 12 लाख वर्ष पूर्व श्री अकंपनाचार्य आदि सात सौ मुनियों का उपसर्ग दूर हुआ था। श्री विष्णुकुमार महामुनि ने विक्रियाऋद्धि के प्रभाव से उज्जयिनी से आकर बलि आदि मंत्रियों के द्वारा किये गये उपसर्ग को दूर कर मुनियों की रक्षा की थी, वह तिथि 'श्रावण शुक्ला पूर्णिमा' थी, तभी से आज तक यह तिथि 'रक्षाबंधन' पर्व के नाम से सारे भारत में विख्यात है। भले ही आज यह पर्व मात्र भाई-बहन के पर्व के रूप में प्रसिद्ध है, फिर भी गुरुओं की रक्षा ही इसका मुख्य उद्देश्य है।

व्रत की विधि– श्रावण शु. 13 से पूर्णिमा तक 3 दिन यह व्रत करना चाहिए। त्रयोदशी को एकाशन करके चतुर्दशी को उपवास करें। व्रत के दिन मंदिर में पंचपरमेष्ठी की प्रतिमा का पंचामृत अभिषेक करके, यदि श्री अकंपनाचार्य और विष्णुकुमार मुनियों की प्रतिमाएं हों, तो उनका अभिषेक करें या युगल मुनियों के चरणों का अभिषेक करके पंचपरमेष्ठी की पूजा, श्री अकंपनाचार्य व विष्णुकुमार मुनि की पूजा करें। निम्न जाप्य करें–

ॐ ह्रीं श्री अकंपनाचार्यादि-सप्तशतमुनिभ्यो नमः।

अथवा

ॐ ह्रीं अर्हं महोपसर्गविजयिश्रीअकंपनाचार्यादिसप्तशतमुनिभ्यो नमः।

व्रतों के दिन रक्षाबंधन की एवं श्री विष्णुकुमार मुनि की कथा अवश्य पढ़ें। पुनः श्रावण शुक्ला पूर्णिमा के दिन हस्तिनापुर आकर श्री अकंपनाचार्य और श्री विष्णुकुमार महामुनियों की पूजा करके वहाँ पर विराजमान साधुओं को आहार दान देकर स्वयं खीर आदि का भोजन लेकर एकाशन करें अर्थात् एक बार भोजन करें एवं धर्मध्वज

स्तंभ में रक्षासूत्र बांधें तथा साधर्मियों को धर्म की एवं धर्मायतन की रक्षा हेतु रक्षासूत्र बांधें। उपर्युक्त दो में से एक जाप्य करके– **ॐ ह्रीं श्री विष्णुकुमार महामुनये नमः।** मंत्र की भी जाप्य करें। पुनः भाद्रपद कृ. प्रतिपदा को व्रत पूर्ण करें। इस प्रकार यह व्रत सात वर्ष तक करके यथाशक्ति उद्यापन करें। इन मुनियों के चरण बनवाकर या प्रतिमा बनवाकर विधिवत् प्रतिष्ठा कराकर मंदिर में विराजमान करें।

इस व्रत के प्रभाव से अनेक प्रकार की दुर्घटना,रेल, मोटर आदि के एक्सीडेंट आदि का निवारण होगा, अकाल मृत्यु टलेगी। अनेक प्रकार के कष्ट दूर होंगे और सब प्रकार से सुख, शांति, यश, संपत्ति, संतति आदि की वृद्धि होगी।

चारित्र के बिना मात्रज्ञान सिद्धिदायक नहीं है

सव्वं पिहि सुदणाणं सट्ठु सुगुणिदं पि सुट्ठु पढिदं पि।
समणं भट्ठचरित्तं णहु सक्को सुग्गइं णेदुं।।14।।
जडि पडदि दीवहत्थो अवडे किं कुणदि तस्स सो दीवो।
जदि सिक्खिऊण अयणं करेदि किं तस्स सिक्ख फलं।।15।।

अर्थ– संपूर्ण भी श्रुतज्ञान कालादि शुद्धिपूर्वक प्राप्त किया गया है तथा परिणामों की विशुद्धि से बारम्बार उसका अभ्यास भी किया गया है उसका व्याख्यान करने से तथा हृदय से सम्यक्धारण करने पर भी वह ज्ञान भ्रष्ट-चारित्र यति को अथवा चारित्र रहित को सद्गति में पहुँचाने के लिए समर्थ नहीं है। अतः चारित्र ही प्रधान है।

–श्री कुन्दकुन्द देव

सलूना पर्व पूजा

(श्री अकम्पनाचार्यादि सप्तशत-मुनि पूजा)

(चाल-जोगीरासा)

पूज्य अकम्पन साधु-शिरोमणि-सातशतक मुनि ज्ञानी।
आ हस्तिनापुर के कानन में, हुए अचल दृढ़ ध्यानी।।
दुःखद सहा उपसर्ग भयानक, सुन मानव घबराए।
आत्म-साधना के साधक वे, तनिक नहीं अकुलाये।।
योगिराज श्री विष्णु त्याग-तप, वत्सलतावश आये।
किया दूर उपसर्ग जगत-जन, मुग्ध हुए हर्षाये।।
सावन शुक्ला पन्द्रस पावन, शुभ दिन था सुख दाता।
पर्व सलूना हुआ पुण्यप्रद, यह गौरवमय गाथा।।
शान्ति दया समता का जिनसे, नव आदर्श मिला है।
जिनका नाम लिये से होती, जागृत पुण्य-कला है।।
करूँ वंदना उन गुरुपद की, वे गुण मैं भी पाऊँ।
आह्वानन संस्थापन सन्निधि-करण करूँ हर्षाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्रीअकम्पनाचार्यादि-सप्तशतमुनिसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्रीअकम्पनाचार्यादि-सप्तशतमुनिसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्रीअकम्पनाचार्यादि-सप्तशतमुनिसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम्।

–अथाष्टकं-गीता छंद –

मैं उर सरोवर से विमल जल, भाव का लेकर अहो!
नत पाद-पद्मों में चढ़ाऊँ मृत्यु, जनम जरा न हो।।

श्रीगुरु अकम्पन आदि मुनिवर, मुझे साहस शक्ति दें।
पूजा करूँ पातक मिटें, वे सुखद समता भक्ति दें।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीअकम्पनाचार्यादि-सप्तशतमुनिभ्यः जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सन्तोष मलयागिरिय चन्दन, निराकुलता सरस ले।
नत पाद-पद्मों में चढ़ाऊँ, विश्वताप नहीं जले।।
श्रीगुरु अकम्पन आदि मुनिवर, मुझे साहस शक्ति दें।
पूजा करूँ पातक मिटें, वे सुखद समता भक्ति दें।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीअकम्पनाचार्यादि-सप्तशतमुनिभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

तंदुल अखंडित शुद्ध आशा, के नवीन सुहावने।
नत पाद-पद्मों में चढ़ाऊँ, दीनता क्षयता हने।।
श्रीगुरु अकम्पन आदि मुनिवर, मुझे साहस शक्ति दें।
पूजा करूँ पातक मिटें, वे सुखद समता भक्ति दें।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीअकम्पनाचार्यादि-सप्तशतमुनिभ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

ले विविध विमल विचार सुन्दर, सरस सुमन मनोहरे।
नत पाद-पद्मों में चढ़ाऊँ, काम की बाधा हरे।।
श्रीगुरु अकम्पन आदि मुनिवर, मुझे साहस शक्ति दें।
पूजा करूँ पातक मिटें, वे सुखद समता भक्ति दें।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीअकम्पनाचार्यादि-सप्तशतमुनिभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ शक्ति घृत में विनय के, पकवान पावन मैं बना।
नत पाद-पद्मों में चढ़ा, मेटूँ क्षुधा की यातना।।
श्रीगुरु अकम्पन आदि मुनिवर, मुझे साहस शक्ति दें।
पूजा करूँ पातक मिटें, वे सुखद समता भक्ति दें।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीअकम्पनाचार्यादि-सप्तशतमुनिभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम कपूर विवेक का ले, आत्म-दीपक में जला।
कर आरती गुरु की हटाऊँ, मोह-तम की यह बला।।
श्रीगुरु अकम्पन आदि मुनिवर, मुझे साहस शक्ति दें।
पूजा करूँ पातक मिटें, वे सुखद समता भक्ति दें।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीअकम्पनाचार्यादि-सप्तशतमुनिभ्यः मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

ले त्याग-तप की यह सुगंधित, धूप मैं खेऊँ अहो!
गुरुचरण-करुणा से करम का, कष्ट यह मुझको न हो।।
श्रीगुरु अकम्पन आदि मुनिवर, मुझे साहस शक्ति दें।
पूजा करूँ पातक मिटें, वे सुखद समता भक्ति दें।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीअकम्पनाचार्यादि-सप्तशतमुनिभ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

शुचि-साधना के मधुरतम, प्रिय सरस फल लेकर यहाँ।
नत पाद-पद्मों में चढ़ाऊँ, मुक्ति मैं पाऊँ यहाँ।।
श्रीगुरु अकम्पन आदि मुनिवर, मुझे साहस शक्ति दें।
पूजा करूँ पातक मिटें, वे सुखद समता भक्ति दें।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीअकम्पनाचार्यादि-सप्तशतमुनिभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

यह आठ द्रव्य अनूप श्रद्धा, स्नेह से पुलकित हृदय।
नत पाद-पद्मों में चढ़ाऊँ, भव-पार मैं होऊँ अभय।।
श्रीगुरु अकम्पन आदि मुनिवर, मुझे साहस शक्ति दें।
पूजा करूँ पातक मिटें, वे सुखद समता भक्ति दें।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीअकम्पनाचार्यादि-सप्तशतमुनिभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

सोरठा – **पूज्य अकम्पन आदि, सात शतक साधक सुधी।**
यह उनकी जयमाल, वे मुझको निज भक्ति दें।।

–पद्धड़ी छंद –

वे जीव दया पालें महान, वे पूर्ण अहिंसक ज्ञानवान।
उनके न रोष उनके न राग, वे करें साधना मोह त्याग।।
अप्रिय असत्य बोलें न वैन, मन-वचन-काय में भेद है न।
वे महासत्य धारक ललाम, है उनके चरणों में प्रणाम।।
वे लें न कभी तृणजल अदत्त, उनके न धनादिक में ममत्त।
वे व्रत अचौर्य दृढ़ धरें सार, है उनको सादर नमस्कार।।
वे करें विषय की नहीं चाह, उनके न हृदय में काम दाह।
वे शील सदा पालें महान, सब मग्न रहें निज आत्मध्यान।।
सब छोड़ वसन भूषण निवास, माया ममता स्नेह आस।
वे धरें दिगम्बर वेष शान्त, होते न कभी विचलित न भ्रांत।।
नित रहें साधना में सुलीन, वे सहैं परीषह नित नवीन।।
वे करें तत्त्व पर नित विचार, है उनको सादर नमस्कार।।
पंचेन्द्रिय दमन करें महान, वे सतत बढ़ावें आत्म ज्ञान।
संसार देह सब भोग त्याग, वे शिव-पथ साधें सतत जाग।।
''कुमरेश'' साधु वे हैं महान, उनसे पाये जग नित्य त्राण।
मैं करूँ वंदना बार-बार, वे करें भवार्णव मुझे पार।।

घत्ता – **मुनिवर गुण-धारक, पर-उपकारक, भव दुःखहारक सुखकारी।**
वे करम नशायें, सुगुण दिलायें, मुक्ति मिलायें भयहारी।।

ॐ ह्रीं श्रीअकम्पनाचार्यादि-सप्तशतमुनिभ्यो महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा – **श्रद्धा भक्ति समेत, जो जन यह पूजा करे।**
वह पाये निज ज्ञान, उसे न व्यापे जगत दुःख।।

।।इत्याशीर्वादः।।

श्री विष्णुकुमार महामुनि पूजा

–लावनी छंद –

श्री योगी विष्णकुमार बाल वैरागी।
पाई वह पावन ऋद्धि विक्रिया जागी।।
सुन मुनियों पर उपसर्ग स्वयं अकुलाये।
हस्तिनापुर वे वात्सल्य-भरे हिय आये।।
कर दिया दूर सब कष्ट साधना-बल से।
पा गये शान्ति सब साधु अग्नि के झुलसे।।
जन जन ने जय-जयकार किया मन भाया।
मुनियों को दे आहार स्वयं भी पाया।।
हैं वे मेरे आदर्श सर्वदा स्वामी।
मैं उनकी पूजा करूँ बनूँ अनुगामी।।
वे दें मुझमें यह शक्ति भक्ति प्रभु पाऊँ।
मैं कर आतम कल्याण मुक्त हो जाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्रीविष्णुकुमारमुने! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्रीविष्णुकुमारमुने! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्रीविष्णुकुमारमुने! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–चाल-जोगीरासा –

श्रद्धा की वापी से निर्मल, भाव भक्ति जल लाऊँ।
जनम मरण मिट जायें मेरे, इससे विनत चढ़ाऊँ।।
विष्णुकुमार मुनीश्वर वन्दूँ, यति-रक्षा हित आये।
यह वात्सल्य हृदय में मेरे, अभिनव ज्योति जगाये।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीविष्णुकुमारमुनये जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिरि धीरज से सुरभित, समता चन्दन लाऊँ।
भव-भव की आताप न हो, यह इससे विनत चढ़ाऊँ।।

विष्णुकुमार मुनीश्वर वन्दूँ, यति-रक्षा हित आये।
यह वात्सल्य हृदय में मेरे, अभिनव ज्योति जगाये।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीविष्णुकुमारमुनये संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्द्रकिरण सम आशाओं के, अक्षत सरस नवीने।
अक्षय पद मिल जाये मुझको, गुरु सन्मुख धर दीने।।
विष्णुकुमार मुनीश्वर वन्दूँ, यति-रक्षा हित आये।
यह वात्सल्य हृदय में मेरे, अभिनव ज्योति जगाये।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीविष्णुकुमारमुनये अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

उर उपवन से चाह सुमन चुन, विविध मनोहर लाऊँ।
व्यथित करे नहिं काम वासना, इससे विनत चढ़ाऊँ।।
विष्णुकुमार मुनीश्वर वन्दूँ, यति-रक्षा हित आये।
यह वात्सल्य हृदय में मेरे, अभिनव ज्योति जगाये।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीविष्णुकुमारमुनये कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नव नव व्रत के मधुर रसीले, मैं पकवान बनाऊँ।
क्षुधा न बाधा यह दे पाये, इससे विनत चढ़ाऊँ।।
विष्णुकुमार मुनीश्वर वन्दूँ, यति-रक्षा हित आये।
यह वात्सल्य हृदय में मेरे, अभिनव ज्योति जगाये।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीविष्णुकुमारमुनये क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मैं मन का मणिमय दीपक ले, ज्ञान-वातिका जारूँ।
मोह-तिमिर मिट जाये मेरा गुरु सन्मुख उजियारूँ।।
विष्णुकुमार मुनीश्वर वन्दूँ, यति-रक्षा हित आये।
यह वात्सल्य हृदय में मेरे, अभिनव ज्योति जगाये।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीविष्णुकुमारमुनये मोहतिमिरविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

ले विराग की धूप सुगंधित, त्याग धुपायन खेऊँ।
कर्म आठ का ठाठ जलाऊँ, गुरु के पद नित सेऊँ।।

विष्णुकुमार मुनीश्वर वन्दूँ, यति-रक्षा हित आये।
यह वात्सल्य हृदय में मेरे, अभिनव ज्योति जगाये।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीविष्णुकुमारमुनये अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजा सेवा दान और, स्वाध्याय विमल फल लाऊँ।
मोक्ष विमल फल मिले इसी से, विनत गुरू पद ध्याऊँ।।
विष्णुकुमार मुनीश्वर वन्दूँ, यति-रक्षा हित आये।
यह वात्सल्य हृदय में मेरे, अभिनव ज्योति जगाये।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीविष्णुकुमारमुनये मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

यह उत्तम वसु द्रव्य संजोये, हर्षित भक्ति बढ़ाऊँ।
मैं अनर्घपद को पाऊँ, गुरुपद पर बलि बलि जाऊँ।।
विष्णुकुमार मुनीश्वर वन्दूँ, यति-रक्षा हित आये।
यह वात्सल्य हृदय में मेरे, अभिनव ज्योति जगाये।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीविष्णुकुमारमुनये अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा – **श्रावण-शुक्ला पूर्णिमा, यति रक्षा दिन जान।**
रक्षक विष्णु मुनीश की, यह गुणमाल महान।।

–पद्धड़ी छंद –

जय योगिराज श्रीविष्णु धीर, आकर तुम हर दी साधु-पीर।
हस्तिनापुर में आये तुरंत, कर दिया विपत का शीघ्र अन्त।।
वे ऋद्धि सिद्धि-साधक महान्, वे दयावान वे ज्ञानवान।
धर लिया स्वयं वामन सरूप, चल दिये विप्र बनकर अनूप।।
पहुँचे बलि नृप के राजद्वार, वे तेज-पुंज धर्मावतार।
आशीष दिया आनन्दरूप, हो गया मुदित सुन शब्द भूप।।
बोला वर मांगो विप्रराज, दूँगा मनवांछित द्रव्य आज।
पग तीन भूमि याची दयाल, बस इतना ही तुम दो नृपाल।।

नृप हँसा समझ उनको अजान, बोला यह क्या, लो और दान।
इससे कुछ इच्छा नहीं शेष, बोले वे ये ही दो नरेश।।
संकल्प किया दे भूमिदान, ली वह मन में अति मोद मान।
प्रगटाई अपनी ऋद्धि सिद्धि, हो गई देह की विपुल वृद्धि।।
दो पग में नापा जग समस्त, हो गया भूप बलि अस्त-व्यस्त।
इक पग को दो अब भूमिदान, बोले बलि से करुणा-निधान।।
नत मस्तक बलि ने कहा अन्य, है भूमि न मुझ पर हे अनन्य।
रख लें पग मुझ पर एक नाथ, मेरी हो जाये पूर्ण बात।।
कहकर तथास्तु पग दिया आप, सह सका न बलि वह भार-ताप।
बोला तुरंत ही कर विलाप, कर दें अब मुझको क्षमा आप।।
मैं हूँ दोषी मैं हूँ अजान, मैंने अपराध किया महान्।
ये दुखित किये सब साधु-संत, अब करो क्षमा हे दयावन्त।।
तब की मुनिवर ने दया-दृष्टि, हो उठी गगन से महावृष्टि।
पा गये दग्ध वे साधु-त्राण, जन-जन के पुलकित हुए प्राण।।
घर-घर में छाया मोद-हास, उत्सव ने पाया नव प्रकाश।
पीड़ित मुनियों का पूर्णमान, रख मधुर दिया आहार दान।।
युग-युग तक इसको रहे याद, कर सूत्र बंधाया साह्लाद।
बन गया पर्व पावन महान, रक्षाबंधन सुन्दर निधान।।
वे विष्णु मुनीश्वर परम सन्त, उनकी गुण-गरिमा का न अन्त।
वे करें शक्ति मुझको प्रदान, 'कुमरेश' प्राप्त हो आत्मज्ञान।।

घत्ता – **श्री मुनि विज्ञानी, आतम-यानी, मुक्ति-निशानी सुख-दानी।**
भव-ताप विनाशे, सुगुण प्रकाशे, उनकी करुणा कल्यानी।।

ॐ ह्रीं श्री विष्णुकुमारमुनये महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा – **विष्णुकुमार मुनीश को, जो पूजे धर प्रीत।**
वह पावे 'कुमरेश' शिव, और जगत में जीत।।

।।इत्याशीर्वादः।।

शांतिनाथ व्रत
(शांति भक्ति व्रत)

व्रत विधि–श्री शांतिनाथ भगवान सोलहवें तीर्थंकर हैं, साथ ही पाँचवें चक्रवर्ती एवं बारहवें कामदेव भी हुए हैं। इस प्रकार ये भगवान तीन पद के धारक महान हुए हैं। श्री पूज्यपाद स्वामी द्वारा रचित शांतिभक्ति साधुगण एवं श्रावकगण सभी में प्रसिद्ध है। उस शांतिभक्ति का ही यह व्रत है। इसमें सोलह काव्य हैं वे सभी एक से एक महिमापूर्ण हैं। उन एक-एक काव्य का आश्रय कर यह व्रत करना चाहिए। इस व्रत के प्रसाद से स्वयं को शांति, सर्व व्याधियों का विनाश एवं सर्व कष्ट,संकट, आपदाओं का निवारण होगा। सर्वत्र मंगल होगा, घर में, परिवार में मंगल, क्षेम होगा, देश में सुभिक्ष होगा, राजा-प्रजा में धार्मिक भावनाएँ बनेंगी व बढ़ेंगी अतः यह व्रत बहुत ही महत्वपूर्ण है।

श्री पूज्यपाद स्वामी, जो कि हजार वर्ष पूर्व हुए हैं, एक समय उनकी नेत्र की ज्योति मंद हो गई, उसी क्षण उन्होंने शांतिनाथ चैत्यालय में बैठकर इस शांतिनाथ की भक्ति की रचना की, आठवें काव्य को पढ़ते ही **''दृष्टिं प्रसन्नां कुरु''** बोलते ही उनकी आँख की रोशनी वापस आ गई। इस वाक्य में श्लेषालंकार है कि हे भगवन्! आप मुझ पर अपनी दृष्टि प्रसन्न करो अथवा मुझ पर प्रसन्न होवो अर्थात् मेरी दृष्टि–नेत्र ज्योति, प्रसन्न-स्वच्छ-स्वस्थ-निर्मल करो। ऐसे दो अर्थ होते हैं।

व्रत विधि–इस व्रत को शुक्ला अष्टमी से प्रारंभकर लगातार प्रत्येक मास की दो-दो अष्टमी ऐसे 16 अष्टमी तक यह व्रत करना चाहिए। अथवा खुली तिथि में कभी भी कर सकते हैं। व्रत की उत्तम विधि उपवास, मध्यम अल्पाहार और जघन्य में एक बार शुद्ध भोजन

करना एवं व्रत के दिन शांतिभक्ति का 16 बार या कम से कम एक बार पाठ करना है।

व्रत पूर्ण कर उद्यापन में शांतिविधान करना, भगवान शांतिनाथ की प्रतिमा प्रतिष्ठित कराना, शांति भक्ति का 16 दिन अखंड पाठ करना आदि, अपनी शक्ति के अनुसार 16-16 उपकरण मंदिर में भेंट करना आदि है। व्रत पूर्ण कर भगवान की चार कल्याणक भूमि हस्तिनापुर एवं निर्वाणभूमि सम्मेदशिखर की वंदना करना चाहिए।

व्रतों के मंत्र निम्न प्रकार हैं–

समुच्चय मंत्र–

ॐ ह्रीं जगदापद्विनाशनाय सर्वशांतिकराय श्रीशान्तिनाथाय नमः।

प्रत्येक 16 मंत्र–

1. **ॐ ह्रीं संसारदुःखभीतभव्यगणशरण्याय श्रीशांतिनाथाय नमः।**
2. **ॐ ह्रीं सर्वविघ्नशांतिकराय श्रीशांतिनाथाय नमः।**
3. **ॐ ह्रीं प्रणतजनकष्टनिवारकाय श्रीशांतिनाथाय नमः।**
4. **ॐ ह्रीं स्तोतृणां मृत्युंजयपदप्रदायकाय श्रीशांतिनाथाय नमः।**
5. **ॐ ह्रीं चरणाम्बुजस्तुतिकर्तृणां सर्वरोगविनाशकाय श्रीशांतिनाथाय नमः।**
6. **ॐ ह्रीं स्तवनप्रसादात् स्तोतृणां अचिन्त्यसारसौख्यप्रदायकाय श्रीशांतिनाथाय नमः।**
7. **ॐ ह्रीं चरणकमलाश्रितजनसर्वपापप्रणाशकाय श्रीशांतिनाथाय नमः।**
8. **ॐ ह्रीं स्वपादपद्माश्रयिशान्त्यर्थिभाक्तिकानां दृष्टिप्रसन्नविधायकाय श्रीशांतिनाथाय नमः।**
9. **ॐ ह्रीं शीलगुणव्रतसंयमपात्राय श्रीशांतिनाथाय नमः।**
10. **ॐ ह्रीं पंचमचक्रिषोडशतीर्थंकराय श्रीशांतिनाथाय नमः।**
11. **ॐ ह्रीं अशोकवृक्षाद्यष्टप्रातिहार्यसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय नमः।**

12.ॐ ह्रीं सर्वगणाय स्तुतिपाठकाय मह्यं च परमशांतिकराय श्रीशांतिनाथाय नमः।

13. ॐ ह्रीं शक्रादिभिः स्तुतपादपद्माय सततशान्तिकराय श्रीशांतिनाथाय नमः।

14.ॐ ह्रीं संपूजक-प्रतिपालक-यतीन्द्रगण-देश-राष्ट्र-पुर-नृपतिगण-शांतिकराय श्रीशांतिनाथाय नमः।

15. ॐ ह्रीं क्षेम-धार्मिकनृपति-समयसमयवृष्टिकारकाय व्याधिदुर्भिक्ष-चौरिमारिकष्टनिवारकाय सर्वसौख्यकरधर्मचक्रप्रवर्तकाय श्रीशांतिनाथाय नमः।

16. ॐ ह्रीं केवलज्ञानभास्कर-जगत् शांतिकारकवृषभादि तीर्थंकर-समन्विताय श्रीशांतिनाथाय नमः।

श्रद्धान ही सम्यक्त्व है

जं सक्कइ तं कीरइ जं च ण सक्केइ तं च सद्दहणं।
केवलिजिणेहि भणियं सद्दहमाणस्स सम्मत्तं।।

अर्थ– जिस कार्य को चारित्र या अनुष्ठान को करना शक्य है-किया जा सकता है उसे करना चाहिए और जिसको करना शक्य न हो उसका श्रद्धान करना चाहिए क्योंकि श्रद्धान करने वाले के सम्यक्त्व होता है ऐसा केवली भगवान ने कहा है।

(भगवान कुंदकुंद, दर्शनप्राभृत)

भगवान शांतिनाथ जिनपूजा

स्थापना –गीता छंद

हे शांतिजिन! तुम शांति के, दाता जगत् विख्यात हो।
इस हेतु मुनिगण आपके, पद में नमाते माथ को।।
निज आत्मसुखपीयूष को, आस्वादते वे आप में।
इस हेतु प्रभु आह्वान विधि से, पूजहूँ नत माथ मैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अष्टक –गीता छंद

चिरकाल से बहुप्यास लागी, नाथ! अब तक ना बुझी।
इस हेतु जल से तुम चरण युग, जजन की मनसा जगी।।
श्री शांतिनाथ जिनेश शाश्वत, शांति के दाता तुम्हीं।
प्रभु शांति ऐसी दीजिए, हो फिर कभी याञ्चा नहीं।।1।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

भवताप शीतल हेतु भगवन्! बहुत का शरणा लिया।
फिर भी न शीतलता मिली, अब गंध से पद पूजिया।।
श्री शांतिनाथ जिनेश शाश्वत, शांति के दाता तुम्हीं।
प्रभु शांति ऐसी दीजिए, हो फिर कभी याञ्चा नहीं।।2।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

बहुबार मैं जन्मा मरा, अब तक न पाया पार है।
अक्षय सुपद के हेतु अक्षत, से जजूँ तुम सार है।।

श्री शांतिनाथ जिनेश शाश्वत, शांति के दाता तुम्हीं।
प्रभु शांति ऐसी दीजिए, हो फिर कभी याञ्चा नहीं।।3।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

चंपा चमेली बकुल आदिक, पुष्प ले पूजा करूँ।
मनसिजविजेता तुम जजत, निज आत्मगुणपरिचय करूँ।।
श्री शांतिनाथ जिनेश शाश्वत, शांति के दाता तुम्हीं।
प्रभु शांति ऐसी दीजिए, हो फिर कभी याञ्चा नहीं।।4।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

यह भूख व्याधी पिंड लागी, किस विधी मैं छूटहूँ।
पकवान नानाविध लिये, इस हेतु ही तुम पूजहूँ।।
श्री शांतिनाथ जिनेश शाश्वत, शांति के दाता तुम्हीं।
प्रभु शांति ऐसी दीजिए, हो फिर कभी याञ्चा नहीं।।5।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय निर्वपामीति स्वाहा।

अज्ञानतम दृष्टी हरे, निज ज्ञान होने दे नहीं।
इस हेतु दीपक से जजूँ, मन में उजेला हो सही।।
श्री शांतिनाथ जिनेश शाश्वत, शांति के दाता तुम्हीं।
प्रभु शांति ऐसी दीजिए, हो फिर कभी याञ्चा नहीं।।6।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय निर्वपामीति स्वाहा।

ये कर्मबैरी संग लागे, एक क्षण ना छोड़ते।
वर धूप अग्नी संग खेते, दूर से मुख मोड़ते।।
श्री शांतिनाथ जिनेश शाश्वत, शांति के दाता तुम्हीं।
प्रभु शांति ऐसी दीजिए, हो फिर कभी याञ्चा नहीं।।7।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल मोक्ष की अभिलाष लागी, किस तरह अब पूर्ण हो।

इस हेतु फल से तुम जजूँ, सब विघ्न बैरी चूर्ण हों।।
श्री शांतिनाथ जिनेश शाश्वत, शांति के दाता तुम्हीं।
प्रभु शांति ऐसी दीजिए, हो फिर कभी याञ्चा नहीं।।8।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अनमोल रत्नत्रय निधी की, मैं करूँ अब याचना।
तुम अर्घ्य लेकर पूजते ही, पूर्ण होगी कामना।।
श्री शांतिनाथ जिनेश शाश्वत, शांति के दाता तुम्हीं।
प्रभु शांति ऐसी दीजिए, हो फिर कभी याञ्चा नहीं।।9।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा–

शांतिनाथ पदकंज में, चउसंघ शांती हेत।
शांतिधारा मैं करूँ, मिटे सकल भव खेद।।10।।

शांतये शांतिधारा।

लाल कमल नीले कमल, पुष्प सुगंधित सार।
जिनपद पुष्पांजलि करूँ, मिले सौख्य भंडार।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

पंचकल्याणक अर्घ्य

–रोला छंद–

भादों कृष्णा पाख, सप्तमि तिथि शुभ आई।
गर्भ बसे प्रभु आप, सब जन मन हरषाई।।
इन्द्र सुरासुर संघ, उत्सव करते भारी।
हम पूजें धर प्रीति, जिनवर पद सुखकारी।।1।।

ॐ ह्रीं भाद्रपदकृष्णासप्तम्यां श्रीशांतिनाथजिनगर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।

जन्म लिया प्रभु आप, ज्येष्ठवदी चौदस में।
सुरगिरि पर अभिषेक, किया सभी सुरपति ने।।
शांतिनाथ यह नाम, रखा शांतिकर जग में।
हम नावें निज माथ, जिनवर चरणकमल में।।2।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णाचतुर्दश्यां श्रीशांतिनाथजिनजन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीक्षा ली प्रभु आप, ज्येष्ठ वदी चौदस के।
लौकांतिक सुर आय, बहु स्तवन उचरते।।
इंद्र सपरिकर आय, तप कल्याणक करते।
हम पूजें नत माथ, सब दुख संकट हरते।।3।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णाचतुर्दश्यां श्रीशांतिनाथजिनदीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवलज्ञान विकास, पौष सुदी दशमी के।
समवसरण में नाथ, राजें अधर कमल पे।
इंद्र करें बहु भक्ति, बारह सभा बनी हैं।
सभी भव्य जन आय, सुनते दिव्य धुनी हैं।।4।।

ॐ ह्रीं पौषशुक्लादशम्यां श्रीशांतिनाथजिनकेवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्राप्त किया निर्वाण, ज्येष्ठ वदी चौदश में।
आत्यंतिक सुखशांति, प्राप्त किया उस क्षण में।।
महामहोत्सव इंद्र, करते बहुवैभव से।
हम पूजें तुम पाद, छुटें सभी भवदुःख से।।5।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णाचतुर्दश्यां श्रीशांतिनाथजिनमोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य - ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय नमः।

जयमाला

–दोहा–

हस्तिनागपुर में हुये, गर्भ जन्म तप ज्ञान।
सम्मेदाचल मोक्ष थल, गाऊँ प्रभु गुणगान।।1।।

–स्रग्विणी छंद–

मैं नमूँ मैं नमूँ शांति तीर्थेश को। नाथ मेरे हरो सर्व भवक्लेश को।।
पूरिये नाथ मेरी मनोकामना। फेर होवे न संसार में आवना।।2।।

विश्वसेन प्रिया मात ऐरावती। वर्ष इक लाख आयू कनक वर्ण ही।।
पूरिये नाथ मेरी मनोकामना। फेर होवे न संसार में आवना।।3।।

देह चालीस धनु चिन्ह मृग ख्यात है। जन्म हस्तिनापूरि विख्यात है।।
पूरिये नाथ मेरी मनोकामना। फेर होवे न संसार में आवना।।4।।

नाथ के समवसृति में सभा मध्य ये। साधु बासठ सहस मूलगुणधारि थे।।
पूरिये नाथ मेरी मनोकामना। फेर होवे न संसार में आवना।।5।।

चक्र आयुध प्रमुख गणपती श्रेष्ठ थे। ऋद्धि संयुक्त छत्तीस मुनिज्येष्ठ थे।।
पूरिये नाथ मेरी मनोकामना। फेर होवे न संसार में आवना।।6।।

आर्यिका हरीषेणा प्रधाना तथा। साठ हज्जार त्रय सौ सभीआर्यिका।।
पूरिये नाथ मेरी मनोकामना। फेर होवे न संसार में आवना।।7।।

दोय लक्षा सुश्रावक प्रभू भाक्तिका। चार लक्षा कहीं श्राविका सद्व्रता।।
पूरिये नाथ मेरी मनोकामना। फेर होवे न संसार में आवना।।8।।

सौख्य हेतू भटकता फिरा विश्व में। किंतु पाई न साता कहीं रंच मैं।।
पूरिये नाथ मेरी मनोकामना। फेर होवे न संसार में आवना।।9।।

नाथ ऐसी कृपा कीजिए भक्त पे। शुद्ध सम्यक्त्व की प्राप्ति होवे अहा
पूरिये नाथ मेरी मनोकामना। फेर होवे न संसार में आवना।।10।।

स्वात्म पर का मुझे भेद विज्ञान हो। पूर्ण चारित्र धारूँ जो निष्काम हो।।
पूरिये नाथ मेरी मनोकामना। फेर होवे न संसार में आवना।।11।।

पूर्ण शांती जहाँ पे वहीं वास हो। भक्त ये आपका आपके पास हो।।
पूरिये नाथ मेरी मनोकामना। फेर होवे न संसार में आवना।।12।।

–दोहा–

तीर्थंकर चक्री मदन, तीनों पद के ईश।
पूर्ण ''ज्ञानमति'' हेतु मैं, नमूँ नमूँ नतशीश।।13।।

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–दोहा–

शांतिनाथ की अर्चना, हरे सकल दुःख दोष।
सर्व अमंगल दूर कर, भरे स्वात्मसुखतोष।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

कार्यसिद्धि मंत्र

ॐ ह्रीं श्री ऋषभदेवाय सर्वसिद्धिकराय
सर्व सौख्यं कुरु कुरु ह्रीं नमः।

शांतिभक्ति

(हिन्दी पद्यानुवाद एवं मंत्र सहित)

न स्नेहाच्छरणं प्रयान्ति भगवन् ! पादद्वयं ते प्रजाः।
हेतुस्तत्र विचित्रदुःखनिचयः, संसारघोरार्णवः।।
अत्यन्तस्फुरदुग्ररश्मिनिकर-व्याकीर्णभूमण्डलो।
ग्रैष्मः कारयतीन्दुपादसलिल-च्छायानुरागं रविः।।1।।

भगवन्! सब जन तव पद युग की, शरण प्रेम से नहिं आते।
उसमें हेतु विविध दुःखों से, भरित घोर भववारिधि है।।
अति स्फुरित उग्र किरणों से, व्याप्त किया भूमंडल है।
ग्रीषम ऋतु रवि राग कराता, इन्दुकिरण छाया जल में।।1।।

ॐ ह्रीं संसारदुःखभीतभव्यगणशरण्याय श्रीशांतिनाथाय नमः।

क्रुद्धाशीविषदष्टदुर्जयविष-ज्वालावलीविक्रमो।
विद्याभेषजमन्त्रतोयहवने-र्याति प्रशांतिं यथा।।
तद्वत्ते चरणारुणांबुजयुग-स्तोत्रोन्मुखानां नृणाम्।
विघ्नाः कायविनायकाश्च सहसा, शाम्यन्त्यहो! विस्मयः।।2।।

कुद्धसर्प आशीविष डसने, से विषाग्नि युत मानव जो।
विद्या औषध मंत्रित जल, हवनादिक से विष शांति हो।।
वैसे तव चरणाम्बुज युग, स्तोत्र पढ़े जो मनुज अहो।
तनु नाशक सब विघ्न शीघ्र, अति शान्त हुए आश्चर्य अहो।।2।।

ॐ ह्रीं सर्वविघ्नशांतिकराय श्रीशांतिनाथाय नमः।

संतप्तोत्तमकांचन क्षितिधर-श्रीस्पर्द्धिगौरद्युते।
पुंसां त्वच्चरणप्रणामकरणात्, पीडाः प्रयान्ति क्षयं।।

उद्यद्भास्करविस्फुरत्करशत-व्याघातनिष्कासिता।
नानादेहिविलोचनद्युतिहरा, शीघ्रं यथा शर्वरी।।3।।
तपे श्रेष्ठ कनकाचल की, शोभा से अधिक कान्तियुत देव!
तव पद प्रणमन करते जो, पीड़ा उनकी क्षय हो स्वयमेव।।
उदित रवी की स्फुट किरणों से, ताड़ित हो झट निकल भगे।।
जैसे नाना प्राणी लोचन, द्युतिहर रात्री शीघ्र भगे।।3।।

ॐ ह्रीं प्रणतजनकष्टनिवारकाय श्रीशांतिनाथाय नमः।

त्रैलोक्येश्वरभंगलब्धविजया-दत्यन्तरौद्रात्मकान् ।
नानाजन्मशतान्तरेषु पुरतो, जीवस्य संसारिणः।।
को वा प्रस्खलतीह केन विधिना, कालोग्रदावानला-
न्नस्याच्चेत्तव पादपद्मयुगलस्तुत्यापगावारणम्।।4।।
त्रिभुवन जन सब जीत विजयि बन, अति रौद्रात्मक मृत्यूराज!
भव-भव में संसारी जन के, सन्मुख धावे अति विकराल।।
किस विध कौन बचे जन इससे, काल उग्र दावानल से।
यदि तव पाद कमल की स्तुति, नदी बुझावे नहीं उसे।।4।।

ॐ ह्रीं स्तोतृणां मृत्युंजयपदप्रदायकाय श्रीशांतिनाथाय नमः।

लोकालोकनिरन्तरप्रवितत-ज्ञानैकमूर्ते! विभो!
नानारत्नपिनद्धदंडरुचिर-श्वेतातपत्रतय!।।
त्वत्पादद्वयपूतगीतरवतः, शीघ्रं द्रवन्त्यामयाः।
दर्पाध्मातमृगेन्द्रभीमनिनदा-द्वन्या यथा कुञ्जराः।।5।।
लोकालोक निरन्तर व्यापी, ज्ञानमूर्तिमय शान्ति विभो।
नाना रत्न जटित दण्डे युत, रुचिर श्वेत छत्रत्रय है।।
तव चरणाम्बुज पूतगीत रव, से झट रोग पलायित हैं।
जैसे सिंह भयंकर गर्जन, सुन वन हस्ती भगते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं चरणाम्बुजस्तुतिकर्तृणां सर्वरोगविनाशकाय श्रीशांतिनाथाय नमः।

दिव्यस्त्रीनयनाभिराम! विपुल-श्रीमेरुचूडामणे!
भास्वद् बालदिवाकरद्युतिहर-प्राणीष्टभामंडल!।।
अव्याबाधमचिन्त्यसारमतुलं, त्यक्तोपमं शाश्वतं।
सौख्यं त्वच्चरणारविंदयुगल-स्तुत्यैव संप्राप्यते।।6।।
दिव्यस्त्रीदृगसुन्दर विपुला, श्रीमेरू के चूड़ामणि।
तव भामंडल बाल दिवाकर, द्युतिहर सबको इष्ट अति।।
अव्याबाध अचिंत्य अतुल, अनुपम शाश्वत जो सौख्य महान्।
तव चरणारविंदयुगलस्तुति, से ही हो वह प्राप्त निधान।।6।।

ॐ ह्रीं स्तवनप्रसादात् स्तोतृणां अचिन्त्यसारसौख्यप्रदायकाय श्रीशांतिनाथाय नमः।

यावन्नोदयते प्रभापरिकरः, श्रीभास्करो भासयं-
स्तावद्-धारयतीह पंकजवनं, निद्रातिभारश्रमम् ।।
यावत्त्वच्चरणद्वयस्य भगवन्-न स्यात्प्रसादोदय-
स्तावज्जीवनिकाय एष वहति, प्रायेण पापं महत्।।7।।
किरण प्रभायुत भास्कर भासित, करता उदित न हो जबतक।
पंकज वन नहिं खिलते निद्रा, भार धारते हैं तब तक।।
भगवन् ! तव चरणद्वय का हो, नहीं प्रसादोदय जब तक।
सभी जीवगण प्रायः करके, महत् पाप धारें तब तक।।7।।

ॐ ह्रीं चरणकमलाश्रितजनसर्वपापप्रणाशकाय श्रीशांतिनाथाय नमः।

शांतिं शान्तिजिनेन्द्र! शांतमनस-स्त्वत्पादपद्माश्रयात्।
संप्राप्ताः पृथिवीतलेषु बहवः, शांत्यर्थिनः प्राणिनः।।
कारुण्यान्मय भाक्तिकस्य च विभो! दृष्टिं प्रसन्नां कुरु।
त्वत्पादद्वयदैवतस्य गदतः, शांत्यष्टकं भक्तितः।।8।।
शान्ति जिनेश्वर! शान्तचित्त से, शान्त्यर्थी बहु प्राणीगण।
तव पादाम्बुज का आश्रय ले, शान्त हुए हैं पृथिवी पर।।

तव पदयुग की शान्त्यष्टकयुत, स्तुति करते भक्ती से।
मुझ भाक्तिक पर दृष्टि प्रसन्न, करो भगवन्! करुणा करके।।8।।

ॐ ह्रीं स्वपादपद्माश्रयिशान्त्यर्थिभाक्तिकानां दृष्टिप्रसन्नविधायकाय श्रीशांतिनाथाय नमः।

शांतिजिनं शशिनिर्मलवक्त्रं, शीलगुणव्रतसंयमपात्रम्।
अष्टशतार्चितलक्षणगात्रं, नौमि जिनोत्तममम्बुजनेत्रम्।।9।।

शशि सम निर्मल वस्त्र शांतिजिन, शीलगुण व्रत संयम पात्र।
नमूँ जिनोत्तम अंबुजदृग को, अष्टशतार्चित लक्षणगात्र।।9।।

ॐ ह्रीं शीलगुणव्रतसंयमपात्राय श्रीशांतिनाथाय नमः।

पंचममीप्सितचक्रधराणां, पूजितमिंद्र-नरेन्द्रगणैश्च।
शांतिकरं गणशांतिमभीप्सुः, षोडशतीर्थकरं प्रणमामि।।10।।

चक्रधरों में पंचमचक्री, इन्द्र नरेन्द्र वृंद पूजित।
गण की शांति चहूँ षोडश तीर्थंकर नमूँ शांतिकर नित।।10।।

ॐ ह्रीं पंचमचक्रिषोडशतीर्थंकराय श्रीशांतिनाथाय नमः।

दिव्यतरुः सुरपुष्पसुवृष्टि-र्दुन्दुभिरासनयोजनघोषौ।
आतपवारणचामरयुग्मे, यस्य विभाति च मंडलतेजः।।11।।

तरु अशोक सुरपुष्पवृष्टि, दुंदुभि दिव्यध्वनि सिंहासन।
चमर छत्र भामंडल ये अठ, प्रातिहार्य प्रभु के मनहर।।11।।

ॐ ह्रीं अशोकवृक्षाद्यष्टप्रातिहार्यसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय नमः।

तं जगदर्चितशांतिजिनेन्द्रं, शांतिकरं शिरसा प्रणमामि।
सर्वगणाय तु यच्छतु शांतिं, मह्यमरं पठते परमां च।।12।।

उन भुवनार्चित शांतिकरं, शिर से प्रणमूँ शांति प्रभु को।
शांति करो सब गण को मुझको, पढ़ने वालों को भी हो।।12।।

ॐ ह्रीं सर्वगणाय स्तुतिपाठकाय मह्यं च परमशांतिकराय श्रीशांतिनाथाय नमः।

येभ्यर्चिता मुकुटकुंडलहाररत्नैः।
शक्रादिभिः सुरगणैः स्तुतपादपद्माः।।
ते मे जिनाः प्रवरवंशजगत्प्रदीपाः।
तीर्थंकराः सततशांतिकरा भवंतु।।13।।

मुकुटहारकुंडल रत्नों युत, इन्द्रगणों से जो अर्चित।
इन्द्रादिक से सुरगण से भी, पादपद्म जिनके संस्तुत।।
प्रवरवंश में जन्में जग के, दीपक वे जिन तीर्थंकर।
मुझको सतत शांतिकर होवें, वे तीर्थेश्वर शांतीकर।।13।।

ॐ ह्रीं शक्रादिभिः स्तुतपादपद्माय सततशान्तिकराय श्रीशांतिनाथाय नमः।

संपूजकानां प्रतिपालकानां, यतीन्द्रसामान्यतपोधनानां।
देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः, करोतु शांतिं भगवान् जिनेन्द्रः।।14।।

संपूजक प्रतिपालक जन, यतिवर सामान्य तपोधन को।
देशराष्ट्र पुर नृप के हेतू, हे भगवन्! तुम शांति करो।।14।।

ॐ ह्रीं संपूजक-प्रतिपालक-यतीन्द्रगण-देश-राष्ट्र-पुर-नृपतिगणशांतिकराय श्रीशांतिनाथाय नमः।

क्षेमं सर्वप्रजानां, प्रभवतु बलवान्धार्मिको भूमिपालः।
काले काले च सम्यग्वर्षतु, मघवा व्याधयो यांतु नाशं।।
दुर्भिक्षं चौरिमारी क्षणमपि जगतां मा स्म भूज्जीवलोके।
जैनेन्द्रं धर्मचक्रं, प्रभवतु सततं, सर्वसौख्यप्रदायि।।15।।

सभी प्रजा में क्षेम नृपति, धार्मिक बलवान जगत् में हो।
समय-समय पर मेघवृष्टि हो, आधि व्याधि का भी क्षय हो।।
चौर मारि दुर्भिक्ष न क्षण भी, जग में जन पीड़ा कर हो।
नित ही सर्व सौख्यप्रद जिनवर, धर्मचक्र जयशील रहो।।15।।

ॐ ह्रीं क्षेम-धार्मिकनृपति-समयसमयवृष्टिकारकाय व्याधिदुर्भिक्षचौरिमारि-कष्टनिवारकाय सर्वसौख्यकरधर्मचक्रप्रवर्तकाय श्रीशांतिनाथाय नमः।

प्रध्वस्तघातिकर्माणः, केवलज्ञानभास्कराः।
कुर्वन्तु जगतां शांतिं, वृषभाद्या जिनेश्वराः।।16।।

घातिकर्म विध्वंसक जिनवर, केवलज्ञानमयी भास्कर।
करें जगत में शांति सदा, वृषभादि जिनेश्वर तीर्थंकर।।16।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञानभास्कर-जगत् शांतिकारकवृषभादि तीर्थंकर-समन्विताय श्रीशांतिनाथाय नमः।

अंचलिका

इच्छामि भंते! संतिभत्ति काउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं पंचमहाकल्लाणसंपण्णाणं, अट्ठमहापाडिहेरसहियाणं, चउतीसातिसयविसेससंजुत्ताणं, बत्तीसदेवेंदमणिमउडमत्थयमहियाणं, बलदेववासुदेवचक्कहररिसिमुणिजइअणगारोवगूढाणं, थुइसयसहस्सणिलयाणं उसहाइवीरपच्छिममंगलमहापुरिसाणं, णिच्चकालं अंचेमि, पूजेमि्रवंदामि, णमंसामि, दुक्खक्खओ कम्मक्खओ, बोहिलाहो, सुगइगमणं, समाहिमरणं, जिनगुणसंपत्ति होउ मज्झं।

हे भगवन्! श्री शांतिभक्ति का, कायोत्सर्ग किया उसके।
आलोचन करने की इच्छा, करना चाहूँ मैं रुचि से।।
अष्टमहा प्रातिहार्य सहित जो, पंचमहाकल्याणक युत।
चौतिस अतिशय विशेष युत, बत्तिस देवेन्द्र मुकुट चर्चित।।
हलधर वासुदेव प्रतिचक्री, ऋषि मुनि यति अनगार सहित।
लाखों स्तुति के निलय वृषभ से, वीर प्रभू तक महापुरुष।।
मंगल महापुरुष तीर्थंकर, उन सबको शुभ भक्ती से।
नित्यकाल मैं अर्चूं पूजूँ, वंदूँ नमूँ महामुद से।।
दुःखों का क्षय कर्मों का क्षय, हो मम बोधिलाभ होवे।
सुगति गमन हो समाधिमरणं, मम जिनगुण सम्पत्ति होवे।।

एकीभाव स्तोत्र व्रत एवं कथा

एकीभाव स्तोत्र के रचयिता श्री आचार्य वादिराज वि. की 11वीं शताब्दी के महान् विद्वान थे। वादिराज यह उनकी पदवी थी, नाम नहीं। जगत् प्रसिद्ध वादियों में उनकी गणना होने से वे वादिराज के नाम से प्रसिद्ध हुए। आपकी गणना जैन साहित्य के प्रमुख आचार्यों में की जाती है।

वादिराज स्वामी का चौलुक्य नरेश जयसिंह (प्रथम) की सभा में बड़ा सम्मान था। पूर्वकृत पापोदय से आचार्यश्री के शरीर में कुष्ट रोग हो गया। निस्पृही वीतरागी संत अपने आत्मध्यान में ही लीन रहते थे। शरीर की वेदना से उन्हें किसी प्रकार की चिंता नहीं थी किन्तु जिनधर्मद्वेषी एक दुष्ट स्वभावी विद्वान् ने राजसभा में मुनिश्री का घोर उपहास कर राजा से कहा–राजन्! तुम जैनधर्म की इतनी मान्यता करते हो, श्रेष्ठ कहकर उनके साधुओं का सम्मान करते हो पर यह नहीं जानते कि "जैन साधु कोढ़ी (कुष्ट-ग्रस्त)" होते हैं। राजश्रेष्ठी को यह उपहास सहन नहीं हुआ। उसने भक्तिवशात् राजा से कहा–राजन्! यह असत्य है, जैन मुनियों की काया तपाये स्वर्ण के समान सुन्दर और तेजोदीप्त होती है।

राजा ने निर्णय लिया कि प्रातः आचार्यश्री के दर्शनार्थ चला जाये। इधर राजश्रेष्ठी दौड़ता हुआ आचार्यश्री के चरणों में पहुँचा। उसने आचार्यश्री से अपनी करुण कथा कह सुनाई और कहा–प्रभो! अब जिनधर्म की रक्षा का प्रश्न है। आप जो उचित समझें करें, आचार्यश्री ने उन्हें आशीर्वाद दिया और आदिनाथ जी की भक्ति में लीन हो एकीभावस्तोत्र की रचना कर डाली। जिनभक्ति में लीन मुनिश्री जिनेन्द्र भक्ति का वर्णन करते हुए चौथे काव्य में लिखते हैं..... हे भगवन्! भव्य जीवों के पुण्योदय से स्वर्ग से माता के गर्भ में आने वाले आपके द्वारा छः माह पूर्व ही यह पृथ्वी कनकमयता को प्राप्त करा

दी गई थी। हे जिनेन्द्र! ध्यानरूपी द्वार से मेरे मनरूपी मंदिर में प्रविष्ट हुए आप कुष्ट रोग से पीड़ित मेरे इस शरीर को सुवर्णमय कर रहे हो, इसमें क्या आश्चर्य है! अथवा हे जिन! जो कोई आपके दर्शन करता है, वचनरूपी अमृत का भक्तिरूपी पात्र से पान करता है तथा कर्मरूपी मन से आप जैसे असाधारण आनन्द के धाम दुर्वार काम के मदहारी व प्रासाद की अद्वितीय भूमिरूप पुरुष में ध्यान द्वारा प्रवेश करता है, उसे क्रूराकार रोग और कंटक कैसे सता सकते हैं?

जिनभक्ति के प्रसाद से रातभर में ही उनका गलित कुष्ट ग्रस्त शरीर स्वर्णवत् चमकने लगा। प्रातः राजा राजश्रेष्ठी और जिनधर्मद्वेषी सभी आचार्यश्री के दर्शनार्थ चल दिये। उसी जंगल में आ पहुँचे, जहाँ मुनिश्री ध्यान में लीन थे। उनका तेज दूर तक फैल रहा था। चमकती देहकान्ति को देखते ही राजश्रेष्ठी आनन्दविभोर हो गया। राजा ने पूछा–श्रेष्ठी, क्या ये ही आपके गुरु हैं? सेठ जी ने कहा–जी! हाँ। राजा उनके पावन चरणों में नतमस्तक हुआ और द्वेषियों की ओर कोप भरी दृष्टि से देखने लगा। सबके मन थर-थर काँपने लगे। मुनिश्री ने कहा–राजन्! यह सत्य है कि मेरे शरीर में कुष्ट था, अभी भी मेरी कनिष्ठा अंगुली में इसका प्रभाव शेष है किन्तु "जैनधर्म के सभी साधु कोढ़ी होते हैं" इस आक्षेप को दूर कर जिनधर्म की प्रभावना के लिए मैंने भक्ति के प्रसाद से यह रोग एक रात में दूर कर दिया है अतः इन बेचारों की कोई गलती नहीं। राजा मुनिश्री के वचनों से ऐसा सुनकर जैन दर्शन से बहुत प्रभावित हुआ। राजा ने व जिनधर्म द्वेषियों ने आचार्यश्री से क्षमा प्रार्थना की और जिनधर्म को धारणकर सम्यग्दर्शन प्राप्त किया।

व्रतविधि–इस एकीभाव स्तोत्र में छब्बीस पद्य हैं, उन काव्यों के अनुसार छब्बीस (26) व्रत किये जाते हैं। उत्तम विधि उपवास, मध्यम अल्पाहार और जघन्य व्रत एकाशन करना है। इसमें तिथियाँ खुली हैं,

जब जो तिथि सुविधाजनक हो, उसी दिन व्रत करें। व्रत के दिन स्तोत्र पाठ करें। चौबीस तीर्थंकर भगवान की प्रतिमा का पंचामृत अभिषेक करके पूजा करें पुनः प्रत्येक मंत्र पृथक्-पृथक् हैं, उनमें से क्रम से एक-एक जाप्य करें।

समुच्चय मंत्र–**ॐ ह्रीं सर्वव्याधिविनाशनसमर्थाय श्रीतीर्थंकर-परमदेवाय नमः।**

प्रत्येक व्रत के पृथक्-पृथक् मंत्र–

1. ॐ ह्रीं एकीभावसदृशकर्मबंधनाशनसमर्थाय श्रीतीर्थंकर-परमदेवाय नमः।

2. ॐ ह्रीं हृदयस्थितपापान्धकारविनाशनसमर्थाय ज्योतीरूपाय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।

3. ॐ ह्रीं स्तोत्रमंत्रप्रभावेनदेहस्थविषमव्याधिनिष्कासनसमर्थाय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।

4. ॐ ह्रीं गर्भावतारप्राक्पृथ्वीकनकमयकरणसमानभाक्तिकतनु-सुवर्णीकरणसमर्थाय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।

5. ॐ ह्रीं भक्तजनहृदयस्थिततत्सर्वक्लेशविनाशनसमर्थाय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।

6. ॐ ह्रीं त्वन्नयकथापीयूषवापीमध्यनिर्मग्नभाक्तिकदुःखदावोप-तापशांतकरणसमर्थाय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।

7. ॐ ह्रीं पादन्यासस्थलस्वर्णकमलमिवत्वत्स्पृशन्ममभक्तस्य-सर्वश्रेयःप्रदायकाय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।

8. ॐ ह्रीं भक्तिपात्र्यात्वद्वचनामृतपिबन्भाक्तिक दुर्वाररोगनिवारण-समर्थाय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।

9. ॐ ह्रीं मानस्तम्भसदृश-त्वत्समीपत्वप्राप्तभाक्तिकजनमान-रोगहरणसमर्थाय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।

10. ॐ ह्रीं त्वन्मूर्तिस्पर्शितवायुना निरवधिरोगधूलिधुन्वन्समर्थाय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।

11. ॐ ह्रीं भाक्तिकजनभव-भवदुःखनिवारणसमर्थपरमदयालु-सर्वेशाय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।

12. ॐ ह्रीं मणिजयमालिकया त्वन्नमस्कारमंत्रजपद्भाक्तिकगण-स्वर्गलक्ष्मीप्रभुत्वकरणसमर्थाय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।

13. ॐ ह्रीं अनवधिस्-त्वदुत्कृष्टभक्तिकुञ्चिकानिमित्तेनमुक्ति-द्वारोद्घाटनकारणसमर्थाय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।

14. ॐ ह्रीं भवद्भारतीरत्नदीपेन मुक्तिपथावलोकनसामर्थ्य-प्रदायकाय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।

15. ॐ ह्रीं कर्मक्षोणीपिहितात्मज्योतीनिधिप्रदायकाय श्रीतीर्थंकर-परमदेवाय नमः।

16. ॐ ह्रीं त्वद्भक्तिगंगामध्यावगाहकभक्तगणसर्वकल्मष-क्षालनसमर्थाय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।

17. ॐ ह्रीं त्वद्ध्यायन्भाक्तिकस्य सोऽहमितिमतिप्रदायकाय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।

18. ॐ ह्रीं सप्तभंगीतरंगयुत-त्वद्वाक्समुद्रमंथनोद्भवपरमामृत-प्रापकाय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।

19. ॐ ह्रीं शस्त्रवसनभूषाविरहितपरमसुंदरस्वरूपाय श्रीतीर्थंकर-परमदेवाय नमः।

20. ॐ ह्रीं भवसमुद्रपारंगतसिद्धिकान्तापतित्रैलोक्यप्रभु-स्तुतिश्लाघनाय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।

21. ॐ ह्रीं भक्तिपीयूषपुष्टभव्यगणाभिमतफलप्रदपारिजाताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।

22. ॐ ह्रीं कोपप्रसादविरहितपरमोपेक्षि-भुवनतिलकप्राभवसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।

23. ॐ ह्रीं सकलतत्त्वग्रन्थस्मरणविषयिबुद्धिप्रदायकाय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।

24. ॐ ह्रीं अनंतसुखज्ञानदृग्वीर्यरूपाय भाक्तिकजनपञ्चकल्याण-प्रदायकाय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।

25. ॐ ह्रीं स्वात्माधीनसुखेच्छुकजनकल्याणकल्पद्रुमाय श्रीतीर्थंकर-परमदेवाय नमः।

26. ॐ ह्रीं शाब्दिक-तार्किक-काव्यकृत-भव्यगणोत्कृष्टश्रीवादिराज सूरिकृतएकीभावस्तोत्रस्वामिने श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।

यह व्रत सर्व प्रकार के रोगों को शांत करके शरीर को आरोग्य प्रदान करने वाला है और परम्परा से आत्मा को स्वस्थ- शुद्ध करके अतीन्द्रिय मोक्षसुख प्राप्त कराने वाला है। साथ ही संसार के भी उत्तम-उत्तम सुखों को देने वाला है।

गिरनारक्षेत्र सुरक्षामंत्र

ॐ ह्रीं सर्वाण्ह यक्ष-कूष्माण्डी यक्षी सहिताय श्री नेमिनाथाय नमः।

चौबीस तीर्थंकर पूजा

–अथ स्थापना-शंभु छंद –

पुरुदेव आदि चौबिस तीर्थंकर, धर्मतीर्थ करतार हुये।
इस जम्बूद्वीप में भरतक्षेत्र, के आर्यखंड में नाथ हुये।।
इन मुक्तिवधू परमेश्वर का, हम भक्ती से आह्वान करें।
इनके चरणाम्बुज को जजते, भव भव दुःखों की हानि करें।।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभदेवादिचतुर्विंशतितीर्थंकरसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभदेवादिचतुर्विंशतितीर्थंकरसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभदेवादिचतुर्विंशतितीर्थंकरसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथ अष्टक-गीता छंद –

हे नाथ! मेरी ज्ञानसरिता, पूर्ण भर दीजे अबे।
इस हेतु जल से आप के, पदकमल को पूजूँ अबे।।
चौबीस तीर्थंकर जिनेश्वर, की करूँ मैं अर्चना।
इन पूजते जिनसौख्य पाऊँ, करूँ यम की तर्जना।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभदेवादिचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

निज आत्म में सम्पूर्ण शीतल, सलिल धारा पूरिये।
तुम चरण युगल सरोज में, चंदन चढ़ाऊँ इसलिए।।

चौबीस तीर्थंकर जिनेश्वर, की करूँ मैं अर्चना।
इन पूजते जिनसौख्य पाऊँ, करूँ यम की तर्जना।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभदेवादिचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय अखंडित सौख्य निधि, भंडार भर दीजे प्रभो।
इस हेतु अक्षत पुंज से, मैं पूजहूँ तुम पद विभो।।
चौबीस तीर्थंकर जिनेश्वर, की करूँ मैं अर्चना।
इन पूजते जिनसौख्य पाऊँ, करूँ यम की तर्जना।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभदेवादिचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

मुझ आत्मगुण सौगंध्य सागर, पूर्ण भर दीजे प्रभो।
इस हेतु मैं सुरभित सुमन ले, पूजहूँ तुम पद विभो।।
चौबीस तीर्थंकर जिनेश्वर, की करूँ मैं अर्चना।
इन पूजते जिनसौख्य पाऊँ, करूँ यम की तर्जना।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभदेवादिचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मेरी करो परिपूर्ण तृप्ती, आत्म सुख पीयूष से।
भगवन्! अतः नैवेद्य से, पूजूँ चरण युग भक्ति से।।
चौबीस तीर्थंकर जिनेश्वर, की करूँ मैं अर्चना।
इन पूजते जिनसौख्य पाऊँ, करूँ यम की तर्जना।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभदेवादिचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु ज्ञान ज्योती मुझ हृदय में, पूर्ण भर दीजे अबे।
मैं आरती रुचि से करूँ, अज्ञानतम तुरतहिं भगे।।

चौबीस तीर्थंकर जिनेश्वर, की करूँ मैं अर्चना।
इन पूजते जिनसौख्य पाऊँ, करूँ यम की तर्जना।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभदेवादिचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

मुझ आत्मयश सौरभ गगन में, व्याप्त कर दीजे प्रभो।
इस हेतु खेऊँ धूप मैं, कटुकर्म भस्म करो विभो।।
चौबीस तीर्थंकर जिनेश्वर, की करूँ मैं अर्चना।
इन पूजते जिनसौख्य पाऊँ, करूँ यम की तर्जना।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभदेवादिचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

निज आत्मगुण संपत्ति को, अब पूर्ण भर दीजे प्रभो।
इस हेतु फल को मैं चढ़ाऊँ, आपके सन्निध विभो।।
चौबीस तीर्थंकर जिनेश्वर, की करूँ मैं अर्चना।
इन पूजते जिनसौख्य पाऊँ, करूँ यम की तर्जना।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभदेवादिचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अनमोल गुण निज के अनंते, किस विधी से पूर्ण हों।
बस अर्घ्य अर्पण करत ही, सब विघ्न वैरी चूर्ण हों।।
चौबीस तीर्थंकर जिनेश्वर, की करूँ मैं अर्चना।
इन पूजते जिनसौख्य पाऊँ, करूँ यम की तर्जना।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभदेवादिचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा – **तीर्थंकर चरणाब्ज में, धारा तीन करंत।**
त्रिभुवन में भी शांति हो, निजगुण मणि विलसंत।।10।।

शांतये शांतिधारा।

जिनवर चरण सरोज में, सुरभित कुसुम धरंत।
सुख संतति संपति बढ़े, आत्म सौख्य विलसंत।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य – **ॐ ह्रीं वृषभादिवर्धमानान्तेभ्यो नमः।**

जयमाला

–चौबोल छंद –

आवो हम सब करें वंदना, चौबीसों भगवान की।
तीर्थंकर बन तीर्थ चलाया, उन अनंत गुणवान की।।
जय जय जिनवरं-4
आदिनाथ युग आदि तीर्थंकर, अजितनाथ कर्मारि हना।
संभवजिन भव दुःख के हर्ता, अभिनंदन आनंद घना।।
सुमतिनाथ सद्बुद्धि प्रदाता, पद्मप्रभु शिवलक्ष्मी दें।
श्री सुपार्श्व यम पाश विनाशा, चन्द्रप्रभू निज रश्मी दें।।
केवलज्ञान सूर्य बन चमके, त्रिभुवन तिलक महान् की।। तीर्थं.।।1।।
जय जय जिनवरं-4
पुष्पदंत भव अंत किया है, शीतल प्रभु के वच शीतल।
श्री श्रेयांस जगत हित कर्ता, वासुपूज्य छवि लाल कमल।।
विमलनाथ ने अघ मल धोया, जिन अनंत गुण अन्तातीत।
धर्मनाथ वृषतीर्थ चलाया, शांतिनाथ शांतिप्रद ईश।।
शांतीच्छुक जन शरण आ रहे, ऐसे करुणावान की।।तीर्थं.।।2।।
जय जय जिनवरं-4
कुंथुनाथ करुणा के सागर, अर जिन मोह अरी नाशा।
मल्लिनाथ यममल्ल विजेता, मुनिसुव्रत व्रत के दाता।।
नमिप्रभु नियम रत्नत्रय धारी, नेमिनाथ शिवतिय परणा।
पार्श्वनाथ उपसर्ग विजेता, महावीर भविजन शरणा।।
इनने शिव की राह दिखाई, जन-जन के कल्याण की।।तीर्थं.।।3।।
जय जय जिनवरं-4

तीर्थंकर के जन्म समय से, दश अतिशय श्रुत में गाये।
केवलज्ञान प्रगट होते ही, दश अतिशय गणधर गायें।।
देवोंकृत चौदह अतिशय हों, सुंदर समवसरण रचना।
इन्द्र-इन्द्राणी देव-देवियाँ, गाते रहते गुण गरिमा।।
सभी भव्य गुण कीर्तन करते, अभयंकर जिननाम की।।तीर्थं.।।4।।
जय जय जिनवरं-4

तरु अशोक सुरपुष्पवृष्टि, भामंडल चामर सिंहासन।
तीन छत्र सुरदुंदुभि बाजे, दिव्यध्वनी है अमृतसम।।
आठ महा ये प्रातिहार्य हैं, गंधकुटी में प्रभु शोभें।
विभव वहाँ का सुर नर पशु क्या, मुनियों का भी मन लोभे।।
गणधर गुरु भी संस्तुति करते, अविनश्वर भगवान की।।तीर्थं.।।5।।
जय जय जिनवरं-4

दर्शन ज्ञान सौख्य वीरज ये, चार अनंत चतुष्टय हैं।
ये छ्यालिस गुण अर्हंतों के, फिर भी गुणरत्नाकर हैं।।
क्षुधा तृषादिक दोष अठारह, प्रभु के कभी नहीं होते।
वीतराग सर्वज्ञ तीर्थंकर, हित उपदेशी ही होते।।
परम पिता परमेश्वर स्वामिन्! पूजा कृपानिधान की।।तीर्थं.।।6।।
जय जय जिनवरं-4

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवर्धमानान्त्यचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–सोरठा–

धर्मचक्र के नाथ, द्विविध धर्मकर्ता प्रभो।
नमूँ नमाकर माथ, ''ज्ञानमती'' कलिका खिले।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

श्रीमद्वादिराजसूरिकृत
एकीभाव स्तोत्र
(टीकाद्वय-संयुक्तम्)

इस स्तोत्र को जो लगातार एक माह तक प्रतिदिन दिन में तीन बार पढ़ेंगे, वे निश्चित ही आरोग्य लाभ प्राप्त करेंगे, श्वांस, कास, कुष्ठ आदि भयंकर से भयंकर रोग शांत होंगे।

इसकी विधि–जिस माह स्तोत्र पाठ करना है, रात्रि में चतुर्विध भोजन का त्याग करें। नित्य देवदर्शन व पूजा करें तथा शुद्ध वस्त्र पहनकर स्तोत्र पाठ करें–

एकीभावं गत इव मया यः स्वयं कर्म-बन्धो
घोरं दुःखं भव-भव-गतो दुर्निवारः करोति।
तस्याप्यस्य त्वयि जिन-रवे! भक्तिरुन्मुक्तये चेज्-
जेतुं शक्यो भवति न तया कोऽपरस्तापहेतुः।।1।।

वादिराज मुनिराज के, चरण कमल चित लाय।
भाषा एकीभाव की, करूँ स्वपर सुखदाय।।

जो अति एकीभाव भयो मानो अनिवारी।
सो मुझ कर्म प्रबंध करत भव भव दुख भारी।।
ताहि तिहारी भक्ति जगतरवि जो निरवारै।
जो अब और कलेश कौन सो नांहि विदारे।।1।।

ॐ ह्रीं एकीभावसदृशकर्मबंधनाशनसमर्थाय श्रीतीर्थंकर-परमदेवाय नमः।

ज्योतीरूपं दुरित-निवहध्वान्त-विध्वंस-हेतुं
त्वामेवाहुर्जिनवर! चिरं तत्त्व-विद्याभियुक्ताः।
चेतोवासे भवसि च मम स्फार-मुद्भासमान-
स्तस्मिन्नंहः कथमिव तमो वस्तुतो वस्तुमीष्टे।।2।।

तुम जिन ज्योतिस्वरूप, दुरित अंधियार निवारी।
सो गणेश गुरु कहै, तत्त्व विद्या-धन धारी।।
मेरे चित-घरमाँहि, बसौ तेजोमय यावत।
पापतिमिर अवकाश, तहाँ सो क्यों कर पावत।।2।।

ॐ ह्रीं हृदयस्थितपापान्धकारविनाशनसमर्थाय ज्योतीरूपाय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।

आनन्दाश्रु-स्नपित-वदनं गद्गदं चाभिजल्पन्
यश्चायेत त्वयि दृढ-मनाः स्तोत्र-मन्त्रैर्भवन्तम्।
तस्याभ्यस्तादपि च सुचिरं देह-वल्मीक-मध्यान्-
निष्कास्यन्ते विविध-विषम-व्याधयः काद्रवेयाः।।3।।

आनंद आँसु वदन धोय तुमसों चित सानै,
गद्गद सुरसो सुयशमंत्र पढ़ि पूजा ठानै।
ताके बहुविधि व्याधि व्याल चिरकालनिवासी,
भाजें थानक छोड़ देह-वाँबई के वासी।।3।।

ॐ ह्रीं स्तोत्रमंत्रप्रभावेनदेहस्थविषमव्याधिनिष्कासनसमर्थाय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।

प्रागेवेह त्रिदिव-भवनादेष्यता भव्यपुण्यात्
पृथ्वी-चक्रं कनकमयतां देव! निन्ये त्वयेदम्।
ध्यान-द्वारं मम रुचिकरं स्वान्त-गेहं प्रविष्ट-
स्तत्किं चित्रं जिन! वपुरिदं यत्सुवर्णीकरोषि।।4।।

दिवितैं आवनहार भये भविभाग उदयबल,
पहले ही सुरआय कनकमय कीय महीतल।
मनगृहध्यानदुवार आय निवसो जगनामी,
जो सुवरन तन करो कौन यह अचरज स्वामी।।4।।

ॐ ह्रीं गर्भावतारप्राक्पृथ्वीकनकमयकरणसमानभात्तिक-तनुसुवर्णी-करणसमर्थाय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।

लोकस्यैकस्त्वमसि भगवन्निर्निमित्तेन बन्धु–
स्त्वय्येवासौ सकल-विषया शक्तिरप्रत्यनीका।
भक्ति-स्फीतां चिरमधिवसन्मामिकां चित्त-शय्यां
मय्युत्पन्नं कथमिव ततः क्लेश-यूथं सहेथाः।।5।।

प्रभु सब जग के बिना हेत, बाँधव उपकारी,
निरावरण सर्वज्ञ शक्ति जिनराज तिहारी।
भक्ति रचित ममचित्त सेज नितवास करोगे,
मेरे दुख-संताप देख किम धीर धरोगे।।5।।

ॐ ह्रीं भक्तजनहृदयस्थिततत्सर्वक्लेशविनाशनसमर्थाय श्रीतीर्थंकर-परमदेवाय नमः।

जन्माटव्यां कथमपि मया देव! दीर्घं भ्रमित्वा,
प्राप्तैवेयं तव नय-कथा स्फार-पीयूष-वापी।
तस्या मध्ये हिमकर-हिम-व्यूह-शीते नितान्तं,
निर्मग्नं मां न जहति कथं दुःख-दावोपतापाः।।6।।

भव वन में चिरकाल भ्रम्यो कछु कहिय न जाई,
तुम थुति कथा पियूष वापिका भागन पाई।
शशितुषार धनसार हार शीतल कहिं जासम
करत न्हौन तामांहि क्यों न भवताप बुझै मम।।6।।

ॐ ह्रीं त्वन्नयकथापीयूषवापीमध्यनिर्मग्नभात्तिक-दुःखदावोपतापशांत-करणसमर्थाय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।

पाद-न्यासादपि च पुनतो यात्रया ते त्रिलोकीं
हेमाभासो भवति सुरभिः श्रीनिवासश्च पद्मः।
सर्वाङ्गेण स्पृशति भगवंस्त्वय्यशेषं मनो मे
श्रेयः किं तत्स्वयमहरहर्यन्न मामभ्युपैति।।7।।

श्री विहार परिवाह होत शुचिरूप सकल जग।
कमल कनक आभाव सुरभि श्रीवास धरत पग।।
मेरी मन सर्वंग परस प्रभु को सुख पावे।
अवसो कौन कल्यान जोन दिन दिन ढिग आवै।।7।।

ॐ ह्रीं पादन्यासस्थलस्वर्णकमलमिवत्वत्स्पृशन्ममभक्तस्य-सर्वश्रेयः-प्रदायकाय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।

पश्यन्तं त्वद्वचनममृतं भक्ति-पात्र्या पिबन्तं
कर्मारण्यात्पुरुषमसमानन्द-धाम-प्रविष्टम्।
त्वां दुर्वार-स्मर-मद-हरं त्वत्प्रसादैक-भूमिं
क्रूराकाराः कथमिव रुजा कण्टका निर्लुठन्ति।।8।।

भवतज सुखपद बसे काममद सुभट संहारे।
जो तुमको निरखंत सदा प्रियदास तिहारे।।
तुम वचनामृतपान भक्ति अंजुलिसों पीबै।
तिन्हें भयानक क्रूररोगरिपु कैसे छीवै।।8।।

ॐ ह्रीं भक्तिपात्र्यात्वद्वचनामृतपिबन्भाक्तिक दुर्वाररोगनिवारण-समर्थाय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।

पाषाणात्मा तदितरसमः केवलं रत्न-मूर्ति-
र्मानस्तम्भो भवति च परस्तादृशो रत्न-वर्गः।
दृष्टिं प्राप्तो हरति स कथं मान-रोगं नराणां
प्रत्यासत्तिर्यदि न भवतस्तस्य तच्छक्ति-हेतुः।।9।।

मानथंभ पाषान आन पाषान पटंतर।
ऐसे और अनेक रतन दीखैं जग अंतर।।
देखत दृष्टि प्रमान मान मद तुरत मिटावै।
जो तुम निकट न होय शक्ति यह क्योंकर आवै।।9।।

ॐ ह्रीं मानस्तम्भसदृश-त्वत्समीपत्वप्राप्तभाक्तिकजनमानरोगहरण-समर्थाय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।

ह्रद्यः प्राप्तो मरुदपि भवन्मूर्ति-शैलोपवाही
सद्यः पुंसां निरवधि-रुजा धूलिबन्धं धुनोति।
ध्यानाहूतो ह्रदय-कमलं यस्य तु त्वं प्रविष्ट-
स्तस्याशक्यः क इह भुवने देव! लोकोपकारः।।10।।

प्रभुतन पर्वतपरस पवन उर में निवहै है।
तासों ततछिन सकल रोगरज बाहिर ह्वै है।।
जाके ध्यानाहूत बसो उर अंबुज माहीं।
कौन जगत उपकार करन समरथ सो नाहीं।।10।।

ॐ ह्रीं त्वन्मूर्तिस्पर्शितवायुना निरवधिरोगधूलिधुन्वन्समर्थाय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।

जानासि त्वं मम भवे-भवे यच्च यादृक्च दुःखं
जातं यस्य स्मरणमपि मे शस्त्रवन्निष्पिनष्टि।
त्वं सर्वेशः सकृप इति च त्वामुपेतोऽस्मि भक्त्या
यत्कर्तव्यं तदिह विषये देव! एव प्रमाणम्।।11।।

जनम जनम के दुःख सहे सब ते तुम जानो।
याद किये मुझ हिये लगैं आयुध से मानों।।
तुम दयाल जग पाल स्वामि मैं शरण गही है।
जो कुछ करनी होय करो परमान वही है।।11।।

ॐ ह्रीं भाक्तिकजनभव-भवदुःखनिवारणसमर्थपरमदयालुसर्वेशाय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।

प्रापद्दैवं तव नुति-पदैर्जीवकेनोपदिष्टैः
पापाचारी मरण-समये सारमेयोऽपि सौख्यम्।
कः सन्देहो यदुपलभते वासव-श्री-प्रभुत्वं
जल्पज्जाप्यैर्मणिभिरमलैस्त्वन्नमस्कार-चक्रम्।।12।।

मरण समय तुम नाम मंत्र जीवकतैं पायो।
पापाचारी श्वान प्रान तज अमर कहायो।।
जो मणिमाला लेय जपै तुम नाम निरंतर।
इन्द्र सम्पदा लहै कौन संशय इस अन्तर।।12।।

ॐ ह्रीं मणिजयमालिकयात्वन्नमस्कारमंत्रजपद्भाक्तिकगणस्वर्ग-लक्ष्मीप्रभुत्वकरणसमर्थाय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।

शुद्धे ज्ञाने शुचिनि चरिते सत्यपि त्वय्यनीचा
भक्तिर्नो चेदनवधि-सुखावञ्चिका कुञ्चिकेयम्।
शक्योद्घाटं भवति हि कथं मुक्ति-कामस्य पुंसो
मुक्ति-द्वारं परिदृढ-महामोह-मुद्रा-कवाटम्।।13।।

जो नर निर्मल ज्ञान मान शुचि चारित साधै।
अनवधि सुख की सार भक्ति कूँची नहिं लाधै।।
सो शिव वाँछक पुरुष मोक्षपट केम उघारै।
मोह मुहर दिढ़ करी मोक्ष मंदिर के द्वारै।।13।।

ॐ ह्रीं अनवधिस्त्वदुत्कृष्टभक्तिकुञ्चिकानिमित्तेनमुक्तिद्वारोद्घाटन-कारणसमर्थाय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।

प्रच्छन्नः खल्वयमघमयैरन्धकारैः समन्तात्
पन्था मुक्तेः स्थपुटित-पदः क्लेश-गर्तैरगाधैः।
तस्कस्तेन व्रजति सुखतो देव! तत्त्वावभासी
यद्यग्रेऽग्रे न भवति भवद्भारती रत्न-दीपः।।14।।

शिवपुर केरो पंथ पापतमसों अति छायो।
दुखसरूप बहू कूप खांडसों बिकट बतायो।।
स्वामी सुखसों तहाँ कौन जन मारक लागैं।
प्रभु-प्रवचन मणि दीप जोत के आगैं आगैं।।14।।

ॐ ह्रीं भवद्भारतीरत्नदीपेन मुक्तिपथावलोकनसामर्थ्यप्रदायकाय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।

आत्म-ज्योतिर्निधि-रनवधि-र्द्रैष्टुरानन्द-हेतुः
कर्म-क्षोणी-पटल-पिहितो योऽनवाप्यः परेषाम्।
हस्ते कुर्वन्त्यनतिचिरतस्तं भवद्भक्तिभाजः
स्तोत्रैर्बंध-प्रकृति-परुषोद्दाम-धात्री-खनित्रैः।।15।।

कर्म पटल भूमाँहि दबी आतमनिधि भारी।
देखत अति सुख होय विमुखजन नाँहि उघारी।।
तुम सेवक तत्काल ताहि निहचै कर धारै।
थुति कुदालसों खोद बंधभू कठिन विदारै।।15।।

ॐ ह्रीं कर्मक्षोणीपिहितात्मज्योतीनिधिप्रदायकाय श्रीतीर्थंकर-परमदेवाय नमः।

प्रत्युत्पन्ना नय-हिमगिरे-रायता चामृताब्धे-
र्या देव! त्वत्पद-कमलयोः संगता भक्ति-गङ्गा
चेतस्तस्यां मम रुचि-वशादाप्लुतं क्षालितांहः
कल्माषं यद्भवति किमियं देव! सन्देह-भूमिः।।16।।

स्याद्वाद गिरि उपज मोक्ष सागर लों धाई।
तुम चरणाम्बुज परस भक्ति गंगा सुखदाई।।
मोचित निर्मल थयो न्होन रुचि पू ख तामैं।
सो वह हो न मलीन कौन जिन संशय यामैं।।16।।

ॐ ह्रीं त्वद्भक्तिगंगामध्यावगाहकभक्तगणसर्वकल्मषक्षालनसमर्थाय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।

प्रादुर्भूत-स्थिर-पद-सुखं त्वामनुध्यायतो मे
त्वय्येवाहं स इति मतिरुत्पद्यते निर्विकल्पा।
मिथ्यैवेयं तदपि तनुते तृप्ति-मभ्रेषरूपां
दोषात्मानोऽप्यभिमत-फलास्त्वत्प्रसादाद् भवन्ति।।17।।

तुम शिवसुखमय प्रगट करत प्रभुचिंतन तेरो।
मैं भगवान समान भाव यों वरतै मेरो।।
यदपि झूठ है तदपि तृप्ति निश्चल उपजावै।
तुम प्रसाद सकलंक जीव वांछित फल पावै।।17।।

ॐ ह्रीं त्वद्ध्यायन्भाक्तिकस्य सोऽहमितिमतिप्रदायकाय श्रीतीर्थंकर-परमदेवाय नमः।

मिथ्यावादं मल-मपनुदन्सप्तभङ्गी-तरङ्गै-
वर्गाम्भोधि-र्भुवन-मखिलं देव! पर्येति यस्ते।
तस्यावृत्तिं सपदि विबुधाश-चेतसैवाचलेन
व्यातन्वन्तः सुचिर-ममृतासेवया तृप्नुवन्ति।।18।।

वचन जलधि तुम देव सकल त्रिभुवन में व्यापै।
भंग तरंगिनि विकथ वाद मल मलिन उथापै।।
मन सुमेरु सों मथे ताहि जे सम्यग्ज्ञानी।
परमामृत सों तृषित होंहि ते चिरलों प्रानी।।18।।

ॐ ह्रीं सप्तभंगीतरंगयुत-त्वद्वाक्समुद्रमंथनोद्भवपरमामृतप्रापकाय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।

आहार्येभ्यः स्पृहयति परं यः स्वभावादहृद्यः,
शस्त्र-ग्राही भवति सततं वैरिणा यश्च शक्यः।
सर्वाङ्गेषु त्वमसि सुभगस्त्वं न शक्यः परेषां
तत्किं भूषा-वसन-कुसुमैः किं च शस्त्रैरुदस्त्रैः।।19।।

जो कुदेव छवि होन वसन भूषण अभिलाखैं।
बैरी सों भयभीत होय सो आयुध राखैं।।
तुम सुन्दर सर्वांग शत्रु समरथ नहिं कोई।
भूषण वसन गदादि ग्रहण काहे को होहि।।19।।

ॐ ह्रीं शस्त्रवसनभूषाविरहितपरमसुंदरस्वरूपाय श्रीतीर्थंकर-परमदेवाय नमः।

इन्द्रः सेवां तव सुकुरुतां किं तया श्लाघनं ते
तस्यैवेयं भव-लय-करी श्लाघ्यता-मातनोति।
त्वं निस्तारी जनन-जलधेः सिद्धि-कान्ता-पतिस्त्वं
त्वं लोकानां प्रभुरिति तव श्लाघ्यते स्तोत्रमित्थम्।।20।।

सुरपति सेवा करै कहा प्रभु प्रभुता तेरी।
सो सलाघनाल है मिटै जगसौं जग फेरी।।
तुम भवजलधि जिहाज तोहि शिवकंत उचरिए।
तुही जगत जन पाल नाथ थुति की थुति करिए।।20।।

ॐ ह्रीं भवसमुद्रपारंगतसिद्धिकान्तापतित्रैलोक्यप्रभुस्तुतिश्लाघनाय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।

वृत्तिर्वाचामपर-सदृशी न त्वमन्येन तुल्यः
स्तुत्युद्गाराः कथमिव ततस्त्वय्यमी नः क्रमन्ते।
मैवं भूवंस्तदपि भगवन्! भक्ति-पीयूष-पुष्टा-
स्ते भव्यानामभिमत-फलाः पारिजाता भवन्ति।।21।।

वचन डाल जड़रूप आप चिन्मूरति झांई।
तातें थुति आलाप नाहि पहुँचे तुम तांई।।
तो भी निष्फल नाँहि भक्तिरस भीने वायक।
संतन को सुरतरु समान वांछित वर दायक।।21।।

ॐ ह्रीं भक्तिपीयूषपुष्टभव्यगणाभिमतफलप्रदपारिजाताय श्रीतीर्थंकर-परमदेवाय नमः।

कोपावेशो न तव न तव क्वापि देव! प्रसादो
व्याप्तं चेतस्तव हि परमोपेक्षयै-वानपेक्षम्।
आज्ञावश्यं तदपि भुवनं सन्निधि-वैर-हारी,
क्वैवं भूतं भुवन-तिलकं प्राभवं त्वत्परेषु।।22।।

कोम कभी नहीं करो प्रीति कबहूँ नहिं धारी।
अति उदास वेचाह चित्त जिनराज तिहारो।।
तदपि जान जग वहै वैर तुम निकट न लहिए।
यह प्रभुता जगतिलक कहाँ तुम बिन सरदहिये।।22।।

ॐ ह्रीं कोपप्रसादविरहितपरमोपेक्षि-भुवनतिलकप्राभवसहिताय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।

देव! स्तोतुं त्रिदिव-गणिका-मण्डली-गीत-कीर्ति
तोतूर्ति त्वां सकल-विषय-ज्ञान-मूर्तिर्जनो यः।
तस्य क्षेमं न पदमटतो जातु जोहूर्ति पन्था-
स्तत्त्वग्रन्थ-स्मरण-विषये नैष मोमूर्ति मर्त्यः।।23।।

सुरतिय गावैं सुयश सर्वगति ज्ञानस्वरूपी।
जो तुमको थिर होंहि नमैं भवि आनन्द रूपी।।
ताहि क्षेमपुर चलन वाट बाकी नहिं हो है।
श्रुत के सुमरनमाँहि सो न कबहूँ नर मोहै।।23।।

ॐ ह्रीं सकलतत्त्वग्रन्थस्मरणविषयिबुद्धिप्रदायकाय श्रीतीर्थंकर-परमदेवाय नमः।

चित्ते कुर्वन्निरवधि-सुख-ज्ञान-दृग्वीर्य-रूपं
देव! त्वां यः समय-नियमादाऽऽदरेण स्तवीति।
श्रेयोमार्गं स खलु सुकृतिस्तावता पूरयित्वा,
कल्याणानां भवति विषयः पञ्चधा पञ्चितानाम्।।24।।

अतुलचतुष्ट्य रूप तुम्हें जो चितमें धारै।
आदरसों तिहुंकालमाँहि जग थुति विस्तारै।।
सो सुकृती शिव पंथ भक्ति रचना कर पूरै।
पंचकल्यानक ऋद्धि पाय निहचै दुख चूरै।।24।।

ॐ ह्रीं अनंतसुखज्ञानदृग्वीर्यरूपाय भाक्तिकजनपञ्चकल्याण-प्रदायकाय श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।

भक्ति-प्रह्व-महेन्द्र-पूजित-पद! त्वत्कीर्तने न क्षमाः
सूक्ष्म-ज्ञान-दृशोऽपि संयमभृतः के हन्त मन्दा वयम्।
अस्माभिः स्तवन-च्छलेन तु परस्त्वय्यादरस्तन्यते
स्वात्माधीन-सुखैषिणां स खलु नः कल्याण-कल्पद्रुमः।।25।।

अहो जगत पति पूज्य अवधिज्ञानी मुनि हारे।
तुम गण कीर्तनमाँहि कौन हम मन्द विचारे।।
थुति छलसों तुम विषै देव आदर विस्तारे।
शिव सुख पूरनहार कल्पतरु यही हमारे।।25।।

ॐ ह्रीं स्वात्माधीनसुखेच्छुकजनकल्याणकल्पद्रुमाय श्रीतीर्थंकर-परमदेवाय नमः।

–स्वागता छंद–

वादिराजमनु शाब्दिक-लोको, वादिराजमनु तार्किक-सिंहः।
वादिराजमनु काव्यकृतस्ते, वादिराजमनु भव्य-सहायः।।26।।

वादिराज मुनि तै अनु, वैयाकरणी सारे।
वादिराज मुनितै, अनु तार्किक विद्यावारे।।
वादिराज मुनि तै अनु है काव्यन के ज्ञाता।
वादिराज मुनि तै अनु हैं भविजन के त्राता।।26।।

–दोहा–

मूल अर्थ बहुविध कुसुम, भाषा सूत्र मंझार।
भक्तिमाल भूधर करी, करो कंठ सुखकार।।

ॐ ह्रीं शाब्दिक-तार्किक-काव्यकृत-भव्यगणोत्कृष्टश्रीवादिराज-सूरिकृतएकीभावस्तोत्रस्वामिने श्रीतीर्थंकरपरमदेवाय नमः।

सप्तर्षिव्रत

(मृत्युंजय व्रत)

आज से लगभग 9 लाख वर्ष पूर्व श्री रामचन्द्र के समय मथुरानगरी के उद्यान में सात महर्षि महामुनि पधारे थे। वहाँ वर्षायोग स्थापित किया था, उनके शरीर से स्पर्शित हवा के प्रभाव से वहाँ पर दैवी प्रकोप– महामारी रोग कष्ट दूर हुआ था। तभी से लेकर आज तक इन सप्तर्षि मुनियों की प्रतिमाएँ मंदिरों में विराजमान कराने की परम्परा चली आ रही है और इनका अभिषेक-भक्ति आदि पूजा की जाती है।

इस व्रत की विधि–आषाढ़ शु. चतुर्दशी से श्रावण कृष्णा पंचमी तक सात दिन यह व्रत करना चाहिए। इन व्रतों के दिन सप्तर्षि मुनियों की प्रतिमा का पंचामृत अभिषेक करके उन्हीं की पूजा करें। मंत्र निम्न प्रकार हैं–

समुच्चय मंत्र– **ॐ ह्रीं अर्हं सुरमन्यु-श्रीमन्यु-श्रीनिचय-सर्वसुन्दर-जयवान-विनयलालस-जयमित्रनाम सप्त महर्षिभ्यो नमः।**

प्रत्येक दिन के प्रत्येक पृथक्-पृथक् मंत्र–

1. ॐ ह्रीं अर्हं श्रीसुरमन्युमहर्षये नमः।
2. ॐ ह्रीं अर्हं श्रीश्रीमन्युमहर्षये नमः।
3. ॐ ह्रीं अर्हं श्रीनिचयमहर्षये नमः।
4. ॐ ह्रीं अर्हं श्रीसर्वसुंदरमहर्षये नमः।
5. ॐ ह्रीं अर्हं श्रीजयवानमहर्षये नमः।
6. ॐ ह्रीं अर्हं श्रीविनयलालसमहर्षये नमः।
7. ॐ ह्रीं अर्हं श्रीजयमित्रमहर्षये नमः।

इन सप्तर्षियों की कथा पढ़ें। सात वर्ष तक यह व्रत करके उद्यापन में सप्तर्षियों की मूर्तियाँ प्रतिष्ठित कराकर मंदिरों में, गृह चैत्यालयों में विराजमान करें। यथाशक्ति मुनि-आर्यिका आदि को आहारदान आदि

देकर दीन-दुखियों को भी करुणादान, औषधिदान आदि देवें।

इस व्रत को लगातार सात वर्ष करना चाहिए। इस व्रत के प्रभाव से अकालमृत्यु को दूर कर परम्परा से मृत्युंजयपद मोक्षपद भी प्राप्त किया जा सकता है। जीवन में आने वाले अनेक संकट दूर होंगे। अनेक प्रकार के एक्सीडेंट, रोग, शोक, संकट दूर होंगे। इसमें कोई भी संदेह नहीं है।

यदि आप मथुरा तीर्थ नहीं जा सकते हैं, तो अन्य किसी भी तीर्थ की वंदना करके व्रत पूर्ण करें।

सप्तर्षियों की कथा–अयोध्या के राजदरबार में एक दिन महाराजा श्री रामचन्द्र ने अपने भाई शत्रुघ्न से कहा–

"शत्रुघ्न! इस तीन खण्ड की वसुधा में तुम्हें जो देश इष्ट हो, उसे स्वीकृत कर लो। क्या तुम अयोध्या का आधा भाग लेना चाहते हो? या उत्तम पोदनपुर को? राजगृह नगर चाहते हो या मनोहर पौंड्र नगर को?"

इत्यादि प्रकार से श्री राम और लक्ष्मण ने सैकड़ों राजधानियाँ बताईं, तब शत्रुघ्न ने बहुत कुछ विचार कर मथुरा नगरी की याचना की। तब श्री राम ने कहा–

"मथुरा का राजा मधु है, वह हम लोगों का शत्रु है, यह बात क्या तुम्हें ज्ञात नहीं है? वह मधु रावण का जमाई है और चमरेन्द्र ने उसे ऐसा शूलरत्न दिया हुआ है जो कि देवों के द्वारा भी दुर्निवार है, वह हजारों के भी प्राण हरकर पुनः उसके हाथ में आ जाता है। इस मधु का लवणार्णव नाम का पुत्र है वह विद्याधरों के द्वारा भी दुःसाध्य है, उस शूरवीर को तुम किस तरह जीत सकोगे?"

बहुत कुछ समझाने के बाद भी शत्रुघ्न ने यही कहा कि–

"इस विषय में अधिक कहने से क्या लाभ? आप तो मुझे मथुरा दे दीजिए। यदि मैं उस मधु को मधु के छत्ते के समान तोड़कर नहीं फेंक दूँ तो मैं राजा दशरथ के पुत्र होने का ही गर्व छोड़ दूँ। हे भाई! आपके आशीर्वाद से मैं उसे दीर्घ निद्रा में सुला दूँगा।"

इसके बाद शत्रुघ्न ने जिनमंदिर में जाकर सिद्ध परमेष्ठियों की पूजा करके घर जाकर भोजन किया पुनः माता के पास पहुँचकर प्रणाम करके मथुरा की ओर प्रस्थान के लिए आज्ञा माँगी। माता सुप्रभा ने पुत्र के मस्तक पर हाथ फेरकर उसे अपने अर्धासन पर बिठाकर प्यार से कहा–

"हे पुत्र! तू शत्रुओं को जीतकर अपना मनोरथ सिद्ध कर। हे वीर! तुझे युद्ध में शत्रु को पीठ नहीं दिखाना है। हे वत्स! जब तू युद्ध में विजयी होकर आयेगा, तब मैं सुवर्ण के कमलों से जिनेन्द्रदेव की परम पूजा करूँगी।"

बहुत बड़ी सेना के साथ शत्रुघ्न ने क्रम-क्रम से पुण्यभागा नदी को पार कर आगे पहुँचकर अपनी सेना ठहरा दी और गुप्तचरों को मथुरा भेज दिया। उन लोगों ने आकर समाचार दिया–

"देव! सुनिए, यहाँ से उत्तर दिशा में मथुरा नगरी है वहाँ नगर के बाहर एक सुन्दर राजउद्यान है। इस समय राजा मधुसुन्दर अपनी जयंत रानी के साथ वहीं निवास कर रहा है। कामदेव के वशीभूत हुए और सब काम को छोड़कर रहते हुए आज छठा दिन है। आपके आगमन का उसे अभी तक कोई पता नहीं है।"

गुप्तचरों के द्वारा सर्व समाचार विदित कर शत्रुघ्न ने यही अवसर अनुकूल समझकर साथ में एक लाख घुड़सवारों को लेकर वह मथुरा की ओर बढ़ गया। अर्धरात्रि के बाद शत्रुघ्न ने मथुरा के द्वार में प्रवेश किया। इधर शत्रुघ्न के बंदीगणों ने–

"राजा दशरथ के पुत्र शत्रुघ्न की जय हो।" ऐसी जयध्वनि से आकाश को गुंजायमान कर दिया था। तब मथुरा के अन्दर किसी शत्रुराजा का प्रवेश हो गया है, ऐसा जानकर शूरवीर योद्धा जग पड़े। इधर शत्रुघ्न ने मधु के राजमहल में प्रवेश किया और मधु की आयुधशाला पर अपना अधिकार जमा लिया।

शत्रुघ्न को मथुरा में प्रविष्ट जानकर महाबलवान् राजा मधुसुन्दर रावण के समान क्रोध को करता हुआ उद्यान से बाहर निकला किन्तु शत्रुघ्न से सुरक्षित मथुरा के अन्दर व अपने महल में प्रवेश करने में असमर्थ ही रहा, तब वह अपने शूलरत्न को प्राप्त नहीं कर सका फिर भी उसने शत्रुघ्न से सन्धि नहीं की प्रत्युत् युद्ध के लिए तैयार हो गया।

वहाँ दोनों की सेनाओं में घमासान युद्ध शुरू हो गया। इधर मधुसुन्दर के पुत्र लवणार्णव के साथ कृतांतवक्त्र सेनापति का युद्ध चल रहा था। बहुत ही प्रकार से गदा, खड्ग आदि से एक-दूसरे पर प्रहार करते हुए अन्त में कृतांतवक्त्र के द्वारा शक्ति नामक शस्त्र के प्रहार से वह लवणार्णव मृत्यु को प्राप्त हो गया। पुनः राजा मधु और शत्रुघ्न का बहुत देर तक युद्ध चलता रहा। बाद में मधु ने अपने को शूलरत्न से रहित जानकर तथा पुत्र के महाशोक से अत्यंत पीड़ित होता हुआ शत्रु की दुर्जेय स्थिति समझकर मन में चिंतन करने लगा–

"अहो! मैंने दुर्दैव से पहले अपने हित का मार्ग नहीं सोचा, यह राज्य, यह जीवन पानी के बुलबुले के समान क्षणभंगुर है। मैं मोह के द्वारा ठगा गया हूँ। पुनर्जन्म अवश्य होगा, ऐसा जानकर भी मुझ पापी ने समय रहते हुए कुछ नहीं सोचा। अहो! जब मैं स्वाधीन था, तब मुझे सद्बुद्धि क्यों नहीं उत्पन्न हुई? अब मैं शत्रु के सन्मुख क्या कर सकता हूँ? अरे! जब भवन में आग लग जावे, तब कुंआ खुदवाने से भला क्या होगा.....?"

ऐसा चिंतवन करते हुए राजा मधु एकदम संसार, शरीर और भोगों से विरक्त हो गया। तत्क्षण ही उसने अर्हंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और साधु इन पाँचों परमेष्ठियों को नमस्कार करके चारों मंगल, लोकोत्तम और शरणभूत की शरण लेता हुआ अपने दुष्कृतों की आलोचना करके सर्व सावद्य योग–सर्व आरंभ-परिग्रह का भावों से ही त्याग करके यथार्थ समाधिमरण करने में उद्यमशील हो गया। उसने सोचा–

"अहो! ज्ञान-दर्शनस्वरूप एक आत्मा ही मेरा है, वही मुझे शरण है। न तृण सांथरा है न भूमि, बल्कि अंतरंग-बहिरंग परिग्रह को मन से छोड़ देना ही मेरा संस्तर है।.....।"

ऐसा विचार करते हुए उस घायल स्थिति में ही शरीर से निर्मम होते हुए राजा मधुसुन्दर ने हाथी पर बैठे-बैठे ही केशलोंच करना शुरू कर दिया।

युद्ध की इस भीषण स्थिति में भी अपने हाथों से अपने सिर के बालों का लोच करते हुए देखकर शत्रुघ्न कुमार ने आगे आकर उन्हें नमस्कार किया और बोले–

"हे साधो! मुझे क्षमा कीजिए.....। आप धन्य हैं कि जो इस रणभूमि में भी सर्वारंभ-परिग्रह का त्याग कर जैनेश्वरी दीक्षा लेने के सन्मुख हुए हैं।"

उस समय जो देवांगनाएँ आकाश में स्थित हो युद्ध देख रही थीं उन्होंने महामना मधु के ऊपर पुष्पों की वर्षा की। इधर राजा मधु ने परिणामों की विशुद्धि से समता भाव धारण करते हुए प्राण छोड़े और समाधिमरण–वीरमरण के प्रभाव से तत्क्षण ही सानत्कुमार नाम के तीसरे स्वर्ग में उत्तम देव हो गये।

इधर वीर शत्रुघ्न भी संतुष्ट हुआ और युद्ध को विराम देकर सभी प्रजा को अभयदान देते हुए मथुरा में आकर रहने लगा।

मथुरानगरी में महामारी प्रकोप, सप्तर्षि के चातुर्मास से कष्ट निवारण– राजा मधुसुन्दर का वह दिव्य शूलरत्न यद्यपि अमोघ था, फिर भी शत्रुघ्न के पास वह निष्फल हो गया, उसका तेज छूट गया और वह अपनी विधि से च्युत हो गया। तब वह (उसका अधिष्ठाता देव) खेद, शोक और लज्जा को धारण करता हुआ अपने स्वामी असुरों के अधिपति चमरेन्द्र के पास गया। शूलरत्न के द्वारा मधु के मरण का समाचार सुनकर चमरेन्द्र को बहुत ही दुःख हुआ। वह बार-बार मधु के सौहार्द का

स्मरण करने लगा। तदनंतर वह पाताल लोक से निकलकर मथुरा जाने को उद्यत हुआ। तभी गरुड़कुमार देवों के स्वामी वेणुधारी इन्द्र ने इसे रोकने का प्रयास किया किन्तु यह नहीं माना और मथुरा में पहुँच गया।

वहाँ चरमेन्द्र ने देखा कि मथुरा की प्रजा शत्रुघ्न के आदेश से बहुत बड़ा उत्सव मना रही है, तब वह विचार करने लगा–

"ये मथुरा के लोग कितने कृतघ्नी हैं कि जो दुःख-शोक के अवसर पर भी हर्ष मना रहे हैं। जिसने हमारे स्नेही राजा मधु को मारा है, मैं उसके निवासस्वरूप इस समस्त देश को नष्ट कर दूँगा।"

इत्यादि प्रकार से क्रोध से प्रेरित हो उस चमरेन्द्र ने मथुरा के लोगों पर दुःसह उपसर्ग करना प्रारंभ कर दिया। जो जिस स्थान पर सोये थे, बैठे थे, वे महारोग (महामारी) के प्रकोप से दीर्घ निद्रा को प्राप्त हो गये–मरने लगे।

इस महामारी उपसर्ग को देखकर कुल देवता की प्रेरणा से राजा शत्रुघ्न अपनी सेना के साथ अयोध्या वापस आ गये।

विजय को प्राप्त कर आते हुए शूरवीर शत्रुघ्न का श्रीराम-लक्ष्मण ने हर्षित हो अभिनंदन किया। माता सुप्रभा ने भी अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार सुवर्ण के कमलों से जिनेन्द्रदेव की महती पूजा सम्पन्न करके धर्मात्माओं को दान दिया पुनः दीन-दुःखी जनों को करुणादान देकर सुखी किया। यद्यपि वह अयोध्या नगरी सुवर्ण के महलों से सहित थी फिर भी पूर्वभवों के संस्कारवश शत्रुघ्न का मन मथुरा में ही लगा हुआ था।

इधर मथुरा नगरी के उद्यान में गगनगामी ऋद्धिधारी सात दिगम्बर महामुनियों ने वर्षायोग धारण कर लिया–चातुर्मास स्थापित कर लिया। इनके नाम थे–सुरमन्यु, श्रीमन्यु, श्रीनिचय, सर्वसुन्दर, जयवान, विनयलालस और जयमित्र।

प्रभापुर नगर के राजा श्रीनंदन की धारिणी रानी के ये सातों पुत्र थे। प्रीतिंकर मुनिराज को केवलज्ञान प्राप्त हो जाने पर देवों को जाते हुए

देखकर प्रतिबोध को प्राप्त हुए थे। उस समय राजा श्रीनंदन ने अपने एक माह के पुत्र को राज्य देकर अपने सातों पुत्रों के साथ प्रीतिंकर भगवान के समीप दीक्षा ग्रहण कर ली थी। समय पाकर श्रीनंदन ने केवलज्ञान प्राप्त कर मोक्ष प्राप्त कर लिया था और ये सातों मुनि तपस्या के प्रभाव से अनेक ऋद्धियों को प्राप्त कर सातऋषि (सप्तर्षि) के नाम से प्रसिद्ध हो रहे थे।

उद्यान में वटवृक्ष के नीचे ये सातों मुनि चातुर्मास में स्थित हो गये थे। इन मुनियों के तपश्चरण के प्रभाव से उस समय मथुरा में चमरेन्द्र के द्वारा फैलायी गयी महामारी एकदम नष्ट हो गई थी। वहाँ नगरी में चारों तरफ के वृक्ष फलों के भार से लद गये थे और खेती भी खूब अच्छी हो रही थी। ये मुनिराज रस-परित्याग, बेला, तेला आदि तपश्चरण करते हुए महातप कर रहे थे। कभी-कभी ये आहार के समय आकाश को लांघकर निमिषमात्र में विजयपुर, पोदनपुर आदि दूर-दूर नगरों में जाकर आहार ग्रहण करते थे। वे महामुनिराज परगृह में अपने करपात्र में केवल शरीर की स्थिति के लिए आहार लेते थे।

एक दिन ये सातों ही महाऋषिराज जूड़ाप्रमाण (चार हाथ प्रमाण) भूमि को देखते हुए अयोध्या नगरी में प्रविष्ट हुए। वे विधिपूर्वक भ्रमण करते हुए अर्हद्दत्त सेठ के घर के दरवाजे पर पहुँचे। उन मुनियों को देखकर अर्हद्दत्त सेठ विचार करने लगा–

''यह वर्षाकाल कहाँ? और इन मुनियों की यह चर्या कहाँ? इस नगरी के आस-पास पर्वत की कंदराओं में, नदी के तट पर, वृक्ष के नीचे, शून्य घर में, जिनमंदिर में तथा अन्य स्थानों में जहाँ कहीं जो भी मुनिराज स्थित हैं, वे सब वर्षायोग पूरा किये बिना इधर-उधर नहीं जाते हैं परन्तु ये मुनि आगम के विपरीत चर्या वाले हैं, ज्ञान से रहित और आचार्यों से रहित हैं। इसलिए ये इस समय यहाँ आ गये हैं। यद्यपि ये मुनि असमय में आये थे फिर भी अर्हद्दत्त के अभिप्राय को समझने वाली वधू ने उनका पड़गाहन करके उन्हें आहारदान दिया।

आहार के बाद ये सातों मुनि तीन लोक को आनंदित करने वाले ऐसे जिनमंदिर में पहुँचे, जहाँ भगवान मुनिसुव्रतनाथ की प्रतिमा विराजमान थी और शुद्ध निर्दोष प्रवृत्ति करने वाले दिगम्बर साधुगण भी विराजमान थे।

ये सातों मुनिराज पृथ्वी से चार अंगुल ऊपर चल रहे थे। ऐसे इन मुनियों को वहाँ पर स्थित द्युति भट्टारक – द्युति नाम के आचार्य देव ने देखा। इन मुनियों ने उत्तम श्रद्धा से पैदल चलकर ही जिनमंदिर में प्रवेश किया, तब द्युति भट्टारक ने खड़े होकर नमस्कार कर विधि से उनकी पूजा की।

''यह हमारे आचार्य चाहे जिसकी वंदना करने के लिए उद्यत हो जाते हैं।''

ऐसा सोचकर उन द्युति आचार्य के शिष्यों ने उन सप्तर्षियों की निंदा का विचार किया। तदनंतर सम्यक् प्रकार से स्तुति करने में तत्पर वे सप्तर्षि मुनिराज जिनेन्द्र भगवान की वंदना कर आकाशमार्ग से पुनः अपने स्थान पर चले गये। जब वे आकाश में उड़े, तब उन्हें चारण ऋद्धि के धारक जानकर द्युति आचार्य के शिष्य जो अन्य मुनि थे, उन्होंने अपनी निंदा-गर्हा आदि करके प्रायश्चित्त कर अपनी कलुषता दूर कर अपना हृदय निर्मल कर लिया।

इसी बीच में अर्हद्दत्त सेठ जिनमंदिर में आया, तब द्युति आचार्य ने कहा–

''हे भद्र! आज तुमने ऋद्धिधारी महान मुनियों के दर्शन किये होंगे। वे सर्वजगवंदित महातपस्वी मुनि मथुरा में निवास करते हैं, आज मैंने उनके साथ वार्तालाप किया है। उन आकाशगामी ऋषियों के दर्शन से आज तुमने भी अपना जीवन धन्य किया होगा।''

इन आचार्यदेव के मुख से उन साधुओं की प्रशंसा सुनते ही सेठ अर्हद्दत्त खेदखिन्न होकर पश्चात्ताप करने लगा–

''ओह! यथार्थ को नहीं समझने वाले मुझ मिथ्यादृष्टि को धिक्कार

हो, मेरा आचरण अनुचित था, मेरे समान दूसरा अधार्मिक भला और कौन होगा? इस समय मुझसे बढ़कर दूसरा मिथ्यादृष्टि अन्य कौन होगा? हाय! मैंने उठकर मुनियों की पूजा नहीं की तथा नवधाभक्ति से उन्हें आहार भी नहीं दिया।

साधुरूपं समालोक्य न मुंचत्यासनं तु यः।
दृष्ट्वाऽपमन्यते यश्च स मिथ्यादृष्टिरुच्यते।।

दिगम्बर मुनियों को देखकर जो अपना आसन नहीं छोड़ता है– उठकर खड़ा नहीं होता है तथा देखकर भी उनका अपमान करता है, वह मिथ्यादृष्टि कहलाता है।

मैं पापी हूँ, पाप कर्मा हूँ, पापात्मा हूँ, पाप का पात्र हूँ अथवा जिनागम की श्रद्धा से दूर निंद्यतम हूँ। जब तक मैं हाथ जोड़कर उन मुनियों की वंदना नहीं कर लूँगा, तब तक मेरा शरीर एवं हृदय झुलसता ही रहेगा। अहंकार से उत्पन्न हुए इस पाप का प्रायश्चित्त उन मुनियों की वंदना के सिवाय और कुछ भी नहीं हो सकता है।''

(इस कथा से यह स्पष्ट हो जाता है कि आकाशगामी मुनि चातुर्मास में भी अन्यत्र जाकर आहार ग्रहण करके आ जाते थे।)

शत्रुघ्न के लिए महामुनि का उपदेश–इधर इस मथुरा नगरी में इन मुनियों के चातुर्मास करने से चमरेन्द्र द्वारा किये गये सारे उपद्रव-महामारी आदि नष्ट हो गये थे। नगर में पुनः पूर्ण शांति का वातावरण हो गया था।

इधर अयोध्या से अर्हदत्त सेठ महान वैभव के साथ कार्तिक शुक्ला सप्तमी के दिन उन ऋषियों की वंदना करने के लिए पहुँच गये थे। राजा शत्रुघ्न भी इन मुनियों का उपदेश श्रवणकर भक्ति से प्रेरित हुए मथुरा के उद्यान में आ गये थे और उनकी माता सुप्रभा भी विशाल वैभव और धन आदि को लेकर इन मुनियों की पूजा करने के लिए आ गई। उन सम्यग्दृष्टि महापुरुषों ने और सुप्रभा आदि रानियों ने मुनिराज की महान पूजा की। उस समय वहाँ वह उद्यान और मुनियों के आश्रम का स्थान प्याऊ,

नाटकशाला, संगीतशाला आदि से सुशोभित हुआ स्वर्गप्रदेश के समान मनोहर हो गया था।

अनन्तर भक्ति एवं हर्ष से भरे हुए शत्रुघ्न ने वर्षायोग को समाप्त करने वाले उन मुनियों को पुनः पुनः नमस्कार करके उनसे आहार ग्रहण करने के लिए प्रार्थना की, तब इन सातों में जो प्रमुख थे, वे ''सुरमन्यु'' महामुनि बोले–

''हे नरश्रेष्ठ! जो आहार मुनियों के लिए संकल्प कर बनाया जाता है, दिगम्बर मुनिराज उसे ग्रहण नहीं करते हैं। जो आहार न स्वयं किया गया है न कराया गया है और जिसमें न बनाते हुए को अनुमति दी गई है ऐसे नवकोटि विशुद्ध आहार को ही साधुगण ग्रहण करते हैं।''

पुनः शत्रुघ्न ने निवेदन किया–

''हे भगवन् ! आप भक्तों के ऊपर अनुग्रह करने वाले हैं। आप अभी कुछ दिन और यहीं मथुरा में ठहरिये। आपके प्रभाव से ही यहाँ महामारी की शांति हुई है....।''

पुनः शत्रुघ्न चिंता करने लगा–

''ऐसे महामुनियों को विधिवत् आहार दान देकर मैं कब संतुष्ट होऊँगा?'' शत्रुघ्न को नतमस्तक देखकर उन मुनिराज ने पुनः आगे आने वाले काल का वर्णन करते हुए उपदेश दिया–

''हे राजन् ! जब अनुक्रम से तीर्थंकरों का काल व्यतीत हो जायेगा– पंचम काल आ जाएगा, तब यहाँ धर्म कर्म से रहित अत्यन्त भयंकर समय आ जाएगा। दुष्ट पाखण्डी लोगों द्वारा यह परम पावन जैन शासन उस तरह तिरोहित हो जायेगा कि जिस तरह धूलि के छोटे-छोटे कणों द्वारा सूर्य का बिम्ब ढक जाता है। यह संसार चोरों के समान कुकर्मी, क्रूर, दुष्ट, पाखण्डी लोगों से व्याप्त होगा। पुत्र, माता-पिता के प्रति और माता-पिता पुत्रों के प्रति स्नेह रहित होंगे। उस कलिकाल में राजा लोग चोरों के समान धन के अपहर्ता होंगे। कितने ही मनुष्य यद्यपि सुखी

होंगे, फिर भी उनके मन में पाप होगा, वे दुर्गति में ले जाने वाली ऐसी विकथाओं से एक-दूसरे को गोहित करते हुए प्रवृत्ति करेंगे।

हे शत्रुघ्न! कषायबहुल समय के आने पर देवागमन आदि समस्त अतिशय नष्ट हो जायेंगे। तीव्र मिथ्यात्व से युक्त मनुष्य व्रतरूप गुणों से सहित एवं दिगम्बर मुद्रा के धारक मुनियों को देखकर ग्लानि करेंगे। अप्रशस्त को प्रशस्त मानते हुए कितने ही दुर्बुद्धि लोग भय पक्ष में उस तरह जा पड़ेंगे जिस तरह कि पतंगे अग्नि में जा पड़ते हैं। कितने ही मूढ़ मनुष्य हंसी करते हुए शान्तचित्त मुनियों को तिरस्कृत करके मूढ़ मनुष्यों को आहार देवेंगे। जिस प्रकार शिलातल पर रखा हुआ बीज यद्यपि सदा सींचा जाय तो भी उसमें फल नहीं लग सकता है, वैसे ही शील रहित मनुष्यों के लिए दिया हुआ दान भी निरर्थक होता है। 'जो गृहस्थ मुनियों की अवज्ञा कर गृहस्थ के लिए आहार देते हैं, वे मूर्ख चंदन को छोड़कर बहेड़ा ग्रहण करते हैं।

अवज्ञाय मुनीन् गेही गेहिने यः प्रयच्छति।
त्यक्त्वा स चंदनं मूढो गृह्णत्येव विभीतकं।।67।।

हे शत्रुघ्न! इस प्रकार दुषमता के कारण निकृष्ट काल को आने वाला जानकर तुम आत्मा के लिए हितकर शुभ और स्थायी ऐसा कार्य करो। तुम नामी पुरुष हो अतः निर्ग्रन्थ मुनियों को आहार देने का निश्चय करो, यही तुम्हारी धन-संपदा का सार है। हे राजन् ! आगे आने वाले काल में थके हुए मुनियों के लिए आहार देना अपने गृहदान के समान एक बड़ा भारी आश्रय होगा। इसलिए हे वत्स! तुम ये दान देकर इस समय गृहस्थ के शीलव्रत का नियम धारण करो और जीवन को सार्थक बनाओ। मथुरा के समस्त लोग समीचीन धर्म को धारण करें। दया और वात्सल्य भाव से सम्पन्न तथा जिनशासन की भावना से युक्त होवें। घर-घर में जिनप्रतिमाएँ स्थापित की जावें, उनकी पूजाएँ हों, अभिषेक हों और विधिपूर्वक प्रजा का पालन किया जाये।

सप्तर्षि प्रतिमा दिक्षु चतसृष्वपि यत्नतः।
नगयां कुरू शत्रुघ्न! तेन शांतिर्भविष्यति।।74।।
अद्यप्रभृति यद्गेहे जैनं बिंबं न विद्यते।
मारी भक्ष्यति यद्व्याघ्री यथाऽनाथं कुरंगकं।। 75।।

(पद्मपुराण, पर्व 92)

हे शत्रुघ्न! इस नगरी की चारों दिशाओं में सप्तर्षियों की प्रतिमाएँ स्थापित करो, उसी से सब प्रकार की शांति होगी। आज से लेकर जिस घर में जिनप्रतिमा नहीं होगी, उस घर को मारी उसी तरह खा जायेगी कि जिस तरह व्याघ्री अनाथ मृग को खा जाती है। जिसके घर में अंगूठा प्रमाण भी जिनप्रतिमा होगी, उसके घर में गरुड़ से डरी हुई सर्पिणी के समान मारी का प्रवेश नहीं होगा।''

महामुनि के इस उपदेश को सुनकर हर्ष से युक्त हो राजा शत्रुघ्न ने कहा ''आपने जैसी आज्ञा दी है, वैसा ही हम लोग करेंगे'' इत्यादि। इसके बाद वे महामना सातों मुनि आकाश में उड़कर विहार कर गये। वे सप्तर्षि निर्वाण क्षेत्रों की वंदना करके अयोध्या में सीता के घर उतरे। अत्यधिक हर्ष को धारण करने वाली एवं श्रद्धा आदि गुणों से सुशोभित सीता ने उन्हें विधिपूर्वक उत्तम आहार दिया। जानकी के नवधाभक्ति से दिये गये सर्वगुणसम्पन्न आहार को ग्रहण कर उसे शुभाशीर्वाद देकर वे मुनि आकाश मार्ग से चले गये।

अनन्तर शत्रुघ्न ने नगर के भीतर और बाहर सर्वत्र जिनेंद्र भगवान की प्रतिमाएँ विराजमान करायीं तथा ईतियों को दूर करने वाली सप्तर्षियों की प्रतिमाएँ भी चारों दिशाओं में विराजमान करायीं। उस समय वहाँ पर सर्व प्रकार से सुभिक्ष, क्षेम और शांति का साम्राज्य हो गया। तब राजा शत्रुघ्न निर्विघ्नरूप से राज्य का संचालन करते हुए और प्रजा का पुत्रवत् पालन करते हुए सुखपूर्वक मथुरा नगरी में रहने लगे।

सप्तर्षि पूजा

रचयिता-कवि मनरंगलाल

–छप्पय छंद–

प्रथम नाम श्रीमन्व, दुतिय स्वरमन्व ऋषीश्वर।
तृतिय मुनि श्री निचय, सर्वसुन्दर चौथो वर।।
पंचम श्री जयवान, विनयलालस षष्ठम भनि।
सप्तम जय मित्राख्य, सर्व चारित्र-धाम गनि।।
ये सातों चारण ऋद्धिधर, करूँ तास पद थापना।
मैं पूजूँ मन वचन काय करि, जो सुख चाहूँ आपना।।

ॐ ह्रीं श्रीमन्वादिचारणर्द्धिधरसप्तर्षीश्वराः! अत्र अवतरत अवतरत संवौषट्।

ॐ ह्रीं श्रीमन्वादिचारणर्द्धिधरसप्तर्षीश्वराः! अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्रीमन्वादिचारणर्द्धिधरसप्तर्षीश्वराः! अत्र मम सन्निहितो भवत भवत वषट् सन्निधीकरणं।

–हरिगीतिका–

शुभ-तीर्थ उद्भव-जल अनूपम, मिष्ट शीतल लायकैं।
भव-तृषा कंद-निकंद-कारण, शुद्ध घट भरवायकैं।।
मन्वादि चारण ऋद्धि धारक, मुनिन की पूजा करूँ।
ता करें पातक हरें सारे, सकल आनन्द विस्तरूँ।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीमन्व-स्वरमन्व-निचय-सर्वसुन्दर-जयवान-विनयलालस-जयमित्राख्यचारणर्षिभ्यः जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीखण्ड कदली-नन्द केशर, मन्द-मन्द घिसायकैं।
तसु गंध प्रसरित-दिगदिगन्तर, भर कटोरी लायकैं।।

मन्वादि चारण ऋद्धि धारक, मुनिन की पूजा करूँ।
ता करें पातक हरें सारे, सकल आनन्द विस्तरूँ।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीमन्वादिचारणसप्तर्षिभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अति धवल अक्षत खण्ड-वर्जित, मिष्ट राजन भोग के।
कलधौत थारा भरतसुन्दर, चुनित शुभ उपयोग के।।
मन्वादि चारण ऋद्धि धारक, मुनिन की पूजा करूँ।
ता करें पातक हरें सारे, सकल आनन्द विस्तरूँ।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीमन्वादिचारणसप्तर्षिभ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

बहु-वर्ण-सुवर्ण-सुमन आछै, अमल कमल गुलाब के।
केतकी चम्पा चारु मरुआ, चुने निज कर चावके।।
मन्वादि चारण ऋद्धि धारक, मुनिन की पूजा करूँ।
ता करें पातक हरें सारे, सकल आनन्द विस्तरूँ।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीमन्वादिचारणसप्तर्षिभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पकवान नाना भाँति चातुर, रचित शुद्ध नये-नये।
सदमिष्टलाडू आदि भरबहु, पुरट के थारा लये।।
मन्वादि चारण ऋद्धि धारक, मुनिन की पूजा करूँ।
ता करें पातक हरें सारे, सकल आनन्द विस्तरूँ।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीमन्वादिचारणसप्तर्षिभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कलधौत-दीपक जड़ित नाना, भरित गोधृत-सारसों।
अतिज्वलितजगमगज्योतिजाकी, तिमिरनाशनहारसों।।

मन्वादि चारण ऋद्धि धारक, मुनिन की पूजा करूँ।
ता करें पातक हरें सारे, सकल आनन्द विस्तरूँ।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीमन्वादिचारणसप्तर्षिभ्यः मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दिक्-चक्र गंधित होत जाकर, धूप दश-अंगी कही।
सो लाय मनवचकाय शुद्ध लगायकर खेऊँ सही।।
मन्वादि चारण ऋद्धि धारक, मुनिन की पूजा करूँ।
ता करें पातक हरें सारे, सकल आनन्द विस्तरूँ।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीमन्वादिचारणसप्तर्षिभ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

वर दाख खारक अमित प्यारे, मिष्ट चुष्ट चुनायकैं।
द्रावडी दाडिम चारु पुंगी, थाल भर-भर लायकै।।
मन्वादि चारण ऋद्धि धारक, मुनिन की पूजा करूँ।
ता करें पातक हरें सारे, सकल आनन्द विस्तरूँ।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीमन्वादिचारणसप्तर्षिभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंध अक्षत पुष्प चरुवर, दीप धूप सुलावना।
फललालित आठौं द्रव्य मिश्रित, अर्घकीजे पावना।।
मन्वादि चारण ऋद्धि धारक, मुनिन की पूजा करूँ।
ता करें पातक हरें सारे, सकल आनन्द विस्तरूँ।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीमन्वादिचारणसप्तर्षिभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

–घत्ता–

वन्दूँ ऋषिराजा, धर्म-जहाजा, निज-पर-काजा करत भले।
करुणा के धारी, गगन-विहारी, दुःख-अपहारी भरम दले।।
काटत जम-फन्दा, भविजन वृन्दा, करत अनन्दा चरणन में।
जो पूजैं ध्यावैं, मंगल गावैं, फेर न आवैं भव-वन में।।

–पद्धरि छंद–

जय श्रीमनु मुनिराजा महन्त, त्रस-थावर की रक्षा करन्त।
जय मिथ्या-तम-नाशक पतंग, करुणारस-पूरित अंग-अंग।।

जय श्रीस्वरमनु अकलंकरूप, पदसेव करत नित अमर-भूप।
जय पंच अक्ष जीते महान, तप तपत देह कंचन-समान।।

जय निचय सप्त तत्त्वार्थ भास, तप-रमातनों तन में प्रकाश।
जय विषयरोधसम्बोधनभान, परपरणति नाशन अचल ध्यान।।

जय जयहिं सर्वसुन्दरदयाल, लखि इन्द्रजालवत् जगत-जाल।
जय तृष्णाहारी रमण राम, निज-परणति में पायो विराम।।

जय आनन्दघन कल्याणरूप, कल्याण करत सबकौ अनूप।
जयमदनाशन जयवानदेव, निरमद विचरत सब करत सेव।।

जय जयहिं विनयलालस अमान, सब शत्रु-मित्र जानत समान।
जय कृशित काय तप के प्रभाव, छवि छटा उड़ति आनन्ददाय।।

जयमित्रसकल जग के सुमित्र, अनगिनत अधम कीने पवित्र।
जय चन्द्र वदन राजीव नैन, कबहूँ विकथा बोलत न बैन।।

जय सातों मुनिवर एक संग, नित गगन-गमन करते अभंग।
जय आये मथुरापुर मँझार, तहँ मरी रोग को अति प्रचार।।

जय-जय तिन चरणनि के प्रसाद, सब मरी देवकृत भई वाद।
जयलोक करे निर्भय समस्त, हम नमत सदा नित जोड़ हस्त॥

जय ग्रीषम-ऋतु पर्वत मँझार, नित करत अतापन योगसार।
जय तृषा-परीषह करत जेर, कहुँ रंच चलत नहिं मन सुमेर।।

जय मूल अठाइस गुणनधार, तप उग्र तपत आनन्दकार।
जय वर्षा ऋतु में वृक्ष तीर, तहं अति शीतल झेलत समीर।।

जय शीत-काल चौपट मँझार, कै नदी सरोवर तट विचार।
जय निवसत ध्यानारूढ़ होय, रंचक नहिं मटकत रोम कोय।।

जय मृतकासन वज्रासनीय, गौदूहन इत्यादिक गनीय।
जय आसन नाना भाँति धार, उपसर्ग सहत ममता निवार।।

जय जपत तिहारो नाम कोय, लख पुत्र पौत्र कुल वृद्धि होय।
जय भरे लक्ष अतिशय भण्डार, दारिद्र तनो दुःख होय छार।।

जय चोर अग्नि डाकिन-पिशाच, अरु ईति भीति सब नसत साँच।
जय तुम सुमरत सुख लहत लोक, सुर-असुर नमत पद देत धोक।।

–रोला –

ये सातों मुनिराज, महा तप लक्ष्मी धारी।
परम पूज्य पद धरै, सकल जग के हितकारी।।

जो मन वच तन शुद्ध, होय सेवे औ ध्यावै।
सो जन 'मनरंगलाल', अष्ट ऋद्धिन कौं पावै।।

दोहा – **नमन करत चरनन परत, अहो गरीब निवाज।**
पंच परावर्तन नितैं, निरवारो ऋषिराज।।

ॐ ह्रीं श्रीमन्वादिचारणसप्तर्षिभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

।।पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

ॐ ह्रीं विश्वशांतिकराय
श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः।

श्री गौतम स्वामी व्रत

मंगलं भगवान् वीरो, मंगलं गौतमो गणी।
मंगलं कुंदकुंदाद्यो, जैन धर्मोऽस्तु मंगलम्।।1।।

आज से लगभग 2564 वर्ष पूर्व श्री इन्द्रभूति ब्राह्मण ने इन्द्र की प्रेरणा से राजगृही में भगवान महावीर के समवसरण के दर्शन किये। मानस्तंभ के दर्शन से ही उनका मान गलित हो गया और वे उसी क्षण सम्यग्दृष्टी बन गये। भगवान के श्रीचरणों में जैनेश्वरी दीक्षा लेते ही उन्हें मति, श्रुत, अवधि और मनःपर्यय ज्ञान प्रगट हो गया और वे प्रभु के प्रथम गणधर हो गये। उनका गोत्र गौतम था अतः वे गौतम स्वामी के नाम से प्रसिद्ध हैं। इससे पूर्व गणधर के अभाव में भगवान महावीर की दिव्यध्वनि नहीं खिरी थी। इनके दीक्षा लेते ही प्रभु की दिव्यध्वनि खिरने लगी। उस दिन श्रावण कृष्णा प्रतिपदा थी प्रातःकाल गौतम स्वामी ने दीक्षा ली, प्रभु की दिव्यध्वनि खिरी। उसी दिन रात्रि में श्री गौतम गणधर देव ने ग्यारह अंग-चौदह पूर्वों की रचना कर दी।

ऋद्धियाँ सात होती हैं–

बुद्धि तवो विय लद्धी, विउव्वणलद्धी तहेव ओसहिया।
रस-वल-अक्सीणा वि य, लद्धीओ सत्त पण्णत्ता[1]।।

बुद्धि, तप, विक्रिया, औषधि, रस, बल और अक्षीण, इस प्रकार ऋद्धियाँ सात होती हैं।

षट्खण्डागम ग्रंथ की नवमी पुस्तक में श्री वीरसेन स्वामी ने लिखा है कि गणधर देवों के सातों ऋद्धियाँ होती हैं–

बुद्धि-तव-विउवणोसहि-रस-बल-अक्खीण-सुरसरत्तादी।
ओहि-मणपज्जवेहि य, हवंति गणबालया सहिया।

1. षट्खण्डागम, धवला टीका पु. 9, सूत्र 44 की टीका में।

गणधर देव बुद्धि, तप, विक्रिया, औषधि, रस, बल, अक्षीण, सुस्वरत्वादि तथा अवधि एवं मनःपर्यय ज्ञान से सहित हैं।

आज जितना भी जैन वाङ्मय है, वह सब प्रभु की दिव्यध्वनि का ही अंश है।

व्रत की विधि–आषाढ़ शु. 15, गुरुपूर्णिमा को धारण–एकाशन करके श्रावण कृ. 1 को उपवास करके भगवान महावीर स्वामी का, श्री गौतम स्वामी की प्रतिमा का एवं सरस्वती देवी की प्रतिमा का या श्रुतस्कंध यंत्र का अभिषेक करके इन तीनों की पूजा करें पुनः गौतम स्वामी का जीवन परिचय पढ़कर सारा दिवस धर्मध्यान में व्यतीत करें।

यदि उपवास की शक्ति नहीं हो तो अल्पाहार लेकर व्रत करना, ऐसे यह व्रत सात वर्ष तक करना है।

व्रत की जाप्य–ॐ ह्रीं सप्तर्द्धिसमन्वितश्रीगौतमस्वामिने नमः।

यह श्रावण कृ. 1, तभी से लेकर आज तक भी वीरशासन जयंती के नाम से प्रसिद्ध है। जैन शास्त्रों में इसे युगादि दिवस भी माना गया है। इस दिन किया गया व्रत संपूर्ण अमंगल को दूर कर ज्ञान की वृद्धि करने वाला है क्योंकि यह धर्म तीर्थ उत्पत्ति का भी प्रथम दिन है अतः इसे प्रथम देशना दिवस के नाम से भी कहते हैं। श्री गौतम स्वामी के नाम से किया यह व्रत सभी के जीवन में मंगलकारी होगा। व्रत पूर्णकर राजगृही तीर्थ एवं गुणावां तीर्थ की वंदना अवश्य करना चाहिए।

श्री गौतम स्वामी का परिचय–मगध देश में ब्राह्मण नाम के नगर में शांडिल्य नाम के ब्राह्मण की दो पत्नी थीं–स्थंडिला और केशरी। स्थंडिला ने गौतम और गार्ग्य को जन्म दिया तथा केशरी ने भार्गव को जन्म दिया। इन तीनों भाइयों के इन्द्रभूति, अग्निभूति एवं वायुभूति नाम प्रसिद्ध थे। किसी जगह गौतम की जन्मतिथि चैत्र शु. एकम् मानी गई है।

भगवान महावीर को केवलज्ञान प्रगट होकर समवसरण की रचना हो चुकी थी, किन्तु दिव्यध्वनि नहीं खिर रही थी। 66 दिन व्यतीत हो गये, तभी सौधर्म इन्द्र ने समवसरण में गणधर का अभाव समझकर अपने अवधिज्ञान से "गौतम" को इस योग्य जानकर वृद्ध का रूप बनाया और वहाँ गौतमशाला में पहुँचकर कहते हैं–

"मेरे गुरु इस समय ध्यान में होने से मौन हैं अतः मैं आपके पास इस श्लोक का अर्थ समझने आया हूँ।" गौतम ने विद्या के गर्व से गर्विष्ठ हो पूछा–"यदि मैं इसका अर्थ बता दूँगा तो तुम क्या दोगे?" तब वृद्ध ने कहा–यदि आप इसका अर्थ कर देंगे, तो मैं सब लोगों के सामने आपका शिष्य हो जाऊँगा और यदि आप अर्थ न बता सके तो इन सब विद्यार्थियों और अपने दोनों भाईयों के साथ आप मेरे गुरु के शिष्य बन जाना।" महा अभिमानी गौतम ने यह शर्त मंजूर कर ली क्योंकि वह समझता था कि मेरे से अधिक विद्वान इस भूतल पर कोई है ही नहीं। तब वृद्ध ने वह काव्य पढ़ा–

"धर्मद्वयं त्रिविधकालसमग्रकर्म, षड्द्रव्यकायसहिताः समयैश्च लेश्याः।
तत्त्वानि संयमगती सहितं पदार्थै-रंगप्रवेदमनिशं वद चास्तिकायं।।"

तब गौतम ने कुछ देर सोचकर कहा–"ब्राह्मण! तू अपने गुरु के पास ही चल। वहीं मैं इसका अर्थ बताकर तेरे गुरु के साथ वाद-विवाद करूँगा।" इन्द्र तो चाहता ही यह था। वह वृद्ध वेषधारी इन्द्र गौतम को समवसरण में ले आया।

वहाँ मानस्तंभ को देखते ही गौतम का मान गलित हो गया और उसे सम्यक्त्व प्रगट हो गया। गौतम ने अनेक स्तुति करते हुए भगवान के चरणों को नमस्कार किया तथा अपने पाँच सौ शिष्यों और दोनों भाईयों के साथ भगवान के पादमूल में जैनेश्वरी दीक्षा धारण कर ली। अन्तर्मुहूर्त में ही इन गौतम मुनि को सातों ऋद्धियाँ, अवधि और

मनःपर्ययज्ञान प्रगट हो गया तथा वे तीर्थंकर महावीर स्वामी के प्रथम गणधर हो गये। उत्तर पुराण में लिखा है–

''तदनन्तर सौधर्मेन्द्र ने मेरी पूजा की और मैंने पाँच सौ ब्राह्मण पुत्रों के साथ श्री वर्धमान भगवान को नमस्कार कर संयम धारण किया। परिणामों की विशेष शुद्धि होने से मुझे उसी समय सात ऋद्धियाँ प्राप्त हो गईं। तदनन्तर भट्टारक वर्धमान स्वामी के उपदेश से मुझे श्रावण वदी प्रतिपदा के दिन पूर्वान्ह काल में समस्त अंगों के अर्थ तथा पदों का भी स्पष्ट बोध हो गया। पुनः चार ज्ञान से सहित मैंने रात्रि के पूर्व भाग में अंगों की तथा रात्रि के पिछले भाग में पूर्वों की रचना की, उसी समय से मैं ग्रंथकर्ता हुआ हूँ।''

''जिस दिन भगवान महावीर स्वामी को निर्वाण प्राप्त होगा, उसी दिन मैं केवलज्ञान प्राप्त करूँगा।

श्री गौतम स्वामी के मुखकमल से निर्गत चैत्यभक्ति, वीरभक्ति एवं दैवसिक, पाक्षिक मुनि प्रतिक्रमण तथा श्रावक प्रतिक्रमण व गणधरवलय मंत्र अत्यधिक प्रसिद्धि को प्राप्त हैं।

जब भगवान महावीर स्वामी आज से 2534 वर्ष पूर्व कार्तिक कृ. अमावस्या को प्रातः मोक्ष गये हैं उसी दिन देवों ने मोक्षकल्याणक पूजा कर दीपावली मनायी थी। वहीं पावापुरी में उसी दिन सायंकाल में श्री गौतम स्वामी को केवलज्ञान प्राप्त हो गया, अनंतर 12 वर्ष बाद श्री गौतम स्वामी ने गुणावां के जलमंदिर से मोक्ष प्राप्त किया है।

दीपावली के दिन सायंकाल में भगवान महावीर के साथ ही गौतम स्वामी की व केवलज्ञान लक्ष्मी तथा सरस्वती की पूजा करके अगले दिन से वीर निर्वाण का नया संवत् मानकर नव संवत्सर पूजा करना चाहिए।

गौतम स्वामी पूजा

–गीता छंद –

गणपति गणीश गणेश गणनायक गणीश्वर नाम हैं।
गणनाथ गणस्वामी गणाधिप, आदि नाम प्रधान हैं।।
उन इंद्रभूति गणीन्द्र गौतम स्वामि गणधर को जजूँ।
स्थापना करके यहाँ सब, कार्य में मंगल भजूँ।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमगणधरपरमेष्ठिन्! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्रीगौतमगणधरपरमेष्ठिन्! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्रीगौतमगणधरपरमेष्ठिन्! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथाष्टक-नन्दीश्वर पूजन चाल –

रेवानदि का शुचि नीर, बाहर मल धोवे।
तुम चरणन धारा देत, अंतर्मल खोवे।।
श्री गौतम गणधर देव, पूजूँ मन लाके।
सब ऋद्धि सिद्धि भरपूर, होवें तुम ध्याके।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमगणधरस्वामिने जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयज चंदन घनसार, तन का ताप हरे।
तुम पद पूजा तत्काल, अंतर्ताप हरे।।
श्री गौतम गणधर देव, पूजूँ मन लाके।
सब ऋद्धि सिद्धि भरपूर, होवें तुम ध्याके।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमगणधरस्वामिने संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

तंदुल सित मुक्तारूप, धोकर भर लीने।
तुम पद आगे धर पुंज, आतम गुण चीन्हे।।

श्री गौतम गणधर देव, पूजूँ मन लाके।
सब ऋद्धि सिद्धि भरपूर, होवें तुम ध्याके।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमगणधरस्वामिने अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

चंपक वर हरसिंगार, सुरतरु सुमन लिया।
तुम कामजयी पद पूज, निजमन सुमन किया।।
श्री गौतम गणधर देव, पूजूँ मन लाके।
सब ऋद्धि सिद्धि भरपूर, होवें तुम ध्याके।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमगणधरस्वामिने कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

लाडू बरफी पकवान, सुवरण थाल भरे।
निज क्षुधा निवारण हेतु, तुम पद पूज करें।।
श्री गौतम गणधर देव, पूजूँ मन लाके।
सब ऋद्धि सिद्धि भरपूर, होवें तुम ध्याके।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमगणधरस्वामिने क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर शिखा प्रज्वाल, दीपक ज्योति जले।
तुम पद पूजत तत्काल, अंतर ज्योति जले।।
श्री गौतम गणधर देव, पूजूँ मन लाके।
सब ऋद्धि सिद्धि भरपूर, होवें तुम ध्याके।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमगणधरस्वामिने मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दशगंध सुगंधित धूप, खेवत धूम्र उड़े।
निज अशुभ करम हों भस्म, उसकी धूम्र उड़े।।
श्री गौतम गणधर देव, पूजूँ मन लाके।
सब ऋद्धि सिद्धि भरपूर, होवें तुम ध्याके।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमगणधरस्वामिने अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

बादाम सुपारी सेव, उत्तम फल लाऊँ।
गणनाथ चरणयुग पूज, वांछित फल पाऊँ।।
श्री गौतम गणधर देव, पूजूँ मन लाके।
सब ऋद्धि सिद्धि भरपूर, होवें तुम ध्याके।।8।।

ॐ ह्रीं श्री गौतमगणधरस्वामिने मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंधादिक वसु द्रव्य, लेकर अर्घ्य करूँ।
अनुपम निजपद के हेतु, तुम पद भक्ति करूँ।।
श्री गौतम गणधर देव, पूजूँ मन लाके।
सब ऋद्धि सिद्धि भरपूर, होवें तुम ध्याके।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमगणधरस्वामिने अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरु चरणन जल की धार, देकर शांति करूँ।
सब जग में शांती हेतु, शांतीधार करूँ।।
श्री गौतम गणधर देव, पूजूँ मन लाके।
सब ऋद्धि सिद्धि भरपूर, होवें तुम ध्याके।।10।।

शांतये शांतिधारा।

वकुलादिक कुसुम मंगाय, पुष्पांजलि कर मैं।
सब विघ्न अमंगल दोष, नाशूँ इक पल में।।
श्री गौतम गणधर देव, पूजूँ मन लाके।
सब ऋद्धि सिद्धि भरपूर, होवें तुम ध्याके।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य - **ॐ ह्रीं श्रीगौतमस्वामिने नमः (108 या 9 बार)।**

जयमाला

दोहा – **परमब्रह्म परमात्मा, परमानंद निलीन।**
गाऊँ तुम गुणमालिका, होवे भवदुखक्षीण।।1।।

–रोला छंद –

जय जय गणधर देव, जय जय गुण गण स्वामी।
महावीर जिनदेव, समवसरण में नामी।।
जय जय विघ्न समूह, नाशक विश्व प्रसिद्धा।
सप्तऋद्धि परिपूर्ण, चार विज्ञान समृद्धा।।2।।

इन्द्रभूति तुम नाम, महाविभूति प्रदाता।
ब्राह्मण कुल अवतंस, गौतम गोत्र विख्याता।।
शास्त्र महोदधि तीर्ण, पांच शतक तुम छात्रा।
तुम सम ही दो भ्रात, गर्वित सहित सुछात्रा।।3।।

छ्यासठ दिन पर्यंत, प्रभु की खिरी न वाणी।
सौधर्मेंद्र उपाय, कीनो अति सुखठानी।।
गौतमशाला माहिं, वृद्धरूप धर आया।
तुम सब विद्याधीश, इससे तुम तक आया।।4।।

मेरे गुरु महावीर, आतम ध्यान लगाये।
भूल गया मैं अर्थ, जो जो श्लोक पढ़ाये।।
यदि दो अर्थ बताय, तो तुम शिष्य बनूँ मैं।
नहिं तो होवो शिष्य, मुझ गुरु के ये चहूँ मैं।।5।।

त्रैकाल्यं इत्यादि, जब यह श्लोक पढ़ा है।
अर्थ बोध से हीन, मन आश्चर्य बढ़ा है।।
चलो गुरू के पास, मैं शास्त्रार्थ करूँगा।
तुम हो छात्र अजान, गुरु से अर्थ कहूँगा।।6।।

उभय भ्रात के साथ, सब शिष्यों को लेके।
चले इंद्र के साथ, समवसरण अवलोके।।
मानस्तंभ निहार, मान गलित हुआ सारा।
वचन ''जयतु भगवान्'' स्तुति रूप उचारा।।7।।

निज मिथ्यात्व विनाश, जिनदीक्षा को लीना।
दिव्यध्वनि तत्काल, प्रगटी भवि सुख दीना।।
द्वादशांग मय ग्रंथ, गौतम गुरु ने कीने।
गणधर पद को पाय, सब ऋद्धी धर लीने।।8।।

वीर प्रभू निर्वाण, के दिन केवल पायो।
इन्द्र सभी मिल आय, गंधकुटी रचवायो।।
केवलज्ञान कल्याण, पूजा इन्द्र रचे हैं।
केवलज्ञान महान, लक्ष्मी को भी जजे हैं।।9।।

इसी हेतु सब लोग, दीपावली निशा में।
गणपति लक्ष्मी देवि, पूजें धनरुचि मन में।।
बारह वर्ष विहार, भवि उपदेश दिया है।
पुनः अघाति विनाश, मोक्ष प्रवेश किया है।।10।।

गणधर पूजा सत्य, सर्वसंपदा देवें।
धनधान्यादिक पूर, मोक्ष संपदा देवें।।
इस हेतू हम आज, गणधर चरण जजे हैं।
''केवलज्ञान'' प्रकाश, हेतू आप भजे हैं।।11।।

–दोहा –

चौबीसों जिनराज की, गणधर गणना जान।
चौदह सौ बावन कही, तिनपद जजूँ महान् ।।12।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमगणधरपरमेष्ठिने जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा –

जो पूजें गणधर चरण, करें विघ्नघन हान।
जग के सब सुख भोग के, क्रम से लें निर्वाण।।

।। इत्याशीर्वादः।।

शारदा व्रत

शारदा – सरस्वती की आराधना, उपासना, भक्ति आदि से भव्यजीव समीचीन ज्ञान की वृद्धि करते हुए परम्परा से श्रुतकेवली, केवली पद को प्राप्त करेंगे। यह व्रत ज्येष्ठ मास में शुक्लपक्ष में एकम से आषाढ़ कृष्णा एकम तक सोलह दिन करना है। इसी प्रकार आश्विन मास में शुक्ला एकम से कार्तिक कृ. एकम तक पुनः माघ मास में शुक्ला एकम से फाल्गुन कृ. एकम तक, ऐसे वर्ष में तीन बार व्रत करना है। इस व्रत में शास्त्रों की पूजा-द्वादशांग जिनवाणी की पूजा, सरस्वती की मूर्ति की पूजा – जिनके मस्तक पर भगवान अर्हंतदेव की मूर्ति विराजमान हैं ऐसी सरस्वती – शारदा देवी की पूजा करना।

इस व्रत में ज्येष्ठ शु. 5, आश्विन शु. 5 और माघ शु. 5 को व्रत, उपवास या एकाशन करना और उन दिनों विशेषरूप से सरस्वती की आराधना करना है तथा शेष दिनों में एक बार अन्न का भोजन करना, शक्ति के अनुसार दूसरी बार अल्पाहार – फल-दूध, औषधि आदि लेना चाहिए। रात्रि में चतुर्विध आहार का त्याग करना है। प्रतिदिन सरस्वती के साथ-साथ महालक्ष्मी देवी की तथा चक्रेश्वरी, पद्मावती आदि शासन देवियों की भी आराधना करना है।

'सरस्वती महापूजा' नाम से पुस्तक जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर से मंगाकर उसमें लिखे अनुसार सरस्वती के 108 मंत्र आदि विधि से 'महाआराधना' करना चाहिए।

इस व्रत में ज्येष्ठ शु. पूर्णिमा, आश्विन शु. पूर्णिमा – शरद पूर्णिमा और माघ शु. पूर्णिमा को उपवास या एकाशन से व्रत करके हस्तिनापुर, अयोध्या, प्रयाग आदि तीर्थों पर जाकर उन-उन केवलज्ञान भूमि की पूजा करके सरस्वती की विशेष आराधना करें। आज उपलब्ध सर्वश्रेष्ठ

ग्रंथ – षट्खण्डागम ग्रंथों की पूजा करके अगले दिन एकम – प्रतिपदा को पारणा करना है। यह व्रत सम्यग्ज्ञान की वृद्धि में तो निमित्त है ही, इसके प्रभाव से तत्काल में सांसारिक नाना प्रकार के सुख, शांति, सम्पत्ति, संतति आदि की वृद्धि होती है और आगे परम्परा से द्वादशांग का ज्ञान प्राप्त कर नियम से केवलज्ञान को तथा मोक्ष को प्राप्त करेंगे।

इसका मंत्र –

ॐ ह्रीं द्वादशांगवाणीसरस्वतीदेव्यै नमः।

अथवा

ॐ ह्रीं श्रीं वद वद वाग्वादिनि भगवति सरस्वति ह्रीं नमः।

लक्ष्मी मंत्र –

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूँ ऐं महालक्ष्म्यै नमः।

चक्रेश्वरी मंत्र –

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं श्री चक्रेश्वरी देव्यै नमः।

पद्मावती मंत्र –

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं श्री पद्मावती देव्यै नमः मम ईप्सितं कुरु कुरु स्वाहा।

इस प्रकार से जाप्य करें। सरस्वती के 108 मंत्रों से विधान-आराधना आदि करें।

एक वर्ष में तीन बार इस व्रत को करके बड़े रूप में सरस्वती की आराधना करके सरस्वती की प्रतिमा बनवाकर मंदिरों में विराजमान करें। यह व्रत सब प्रकार के मनोरथों को सफल करने वाला है।

सरस्वती पूजा

जिनदेव के मुख से खिरी, दिव्यध्वनी अनअक्षरी।
गणधर ग्रहण कर द्वादशांगी, ग्रंथमय रचना करी।।
इन अंग पूरब शास्त्र के ही, अंश ये सब शास्त्र हैं।
उस जैनवाणी को जजूँ, जो ज्ञान अमृतसार है।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलविनिर्गतद्वादशांगमयी सरस्वती देवि! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलविनिर्गतद्वादशांगमयी सरस्वती देवि!अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलविनिर्गतद्वादशांगमयी सरस्वती देवि! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथ अष्टक–चामर छन्द

जैन साधु चित्त सम, पवित्र नीर ले लिया।
स्वर्ण भृंग में भरा, पवित्र भाव मैं किया।।
द्वादशांग जैनवाणी, पूजते उद्योत हो।
मोहध्वांत नष्ट हो, उदीत ज्ञानज्योति हो।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलविनिर्गतद्वादशांगमयी सरस्वती देव्यै जलं निर्वपामीति स्वाहा।

केशरादि को घिसाय, स्वर्ण पात्र में भरी।
ताप पाप शांति हेतु, पूजहूँ इसी घरी।।
द्वादशांग जैनवाणी, पूजते उद्योत हो।
मोहध्वांत नष्ट हो, उदीत ज्ञानज्योति हो।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलविनिर्गतद्वादशांगमयी सरस्वती देव्यै चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्द्ररश्मि के समान, धौत स्वच्छ शालि हैं।
पुंज को चढ़ावते, मिले गुणों कि माल है।।
द्वादशांग जैनवाणी, पूजते उद्योत हो।
मोहध्वांत नष्ट हो, उदीत ज्ञानज्योति हो।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलविनिर्गतद्वादशांगमयी सरस्वती देव्यै अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

मोगरा गुलाब चंप केतकी चुनायके ।
स्वात्म सौख्य प्राप्त होय, पुष्प को चढ़ावते।।
द्वादशांग जैनवाणी, पूजते उद्योत हो।
मोहध्वांत नष्ट हो, उदीत ज्ञानज्योति हो।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलविनिर्गतद्वादशांगमयी सरस्वती देव्यै पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

लड्डुकादि व्यंजनों से, थाल को भराय के।
ज्ञानदेवता समीप, भक्ति से चढ़ाय के।।
द्वादशांग जैनवाणी, पूजते उद्योत हो।
मोहध्वांत नष्ट हो, उदीत ज्ञानज्योति हो।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलविनिर्गतद्वादशांगमयी सरस्वती देव्यै नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप में कपूर ज्वाल, आरती उतारहूँ।
ज्ञानपूर जैन भारती, हृदय में धारहूँ।।
द्वादशांग जैनवाणी, पूजते उद्योत हो।
मोहध्वांत नष्ट हो, उदीत ज्ञानज्योति हो।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलविनिर्गतद्वादशांगमयी सरस्वती देव्यै दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप ले दशांग, अग्निपात्र में हि खेवते।
कर्म भस्म हो उड़े, सुगंधि को बिखेरते।।
द्वादशांग जैनवाणी, पूजते उद्योत हो।
मोहध्वांत नष्ट हो, उदीत ज्ञानज्योति हो।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलविनिर्गतद्वादशांगमयी सरस्वती देव्यै धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सेब संतरा अनार, द्राक्ष थाल में भरें।
मोक्ष सौख्य हेतु शास्त्र, के समीप ले धरें।।
द्वादशांग जैनवाणी, पूजते उद्योत हो।
मोहध्वांत नष्ट हो, उदीत ज्ञानज्योति हो।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलविनिर्गतद्वादशांगमयी सरस्वती देव्यै फलं निर्वपामीति स्वाहा।

वारि गंध शालि पुष्प, चरु सुदीप धूप ले।
सत्फलों समेत अर्घ्य, से जजें सुयश मिले।
द्वादशांग जैनवाणी, पूजते उद्योत हो।
मोहध्वांत नष्ट हो, उदीत ज्ञानज्योति हो।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलविनिर्गतद्वादशांगमयी सरस्वती देव्यै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्ण भृंग नाल से, सुशांतिधार देय के।
विश्वशांति हो तुरंत, इष्ट सौख्य देय के।।
द्वादशांग जैनवाणी, पूजते उद्योत हो।
मोहध्वांत नष्ट हो, उदीत ज्ञानज्योति हो।।10।।

शांतये शांतिधारा।

गंध से समस्तदिक् , सुगंध कर रहे सदा।
पुष्प को समर्पिते, न दुःख व्याधि हो कदा।।
द्वादशांग जैनवाणी, पूजते उद्योत हो।
मोहध्वांत नष्ट हो, उदीत ज्ञानज्योति हो।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिं।

जाप्य–ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलविनिर्गतद्वादशांगाय नमः।

जयमाला

–दोहा–

द्वादशांग हे वाङ्.मय ! श्रुतज्ञानामृतसिंधु।
गाऊँ तुम जयमालिका, तरूँ शीघ्र भवसिंधु।।1।।

–शंभु छन्द–

जय जय जिनवर की दिव्यध्वनी, जो अनक्षरी ही खिरती है।
जय जय जिनवाणी श्रोताओं को, सब भाषा में मिलती है।
जय जय अठरह महाभाषाएँ, लघु सात शतक भाषाएँ हैं।
फिर भी संख्यातों भाषा में, सब समझे जिनमहिमा ये हैं।।2।।

जिनदिव्यध्वनी को सुनकर के, गणधर गूँथें द्वादश अंग में।
बारहवें अंग के पाँच भेद, चौथे में चौदह पूर्व भणें।।
पद इक सौ बारह कोटि तिरासी, लाख अठावन सहस पाँच।
मैं इनका वंदन करता हूँ, मेरा श्रुत में हो पूरणांक।।3।।

इक पद सोलह सौ चौंतिस कोटी, और तिरासी लाख तथा।
है सात हजार आठ सौ अट्ठासी, अक्षर जिन शास्त्र कथा।।
इतने अक्षर का इक पद तब, सब अक्षर के जितने पद हैं।
उनमें से शेष बचें अक्षर, वह अंगबाह्य श्रुत नाम लहे।।4।।

जो आठ कोटि इक लाख आठ, हज्जार एक सौ पचहत्तर।
चौदह प्रकीर्णमय अंगबाह्य के, इतने ही माने अक्षर।।
यह शब्दरूप अरु ग्रन्थरूप, सब द्रव्यश्रुत कहलाता है।
जो ज्ञानरूप है आत्मा में, वह कहा भावश्रुत जाता है। ।।5।।

जिनको केवलज्ञानी जानें, पर वच से नहिं कह सकते हैं।
ऐसे पदार्थ सु अनंतानंत, जो तीन भुवन में रहते हैं।।
उनसे भी अनंतवें भाग प्रमित, वचनों से वर्णित हो पदार्थ।
उन प्रज्ञापनीय से भी अनन्तवें, भाग कथित श्रुत में पदार्थ।।6।।

फिर भी यह श्रुत सब द्वादशांग, सरसों सम इसका आज अंश।
उनमें से भी लवमात्र ज्ञान, हो जावे तो भी जन्म धन्य।।
यह जिन आगम की भक्ती ही, निज पर का भान कराती है।
यह भक्ती ही श्रुतज्ञान पूर्णकर, श्रुतकेवली बनाती है।।7।।

श्रुतज्ञान व केवलज्ञान उभय, ज्ञानापेक्षा हैं सदृश कहे।
श्रुतज्ञान परोक्ष लखे सब कुछ, बस केवलज्ञान प्रत्यक्ष लहे।।
अंतर इतना ही तुम जानो, इसलिए जिनागम आराधो।
स्वाध्याय मनन चिंतन करके, निज आत्म सुधारस को चाखो।।8।।

इस ढाईद्वीप में कर्मभूमि, इक सौ सत्तर जिनवर होते।
उन सबकी ध्वनि जिन आगम है, इससे जन अघमल को धोते।।
जिनवचपूजा जिनपूजा सम, यह केवलज्ञान प्रदाता है।
नित पूजूँ ध्याऊँ गुण गाऊँ, यह भव्यों को सुखदाता है।।9।।

है नाम भारती सरस्वती, शारदा हंसवाहिनी तथा।
विदुषी वागीश्वरि और कुमारी, ब्रह्मचारिणी सर्वमता।।
विद्वान् जगन्माता कहते, ब्राह्मणी व ब्रह्माणी वरदा।
वाणी भाषा श्रुतदेवी गौ, ये सोलह नाम सर्व सुखदा।।10।।

हे सरस्वती ! अमृतझरिणी, मेरा मन निर्मल शांत करो।
स्याद्वाद सुधारस वर्षाकर, सब दाह हरो मन तृप्त करो।।
हे जिनवाणी माता मुझ, अज्ञानी की नित रक्षा करिये।
दे केवल ''ज्ञानमती'' मुझको, फिर भले उपेक्षा ही करिये।।11।।

–दोहा–

भूत भविष्यत् संप्रति, त्रैकालिक जिनशास्त्र।
त्रिकरण शुद्धी मैं नमूँ, मिले सिद्धि सर्वार्थ।।12।।

ऊँ ह्रीं अर्हन्मुखकमलविनिर्गतद्वादशांगमयी सरस्वती देव्यै जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–दोहा–

सब भाषामय सरस्वती, जिनकन्या जिनवाणि।
ज्ञानज्योति प्रगटित करो, माता जगकल्याणि।।1।।

।। इत्याशीर्वादः।।

किसी भी कार्य के प्रारंभ में इष्टदेव का नाम स्मरण करें

आरंभे तु पुराणस्यान्यव्यापाराय कस्यचित्।
''नमः सिद्धेभ्यः'' इत्युच्चैर्नभ्रीभूतो वदेद्वचः।।

अर्थ–किसी शास्त्र के प्रारंभ में तथा अन्य किसी भी कार्य के प्रारंभ में नम्रता के साथ ''ॐ नमः सिद्धेभ्यः'' इस पद का उच्चारण करना चाहिए।